श्री कैलाश मार्ग प्रदीपिका

श्री कैलाशजी ।

ॐशेषंजटा गण भारं गरला हारं समस्त संहारम् ।
कैलासाद्रि विहारं पारं भव वारिधेरहं वन्दे ॥
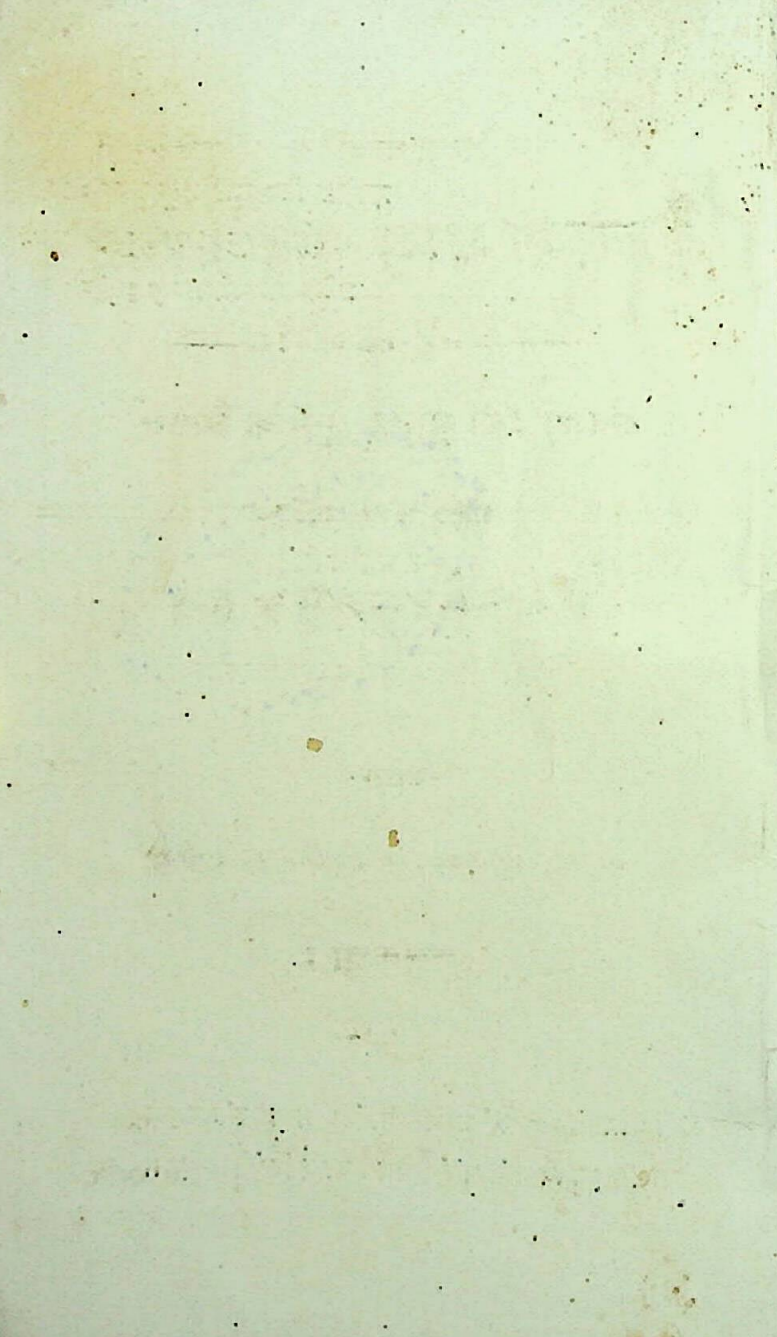
॥ ॐ श्री हरिः ॥

कैलाश मार्ग प्रदीपिका

कैलाश प्रेमी मुमुक्षु पुरुषोंके हितार्थ

पं० धर्मदत्तशर्मा कृत

—:०:—

प्रकाशक—

श्री सेठ खुशीरामजी मुरारीलाल झारिया

कलकत्ता ।

—:०:—

प्रथम बार १००० प्रति } सं० १९८५ वि० { मूल्य शिवभक्ति

प्रकाशक—
श्री० बाबू मुरारीलालजी छारिया
(खुशीराम मुरारीलाल)
२६ । १ आर्मीनियन स्ट्रीट
कलकत्ता ।

मिलनेका पता—
पं० धर्मदत्त ब्रह्मचारी
ललिताघाट, मन्दिर राजराजेश्वरीजीका
काशी (बनारस)

मुद्रक—
मिश्रीलाल केला
श्रीमाहेश्वरी प्रेस
२।३ चित्तरंजन एवेन्यू
कलकत्ता ।

धन्यवाद ।

—:०:—

परमपिता परमात्मा, अज्ञानान्धकार निवारक गुरुदेव तथा जन्म दाता माता-पिताकी तो कृपा अनन्त और असीम है, अतः उनके चरणोंमें तो बिना किये ही हमारे रोम रोमसे धन्यवाद स्वीकृत हो ।

जिनकी कृपाकोरसे श्री कैलास धामके दर्शन कर कृत कृत्य हो सके उन पूज्यपाद, प्रातःस्मरणीय महिमामय मण्डलेश्वरजी महाराजके चरणोंमें कोटानुकोटि धन्यवाद हैं ।

श्री सेठ खुशीरामजी मुरारीलालजीको हमारा धन्यवाद है, जिन्होंने अत्यन्त प्रेमपूर्वक हृदयसे इस पुस्तकके प्रकाशनको धन देनेकी उदारता दिखाई है । आपकी शिवभक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती रहे और कल्याणकारी हो यही हमारी आशिष है ।

श्री बाबू मिश्रीलालजी केलाको हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने यह पुस्तक शुद्ध—सुन्दर और शीघ्रता पूर्वक मुद्रितकर हमारा उत्साह बढ़ाया है ।

नोट—जो सज्जन इसे पढ़ें, सुनें और इसकी त्रुटियां क्षमा करके हमें सूचित करें उन्हें भी हमारा धन्यवाद है ।

विनीत

ध० द० शर्मा

समर्पण

ॐ तत्सत् !

ॐ सहना ववतु ॥ सहनौ भुनक्तु ॥ सहवीर्यं करवावहै ॥
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्री पतित पावन, मुक्तिप्रद, श्री कैलासजीके कठिन धाम की
यात्रा व "कैलास" शृङ्गके पुनीत दर्शन, पूज्यपाद
श्री स्वामीजी महाराजकी अतुल कृपासे हम
सर्व मण्डलीकी (सविधि) यात्रा
निर्विघ्नतासे पूर्ण हो गई ।

अतः मैं पुनः २ नमन
करता हुआ उनके
कर कमलोंमें यह
ग्रन्थ सादर
समर्पित
करता
हूं ।

विनीत—
धर्मदत्त शर्म्मा ।

(ब्रह्मनिष्ठ)
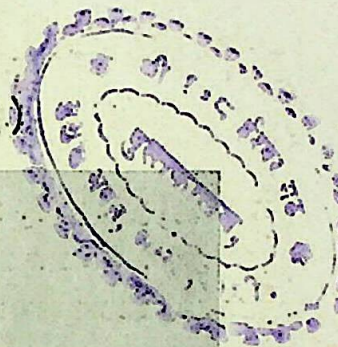
श्रीनिर्वाण पीठाधिपती-श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य
श्रीयुत् १०८ स्वामी जयेन्द्रपुरीजी महाराज
मण्डलेश्वर गोविन्दमठ (काशी)

हरिः ॐ तत्सत्

ॐ—नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवी सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदारयेत् ॥ १ ॥

ॐ गणपति परिवारंचारु कर्पूरहारं गिरिधर वर सारं योगिनी चक्र चारम् । भव भय परिहारं दुःखदारिद्र्यदूरं गणपतिमभि वन्दे वक्र तुण्डावतारम् ॥ २ ॥

अथ—भारत वर्षे जन्म फलम् ।

ॐ—गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारत भूमिभागे स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ।

अथ नम्र निवेदन

श्री- परम पिता—ब्राह्मण्ड नायक, सकल जन सुख दायक- विश्व व्यापक जगदाधार-अनन्त सद् गुणागार- सर्व कल्याण-महोदधि, परम कारुणिक करुणा निधि—भक्त वत्सल, सर्वेश्वर , परम पूज्य-परमोपकारि श्रीमान्—श्री १००८ श्री शङ्करावतार शङ्कराचार्य्य भगवानने सर्व नास्तिक मत मतान्तरोंको खण्डित कर- यावत् भूमण्डल में धर्म ध्वजा स्थापन कर , परम पुनीत वैदिक मत को पुष्ट करते हुये, धार्मिक डंकेको स्थित रख धर्मका प्रचार कर भक्त जनोंके हितार्थ —भुक्ति मुक्ति दायक प्रथम अपने कर

कमलों, द्वारा चारों दिशाओंमें चार प्रधान मठ स्थापन कर प्रथम चारों मठान्तरोंमें तत्तद् देवताओं की प्रतिमा स्थापन करी जा कि सबसे प्रधान [धामों] के नामसे अति प्रसिद्ध हैं, जिनके दर्शन कर आज कतिपय सिद्ध-योगी. तपस्वी; भक्त-जन महान २ सुख भोगकर मुक्ति को प्राप्त हो रहे हैं, वेद, पुराण श्रुति स्मृति, आदि ग्रन्थों में इन्ही चारोंधामों कावर्णन विस्तार से किया गया है, ।

ऐसे पवित्र ईश्वरीय चारो धामोंको तथा कैलासादि यात्रा जो प्रेमी सज्जन ईश्वर भक्ति नहिं करते हैं, उनका जन्म विफल है। जन्म भरकी कमाई शुभ कर्ममें ध्यानादि ईश्वराराधनामें खर्च करनेका यही एक महान शुभ अवसर है। हमारे पूर्वज ऋषि महर्षियोंने घोर तप करके अपने आत्म बलसे भक्त जनोंके कल्याणार्थ महान् २ तीर्थ रचकर तथा उनकी महिमाको बढ़ाते हुये सर्व तीर्थ स्थापन करें हैं [भक्तिप्रियो माधवः] कलिकालमें प्रायः देखा जाता है कि मनुष्योंके अन्तर्गत सद्बुद्धि सत्कर्म ईश्वरमें निष्ठा, भजन-भाव बहुत न्यूनतासे पाया जाता है, लेकिन शास्त्रकी यह घोषणा हैं अर्थात् सिद्धान्त है कि[ऋते ज्ञानान्नमुक्ति] अर्थात् बिना ज्ञानके कदापि मुक्ति नहीं होती । और बिना अन्तः करणकी शुद्धि हुये ज्ञानकी प्राप्ति नहीं होती है। अन्तः करणकी शुद्धि बिना सत्कर्म, ईश्वरीय भजन तथा तीर्थादिके न करनेसे अन्तः करण शुद्ध नहीं होता हैं, अतः हमारे पर्वज भक्ति-शील सत्पुरुषोंने प्रथम ज्ञानका मार्ग सत्कर्म, ईश्वरीय निष्ठा,

तीर्थादिमें देवदर्शनका करना ही विशेष तौरपर बतलाया है। तीर्थादि सत्कर्म करनेसे मनुष्य नानाविध संशयोंसे मुक्त होकर सहर्ष महान सुखको प्राप्त होता है और अन्तः करणकी शुद्धि द्वारा ज्ञानको प्राप्त होकर निःसन्देह मुक्तिका भागी हो जाता है। [महाजनो येन गताः सः पन्था] इस पदको ग्रहणकर पूज्यपाद् श्री निर्वाण पीठाधिपति धर्म-भास्कर श्री १०८ स्वामी जयेन्द्रपुरीजी मण्डलेश्वर महाराजने भी उक्त पदको शिरोपरि धारणकर सम-दृष्टि रखते हुये, ब्रह्मचर्चा आत्म दृष्टि रखकर शंकर-भगवानकी अपार कृपासे आपने भी कतिपय गुरु-भक्त प्रेमी सज्जन महा-पुरुषोंको चारो धाम तथा कैलास मानसरोवरकी महान २ कठिन यात्रा करवाकर स्वयम्भू कैलासाधिपतिके ध्यानमें स्थित हो, साक्षात् जीवनन्मुक्तिको प्राप्त हो चुके हैं। आपकी विनय शीलता धार्मिक वृत्ति, दयालुता, समदृष्टि भक्ति-भाव प्रेम-विद्वत्ता, सहनशीलता जगत् प्रसिद्ध है।

प्रायः बहुतसे बड़े २ विद्वान महात्मा श्रेष्ठ पुरुष धर्मानुरागी योगीजन प्रथम देशाटन तीर्थादिकर पुनः एक जगहमें स्थित होकर एकाग्रवृत्तिसे आत्मतत्वका विचार कर ज्ञान द्वारा मोक्षको प्राप्त होते हैं, अतः इस अमूल्य रत्नको पाकर देहोद्धारके निमित्त अवश्य एकबार तीर्थाटन करना चाहिये। सत्कर्म शुभकर्मादिके करनेसे सद्गति प्राप्त होती है, अतः हे तीर्थ-प्रेमी सज्जनो हम इस पुस्तकमें जहां २ कि पूज्यपाद् श्री स्वामीजी महाराज मण्डलीके सहित पधारे हैं उस स्थानका नाम संक्षेपसे महात्म्य तथा मण्डली

का कार्य यथोचित भक्तोंकी सेवा तथा कैलास, मानसरोवरादिमें पैदल का मार्ग मील संख्या यहच्छा लाभ सन्तुष्टी व सुख दुःखादि का हाल दिनचर्या संक्षेपसे लिखते हैं, कारण कि विस्तारके भयसे विशेष तौरपर नहीं लिखा जा सकता। लिखने तथा विदित करनेका तात्पर्य यही है—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः
सयत्प्रमाणं कुरुते लोक स्तदनुवर्तते ॥ १ ॥

दो०—गुरु जन जो जो आचरहि, अन्यहु सोइ सोइ मान।
करु प्रमाण जो लोक सो, तेहि अनुवर्तित जान ॥ २ ॥ (गीता)

श्रेष्ठ; उत्तम माननीय पुरुष जो जो (श्रौत व स्मार्त कर्म का अथवा अन्य किसी धार्मिक मार्गका नियमसे) आचरण करते हैं उस २ कर्मका ही आचरण शास्त्र, और उसमें कहे हुये कर्मको न जाननेवाले प्राकृत जन भी करते हैं और वे श्रेष्ठ जन जो [कर्म करनेमें प्रवृत्ति शास्त्र, किंवा निवृत्ति शास्त्र अथवा अन्य किसी मार्गको] प्रमाण मानते हैं उसको ही प्रमाण मानकर प्राकृत जन अनुवर्तन करते हैं।

अर्थात् सत्पुरुष भक्त सज्जन महात्मा अग्रणी होकर जिस महान कार्यको करते हैं उनके पीछेवाले भी उसी शुभ कर्मको करते चले जाते हैं।

श्लोक—कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति संगं त्यक्त्वाऽऽत्म शुद्धये ॥

दो०—तनकरि मनकरि बुद्धिकरि अरु इन्द्रिन हू कीन।
आत्म शुद्धि हित कर्म करि, योगी होइ न लीन ॥

क्योंकि मुमुक्षु लोग कर्म फलकी इच्छा त्यागकर केवल अन्तः करण शुद्धिके अर्थ शरीरसे मनसे बुद्धिसे और केवल इन्द्रियोंसे भी कर्म करते हैं।

दो०—ज्ञानी तो मुक्ति हिं भजै, करै कर्म फल हीन।
अज्ञानी बन्धन सजै, करै कर्म फल लीन॥

[युक्त कर्म फलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्]

अर्थात् जो ज्ञानी सात्विक भक्त पुरुष कर्म फलकी इच्छाको छोड़कर युक्त अर्थात् परमेश्वरके विषे पूर्ण निष्ठा रखके तत्प्रीत्यर्थ कर्म करता है सो मोक्ष रूप शांति सुखको प्राप्त होता है।

प्रायः सुना गया है तथा देखनेमें भी आया है कि आज तक किसी मण्डलेश्वर या कोई महान् व्यक्ति साधुजन समुदाय साहूकार राजा महाराजा आदि इतने मूर्तियोंको साथ लेकर शास्त्रोक्त धार्मिक कार्यमें प्रवृत्त हो लगातार एक साथ महान २ कष्ट आपत्तियोंको सहन करते हुये चारों धामकी तथा कैलास-मानसरोवरादिकी यात्रा अभी तक किसीने नहीं करी है; अतः मण्डलीका चरित्र सर्व वर्णन मैंने सर्व हितार्थ निम्न लिखित पुस्तक कैलास तीर्थ यात्राके विषयमें महात्माओंके चरणारविंदमें ध्यानकर प्रकाशित की है, जिस पुस्तकके अनुसार सर्व कैलासादि यात्राके अवलोकन, श्रवण, मनन, निदिध्यासनसे आपलोगोंको सत्य ही परम पद मिल सकता है। पवित्र निर्वाणप्रद कैलास व मानसरोवरके अद्भुत् दर्शन अपनी अमूल्य जिन्दगीमें एक बार अवश्य कर कृतार्थ होना चाहिये। कैलास भ्रमण व तीर्थ-प्रेमी भाइयोंके हितार्थ

पठित पुरुषोंके कल्याणार्थ कारण कि जो अगम्य मार्ग द्वारा कैलास यात्रा नहीं कर सकते, इस पुस्तकके महात्म्यको अवलोकन कर कल्याणको प्राप्त हो सकते हैं। इसके देखनेसे सैकड़ों कोसोंकी अद्‌भुत् विचित्र बातें सब मालूम हो जाती हैं। पुनर्जन्म का आनन्द भी इसी यात्रामें देखनेसे आता है। अतः सार्वजनिक कैलास प्रेमियोंसे व विशेष साधु, सन्त, महात्माओंसे यही निवेदन है कि मुक्तिप्रद पतितपावन श्रीकैलासजीके अवश्य दर्शनकर जीवन्मुक्तिको प्राप्त हो निरुपद्रव कैवल्य पदवीको प्राप्त होवें।

विनीत—

स्वामीनामनुचरः धर्म्मदत्त शर्मा।

दो शब्द ।

कैलास तीर्थ यात्राका वर्णन इस पुस्तकमें है, यह पुस्तक एक उच्च उद्देश्य को सामने रखकर लिखी गई है, मने यह सब उसी परब्रह्म (कैलास) प्रसन्नता के हेतु किया है। जो कुछ त्रुटियां लेखन शैली में रह गई हैं। वह शुद्धि अशुद्धि पत्र से अवलोकन कर ग्रहण करीयेगा। विशेष कर इसमें दिनचर्य्या व रात्रि चर्य्या —दिखाते हुए तिब्बत "भोट" का वर्णन, कैलास मार्ग सब दिखाया गया है, [लिखने का यह मेरा प्रथम प्रयास ही है] अतः लेखमें एक दो दोष रह गये हैं, आशा है कि आप दोषों की ओर ध्यान न दे कर इसके उद्दश्य की ओर दृष्टि रखखेंगे। इति, शिवम् ॥

पाठकोंको तथा यात्रियोंको ध्यान रहे कि हमने वदरीनारायण से आगे के पड़ाव दिखाये हैं, सो ये पड़ाव बद्रीनाथ के मार्ग में चट्टीयों जैसे नहीं हैं, सिर्फ चौरस स्थान भोटीओं व्यापारी लोगों द्वारा वकरियोंका निवासस्थान, इतस्ततःसे पत्थरों को एकत्रित कर परिधी वना कर नाम का संकेत कर पड़ाव बना लिये गये हैं, आच्छादित, मकान व गुफा, खाद्य सामान पशु, पक्षी आदि जीव कुछ ऊपर नहीं मिलते हैं, कारण कि वर्फानी जगह, ऊषर भूमी जगह २ पर उतराई चढ़ाई पथरीला निर्जन मार्ग पड़ता है, खाद्य सामान तथा वाहनादि (बोझ के लिये खच्चर) सब वदरीनारायण से ही लेलेना चाहिये।

आगे थूली मठ में भी महन्त (राजा) जी की मार्फत से खाद्य सामान महंगा मिल सकता है थूलीमठ को, बद्रीश से भोटीए व्यापारी सात आठ दिन में पहुंचते हैं स्वदेशी यात्री सुगमता से दश दिन में पहुंच सकते हैं, इस हिसाब से बद्रीश से पचीस दिन या एक मास में कैलास में अच्छी तरह से यात्री पहुंच सकता है पड़ाव उठाते समय जगह २ चाय सत्तू आदि का शब्द दिया गया है, विशेष समुदाय के होने से इस यात्रामें प्रातः चाय सत्तू (जल पान) को ग्रहण कर ही आगे को पड़ाव उठाया जाता है व रोटी बनाने की झंझट से (विलम्ब हो जाने के कारण) मध्यान्ह में आतप से वर्फ पिघल जाता है, जिससे मुसाफिर को चलने से कई स्थलों में विशेष तकलीफ हो जाती है। अतः कैलास यात्री को प्रातः ही नित्य क्रिया से निवृत्त हो नाश्ता कर आगे को गमन कर देना चाहिये।

[इस पुस्तक में कैलास यात्रा के वृत्तान्त के पश्चात्, धार्मिक अच्छे २ रोचक शब्द, तथा पद्य संग्रह कर के भी दिये गये हैं, जिस के अवलोकन से चित्त में हर्ष तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है, जैसे :आरती, द्वादश ज्योतिर्लिंग व, भवानीशंकर कैलासपती की षोड़शोपचार पूजन विधि [कैलास] तीन अक्षरों पर विविध विस्तार। [नमः शिवाय] पंचाक्षरी पर पंच विस्तार तथा गूढ़ार्थ चिन्तामणि में व्यावहारिक धार्मिक उपयोगी बातें यह सब अन्त में दिखाई हैं।

अथ शुद्धि पत्रम्

—:०:—

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१	२	द्रूपं	द्रू पं
३	१३	राक्ष्यू	राक्ताक्ष्यू
७	२०	कलास	कैलास
८	२२	पूर्वप्रीतिक	प्रीतिपूर्वक
११	१५	को	की
१४	३	नीखो	नीरी
१५	३	अटक	अटल
१५	५	दाया	दापा
१६	१२	गीत	गीती
१६	१२	सुनाये	सुनाई
१३	१६	शिवलिंग	शिवचिलिंग
१४	७	मींगडे	मींगने
१५	५	तीथापुरी	तीर्थापुरि
१८	३	दरवाज	दरवाजे
१८	२२	लेकिन	परन्तु
२६	१५	दशन	दर्शन
३२	१८	माग	मार्ग
३२	१६	,,	,,
३३	३	व्यौपारी	व्यापारी
३८	२	है	०
३८	८	पड़ता	पड़ती
३६	२	शनः	शनैः

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
३६	२	नद्यां	नदी
४२	२	दायामण्डी	द्राणमण्डी
४२	६	मूती	मूर्ती
४४	८	ससारातल्य	संसारातल्य
४५	१२	ह	है
४५	१४	प्रम	प्रेम
४६	७	थोड़ा	थोड़ी
४७	१०	द्वारा	द्वारा
४७	१२	,,	,,
४८	१०	निकट	०
४८	१४	क:	को
४६	१	व्योपार	व्यापार
४६	३	वफ	वर्फ
५४	२१	वस्त्रधार	वस्त्रधारी !
५७	१	ग्रन्थक	गन्धक
६३	१८	सत्त	सत्तू ।
६६	११	विष्णुवल्लभः	विष्णुवल्लभः
६७	१	कोइ	कोई
७२	७	जाव	जीव
८१	१०	जाते	जीते
८१	१९	मण्ड	मण्डी
६५	१३	वहत	बहुत
१०५	१७	असृतमय	अमृतमय
१३६	१३	समपयामि	समर्पयामि
१४४	१	तान	तीन

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

* श्री कैलासाधिष्ठात्री देवायनमोनमः *

ॐ श्री गुरवेनमः ॐ

——: ० :——

बद्रीनाथसे कैलास यात्राका शुभागमन संम्बत् १६८४ सन् १६२७
श्रावण कृष्ण ७ गुरुवार।

❀ प्रार्थना ❀

श्री कैलास देवाय नमो नमः।

ॐ त्वं ब्रह्मा सृष्टि कर्ता च त्वं विष्णुः परिपालकः।
त्वं शिवः शिवदोऽनन्तः सर्व संहार कारकः ॥ १ ॥

त्वमीश्वरो गुणातीतो ज्योतीरूपः सनातनः।
प्रकृतः प्रकृतीशश्च प्राकृतः प्रकृतेः परः ॥ २ ॥

नाना रूप विधाता त्वं भक्तानां ध्यान हेतवे
येषु रूपेषु यत्प्रीति स्तत्तद्रूपं विभर्षि च ॥ ३ ॥

सूर्यस्त्वं सृष्टि जनक आधारः सर्व तेजसाम्।
सोमस्त्वं सस्य पाता च सततं शीत रश्मिना ॥ ४ ॥

सूर्यस्त्वं वरुणस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरुः।
मृत्युञ्जयो मृत्यु मृत्युः काल कालो यमान्तकः ॥ ५ ॥

वेदस्त्वं वेद कर्ता च वेद वेदाङ्ग पारगः
विदुषां जनकस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरुः ॥ ६ ॥

मन्त्रस्त्वं हि जपस्त्वं हि त्वं हि तत्फल प्रदः ।
वाक् त्वं रागाधिदेवी त्वं तत्कर्त्ता तद्गुरुः स्वयम् ॥ ७ ॥

ॐ महादेव महादेव महादेवेति यो वदेत्—
एकेन मुक्ति माप्नोति द्वाभ्यां शम्भूरिणी भवेत् ॥ ८ ॥

शीर्षं जटा गणभारं गरलाहारं समस्त संहारम्
कैलासाद्रि विहारं पारं भव वारिधेरहं वन्दे ॥ ९ ॥

जयेन्द्र मण्डली को कैलास यात्रा

श्री वदरीनारायण से कैलास तथा पुण्यागिरी तक पड़ावों की नामावली ।

श्री वदरीनारायणजी । श्रावण कृ० ७ गुरुवार

संख्या (१)	मागागांव	श्रावण	कृष्ण	७ गुरुवार
„ (२)	बलवान	श्रावण	कृ०	८ शुक्रवार
„ (३)	घस्तौली	श्रा०	कृ०	९ शुक्र-शनिवार
„ (४)	चमरौल	श्रा०	कृ०	१० रवि
„ (५)	तारै	श्रा०	कृ०	११ सोम
„ (६)	कलपोतो	श्रा०	कृ०	१२ भौम
„ (७)	चोसनाला	श्रा०	कृ०	१३ बुध
„ (८)	सयांकरा	श्रा०	कृ०	१४ गुरु
„ (९)	पारखी	श्रा०	कृ०	१५ शुक्र
„ (१०)	थुलीमठ	श्रा०	शु०	१ शनी
„ (११)	डागला	श्रा०	शु०	२ रवि

संख्या (१२) (मध्यनदी के तट पर वर्षाकी अधिकतासे यहीं मुकाम किया गया। श्रा० शु० ३ सोम

„ (१३) दापामण्डी श्रा० शु० ४ भौम

„ (१४) „ श्रा० „ ५ बुध

„ (१५) „ „ ६ गुरु

„ (१६) „ „ ७ शुक्र

„ (१७) ग्यू गल नदी ८ शनो

„ (१८) सवन „ ९ रवि

„ (१९) शिवचिलिंग „ „ १० सोम

„ (२०) मानाथांगा „ „ ११ भौम

„ (२१) ज्ञानमण्डी „ „ १२ बुध

„ (२२) „ „ „ १३ गुरु

„ (२३) राक्ष्यू „ „ १४ शुक्र

„ (२४) त्रिनडांग डोंग „ १५ शनी

„ (२५) कैलासलंडी भाद्रपद कृ० १ रवि लेंडीगोनवा से गोनवा १॥ मीलपीछे मुकाम किया

„ (२६) डेरफू गोनवा „ „ २ सोम

„ (२७) जुमलफू गोनवा „ „ ३ भौम

„ (२८) मानसरोवर „ „ ४ । ५ बुध

„ (२९) मानसरोवर „ „ ६ गुरु

„ (३०) राकस तालाव „ „ ७+८ शुक्र

„ (३१) गौरी गुफा से ॥ मील „ ९ शनी

संख्या (३२) ताकलाकोट „ „ १० रवि
„ (३३) „ „ „ ११ सोम
„ (३४) „ „ „ १२ भौम
„ (३५) „ „ „ १३ बुध
„ (३६) „ „ „ १४ गुरु
„ (३७) पालागुफा „ „ १५ शुक्र
„ (३८) कालापानी शु० „ १ शनी
„ (३९) गर्बियान „ „ २ रवि
„ (४०) बुद्धि „ „ ३ रवि
„ (४१) रन्स्कुपो गुफा „ „ ४ सोम
„ (४२) विष्णुगिरी गुफा „ ५ भौम (विष्णुगिरीडार निर्वाणी पहाड़)
„ (४३) शंखुलागांव „ „ ६ बुध
„ (४४) शिरखागांव „ „ ७ गुरु
„ (४५) शोसागांव „ „ ८ शुक्र
„ (४६) पाङ्गुगांव „ „ ९ शनी
„ (४७) तपोवन „ „ १० रवि
„ (४८) धारचुला „ „ ११ सोम
„ (४९) वलवाकोट „ „ १२ भौम
„ (५०) अस्कोटस्टेट „ „ १३ बुध
„ (५१) „ „ „ १४ गुरु
„ (५२) हंसेश्वरमहादेव „ „ १५ शुक्र

संख्या (५३) हंसेश्वर आश्विन् कृ० १ शनी
,, (५४) दिगरागांव ,, ,, २ रवि
,, (५५) सत्तू गढ़गांव ,, ,, ३ सोम
,, (५६) चांडकेश्वरमहादेव ,, ४ भौम
,, (५७) ,, ,, ,, ५ वुध
,, (५८) गन्नूगांव ,, ,, ६ गुरु
,, (५९) छीणा गांव ,, ,, ७ शुक्
,, (६०) लोहाघाट ,, ,, ८ शनी
,, (६१) ,, ,, ,, ९ रवि
,, (६२) चम्फावत ,, ,, १० सोम
,, (६३) ,, ,, ,, ११ भौम
,, (६४) कुकड़ौनी ,, ,, १२ वुध
,, (६५) शेरा ,, ,, १३ गुरु
,, (६६) पुण्यागिरी ,, ,, १४ शुक्
,, (६७) ,, ,, ,, १५ शनी
,, (६८) ,, शु० ,, १ रवि
,, (६९) ,, ,, ,, २ सोम
,, (७०) ,, ,, ,, ३ भौम
,, (७१) ,, ,, ,, ४ वुध
,, (७२) ,, ,, ,, ५ गुरु
,, (७३) ,, ,, ,, ६ शुक्र
,, (७४) ,, ,, ,, ७ शनी

संख्या (७५) „ „ „ ८ रवि

„ (७६) „ „ „ ६ सोम

„ (७७) „ „ „ १० भौम

„ (७८) „ „ „ ११ बुध

„ (७६) टणकपुर „ „ १२ गुरु

„ (८०) पोलीभीत „ „ १३ शुक्र

„ (८१) लखनऊ „ „ १४ शनी

„ (८२) काशी जी „ „ १५ रवि

„ (८३) काशी जी कार्तिक कृष्ण १ सोम ।

नोट:—इस उपरोक्त मार्गछे उत्तरोत्तर जानेसे कैलास यात्रा जानेवालोंको सुगमता पड़ती है कारण कि बीचमें गांव पड़ाव सब यथोचित वस्तु सब मिलती जाती है केवल ताकलाकोटसे आगे गांव तथा पड़ाव नहीं मिलता। खाद्य सामान यहीं से ले लेना पड़ता है और देशीयात्री को चाहिए कि वे अपने साथ एक दुभाशया अवश्य रक्खें कि जिससे व्यवहारमें चीज वस्तु लेनेको तथा वार्त्तालाप करनेको अच्छा सुभीस्ता रहे—उपरोक्त क्रम संख्यामें हम खेलागांव लिखना भूलगये हैं पंगूसे आगे खेलागांव पड़ता है इस हिसावसे करीब ८४ पड़ाव पड़ते हैं।

—:o:—

ॐ नमामि देवं करुणा करं तं
विनायकं विघ्न गणं हरन्तम्
गौरी सुतं गौर रुचिं गजास्यं
वृन्दारकै वर्णित चारु लास्यम् ॥ १ ॥

॥ श्री कैलासाद्रि विहारिणे नमः ॥

कैलासे गिरि शिखरे कल्प द्रुम विपिने
गुञ्जित मधुकर पुञ्जे कुञ्ज युते गहने ॥ १ ॥
लक्ष्मी अरु सावित्री वर पार्वती संगा।
सुमेरु गिरि कैलासी शेषा चल रंगा ॥ २ ॥
शीश गंग अर्द्धङ्ग पार्वती सदा विराजत कैलासी।
नन्दी भृङ्गी नृत्य करत हैं गुण भक्तन शिवकी दासी ॥३॥
कैलासी काशी के वासी अविनाशी मेरी सुध लीजो।
सेवक जान सदा चरणनको अपनो जान दरस दीज्यो ॥ ४ ॥
देव देव महादेव—लोकानुग्रह कारकः।
केलाशश्च माहात्म्यं—कथयस्व मम प्रभो ॥ ५ ॥
एकदा सुख मासीनं- शंकरं लोक शङ्करम्
कैलाश शिखरे रम्ये नाना रत्नोपशोभिते-
तं कदाचिन्महादेवं भगवन्तं त्रिलोचनम् ॥ ६ ॥

स०—कैलास शिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शङ्करम्

इत्यादि कतिपय स्थलों में ग्रन्थकारोंने विस्तार पूर्वक कलास की महिमा को कथन किया है श्रुति स्मृतियों में भी कैलास को महिमा का वर्णन बहुत जगह पाया जाताहै बहुतसी जगहों पर

कैलास की यात्रा करने वालेको सायुज्यकी मुक्ति बतलाई है लौकिकमें भी कैलासयात्रा वाला नाना विध ऐश्वर्य सुख-शान्ति कीर्ति को प्राप्त होता है, जिस पुरुषने मानसरोवरका जलपान कर लिया है तथा कैलासपर्वत के दर्शनकर लिये हों उस पुरुषको कभी व्याघ्रादि का भय कभी प्राप्त नहीं होता है कैलास की यात्रा अन्य यात्राओंसे सर्वोपरि श्रेष्ठ सर्व हितकारी भुक्ति मुक्ति दायक मोक्ष प्रद तथा सर्व कामनाओं को पूर्ण करनेहारी निर्गुण ब्रह्मको बताने वाली है इसी एकान्त रमणीय निर्जन भूमिमें हमारे पूर्वज ऋषि महर्षि कठिन घोर तप करके निर्वाण पद को प्राप्त हुये हैं धर्म मूर्ती युधिष्ठिरजी भी इसी मार्ग से स्वर्गारोहणको प्राप्त होकर ब्रह्मपद को प्राप्त होकर ब्रह्मभावको प्राप्त हुये हैं बड़े पुण्यप्रताप से तथा जन्मान्तरों के शुभ संस्कारों से यह शुभ यात्रा प्राप्त होती है इसमें भी कतिपय भक्तजन मार्ग की कठिनतासे पञ्चतत्व को प्राप्त हो जाते हैं ईश्वर कृपासे तथा सद्‌गुरु के प्रताप से अत्युत्कृष्ट पुण्योदय प्राप्त होने से उपरोक्त यात्रा परिपूर्णताको प्राप्त होती है और जन्मान्तर में भक्तिभावको बढ़ाकर ज्ञान द्वारा अनन्य पद को प्राप्त कराती है शङ्कर भगवान का पीठस्थान प्रधान वर्फालय भी यहीं पर है ।

बौद्ध तथा वैदिक धर्मावलम्बियोंका यह प्रधान मुक्तिप्रद देव स्थान तथा शंकर का विहार-स्थान माना जाता है। बहुत दूर तथा कठिन मार्ग होने से बहुधा लोग प्रायः देशान्तर से न्यून संख्या में ही जाते हैं। लेकिन बौद्धमतानुयायी प्रायः पूर्वप्रीतिक

अपना प्रधान इष्टदेव समझकर अहर्निश यात्रा तथा परिक्रमा किया ही करते हैं। चारों धामों के अतिरिक्त हिमाचलमें शंकर भगवान का यह प्रधान निवास स्थान है। दर्शनीय, मन्मोहित चारों तरफ इर्द गिर्द छोटी छोटी पहाड़ियों से वेष्ठित हिमाच्छादित २ मील के करीब ऊंचाव असली लिंगाकार अकृत्रिम है। बड़ी २ दूर से तिब्बती, भूटानी, लासा, ज्ञानिमा, इण्डिया आदि के तथा बड़े २ अंग्रेज बहादुर यूरोपियन, वैदिक मतानुयायी, सैकड़ों रुपया खर्च करते हुए दर्शन कर कृत्य कृत्यता को प्राप्त होते हैं ऐसे अद्भुत मन्मोहित कैलास के दर्शन बिना भाग्योदय के नहीं होते हैं।

कैलास यात्रा करनेवालोंको कुछ संक्षेपसे नियम

कैलास तीर्थ प्रेमी सज्जनों को यात्रा से पूर्व प्रथम चाहिये कि किसी विद्वान द्वारा तिथी मुहूर्त शुभ लग्न निकलवाकर गमन से पूर्व प्रातः काल लम्बोदर गणपती का सविधि पूजन कर नवग्रह पूजन ग्राम देवता पूजन ६४ योगिनी का सविधि पूजन कर इष्ट देव शंकर भगवान का पूजन करके यात्रा का नियम करे तथा पूर्व संकल्पित कामनाओं को सन्मुख रखकर शंकर भगवान से सविनय गमन की प्रार्थना करे। पुनः २ नमन करते हुए विघ्न हरण की जयध्वनी बोलकर यात्रा का समारम्भ करे।

जो व्यक्ति जिस भावना से सकाम यात्रा कैलास की करता है उसका वह दृढ़ संकल्प अवश्य पूर्ण होता है इसमें कोई

सन्देह नहीं निष्कामना पूर्वक यात्रा करने वाले भक्त जन को अन्तः करण की शुद्धि होकर ज्ञान द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है और जो भक्त साधुवृत्ति से विरक्त हों विशेष प्रपञ्च को न ग्रहण करते हुए शिव शिव रटकर यात्रा को करते हैं वह शीघ्र ही जीवन्मुक्ती को प्राप्त हो मोक्ष के भागी बन जाते हैं।

जो मनुष्य शीतोष्ण को सहन नहीं कर सकते उनके वास्ते कुछ संक्षेपसे नियम

कैलास तीर्थ प्रेमी यात्रियों को चाहिये कि जिस स्थान से गमन करें वहां से यथा आवश्यकतानुसार कुली कर लेवें जो कि दुभाषिया होना चाहिये कारण कि उस मुल्क को भाषा विशेष समझ में नहीं आती है।

[२] अच्छे २ गरम ऊनी वस्त्र. टोपा, कोट, कम्वल उपानह [जूता] यह सब मजबूत होना चाहिये कारण कि मार्ग में पत्थर, जल, वायु; वर्फ वहुत मिल जाया करती है।

[३] एक अच्छी मजवूत लष्टिका [लट्ठी] भी होनी चाहिये क्योंकि उतराई चढ़ाई वहुत जगहों पर मिलती है लकड़ी के रहने से सुगमता रहती है।

[४] एक छाता, कारण कि कैलास में प्रायः प्रतिदिन नियम से वर्षा हुआ करती है कभी २ ऊपर से कई स्थलों में वड़े वेग से मूसलाधार वर्फ [हिम] भी पड़ जाया करता हैं। वर्षा भी प्रातः काल को छोड़ कर अपरान्ह में २+३ वजे से आरम्भ होती है।

[५] बर्फानी चश्मा—इस चश्मेके लगाने से शिर में दर्द नहीं होता है प्रायः जहां २ पर विशेष बर्फ पड़ता है वहां पर यह चश्मा अति ही गुणकारी है। कारण कि आंधी हवा आदि का बचाव और जिस स्थल में बर्फ विशेष पड़ी रहती है वहां पर सहसा एक दम लगातार चले जाने से प्रायः शिर में दर्द हो जाया करता है ऐसी अवस्थामें उक्त चश्मे को लगाने से शिर में दर्द तथा बेचैनी बिलकुल नहीं होती है।

(६) कुछ पेटेन्ट दवाइयां—बहुधा कैलासमें ऐसा बहुत जगहों पर होता है कि जहां पर गमन करते २ ज़हरीली विषैली बूटियों की हवा लग जाया करती है और शिर में दर्द हो जाने लगता है। कमर में पीड़ा होने लगती है चित्त मिचलाने और चक्षुओं में तिमिर सा हो जाता है अतः ऐसी भी अवश्य एक औषधी रखनी चाहिये जिससे ज़हरीली वायु असर नहीं करे बुखार, हैजा; दस्त,सर्दी का विशेष लग जाना प्रतिश्याय (जुकाम) पेट में पीड़ा होना विशेष थकावट आजाना इत्यादि रोगों को थोड़ी २ औषधियें भी अपने पास अवश्य रख लेनी चाहिये ।

[७] जुराब घुटने तक इससे सर्दी असर नहीं करती है

[८] यात्री को अपने आराम के वास्ते चाहिये कि प्रथम प्रातः काल उठकर नित्य क्रिया से निवृत हो कुछ नाश्ता कर सवेरे ही पड़ाव को उठा देवें कारण कि पुनः २, ३ बजे चलने से महान तकलीफ होती है मध्यान्ह में उष्णता के पड़ने से बर्फ भी पिघल जाता है जिससे उसके ऊपर से जाने से विशेष कष्ट

होता है पड़ाव से पूर्व खाद्य पदार्थ भी समीप में रख लेना चाहिये चांय, सत्तू , फल फूल, खटाई. मिष्टान्न, किसमिस तृणराजफल (छुहारा) गुड़ आदि।

[९] यात्री को चाहिये कि अकेला मनमानी बद्रीनाथके मार्ग से कैलास यात्रा करनी कठिन है कारण कि बद्रीनारायण से माणा गांव तक आम रास्ता है। आगे फिर पगडण्डी तक भी नहीं है अतः ५, ८ मूर्ति एकत्रित हो सामानादि के उठाने के वास्ते दुभाषया को अवश्य रक्खें जो मार्ग का ज्ञाता हो।

(१०) छोलदारी (तमोटी) बद्रीनाथ जी के मार्ग से जाने वाले यात्री को इसके न होने से महान तकलीफ होती है कारण कि मार्ग में कोई विशेष जगह ठहरने की नहीं बनी हुई है।

(११) फुकनी—फुंक द्वारा अग्नि जलानी होती है गीली लकड़ियों से काम लेना पड़ता है, अतः फुकनी के होने से अग्नि जलाने में विशेष तकलीफ नहीं होती। (नहीं तो बिजली का दम का चुल्हा रक्खे)

(१२) तिब्बती कैलास में अंग्रेजी नोट और गिन्नी नहीं चलती केवल रुपया, अठन्नी, चवन्नी, दुवन्नी चांदी की चल जाती हैं। तिब्बती सिक्के जिसको टांका बोलते हैं अंग्रेजी रुपये में ५ टंकी ६ टंकी देते हैं इन्हीं टंकियों से यहां पर व्यवहार चलता है लेकिन प्रायः बहुत सी जगहों पर देखा गया कि ये लोग अपना सिक्का टंकी के बजाय अंग्रेजी रुपये को ही पसन्द करते हैं।

(१३) कुछ मिष्ठान्न, सूकड़ी, गुड़, पापड़ी आदि भी अवश्य रक्खें कारण कि यात्री चलते २ थक जाता है तुरन्त ही शीघ्रतया भोजन नहीं बना सकता अतः ऐसी वस्तु पासमें रक्खी हुई महान उपयोगी होती हैं।

यात्री को हवा से बचने के लिये गर्म कन्टोप का भी अवश्य प्रवन्ध करना चाहिये कारण कि मार्ग में हवा बहुत चलती हैं।

आस्कोट से आगे के मार्ग में जोके बहुत मिलती हैं अतः वहां जरूर जुरावों का प्रयोग करें।

कैलास में जानेके मार्ग चारो तरफ से हैं बद्रीनारायण से वापिस जो शीमठसे एक मार्ग जाता है गंगोत्री जमनोत्री से तथा केदारनाथसे और नैपाल टणकपुर अलमोड़ा आदि से भी मार्ग जाता है।

(गढ़वाल] नीत्तिघाट से जाने वाले यात्रियों को भोट में पहिले दापानारायण के दर्शन होते हैं। गंगोत्री की तरफ से जाने वाले यात्रियों को भोट में पहिले गारतोक थोलिङ्ग मंग लांग स्थान मिलते हैं।

नैनीताल, अलमोड़ा, वागेश्वर जोहार से जाने वाले यात्रियों को भोट में पहिले शिवलिंग और ज्ञानिमा स्थान मिलते हैं।

मुल्क दारिमा से जाने वाले यात्रियों को भोट में पहिले "दुमज्यु" स्थान मिलता है। मुल्क चौदवांससे जाने वाले यात्रियों को भोट में पहिले " ठोकर " स्थान मिलता है।

वीरजमन गंज नैपाल से जाने वाले यात्रियों को भोटमें पहिले खुर्जरनाथ स्थान मिलता है।

पहिले नीखी का कुछ मार्ग दिखाते हैं कारण कि इस मार्गसे प्राय: व्यापारी लोग भी जाया करते हैं निक्ति से ६ मीलपर काला जावर रहने को मैदान मामुली चढ़ाई है पासही नदी बहती है बस इससे आगे अब आपको ईंधन के लिये लकड़ी नही मिलेगी क्योंकि बकरियों के मींगड़े और छोटी छोटी झाड़ियोंके कांटेदार झाड़ गीले बहुतायत से मिलेंगे खाने का सामान नीक्ति से सब ले लेना चाहिये और साथ के घोड़े तथा बकरी के लादने वाले व्यापारियों के साथ जानेमें अच्छा सुभीता रहता है काला जावरा से मील पर एक भारी शृङ्ग [धुरा] मिलेगा रास्ता बिलकुल चढ़ाई तथा बर्फ आंधी का बड़ा बेग रहता है यदि अधिकता से हुई तो छोटे २ जीव बकरी आदि भी कभी २ उड़ जाते हैं आदमी को भी जी बचाना कठिन हो जाता हैं मुकाम नहीं है इस शृङ्ग से ३ मील उतराई से रीम खीम पड़ाव रहने को कुछ अच्छा है रीम से ३ मी० होती मुकाम है मार्ग चढ़ाई उतराई का है यहां तक गवर्मेन्ट की सरहद है चारों तरफ मैदान है भोटियों की बकरी घोड़े चवर गाय आदि चुगने को वा व्यापारको आए प्रस्तुत रहते हैं और भोट राज्य का एक कारकून भी यहांपर जांचके लिये रहता है ओर डेड़ सौ के करीब छोलदारियां भूटानी लोगों की रहतीं हैं याने भोट में प्रवेश होने का यह चौराहा है यहांसे दांया २५ मील दौगफू मुकाम भोटमें है और बांया मार्ग ४ रोजमें

दापा नारायण है और फिर दाहिना ५ मील चोर होती मुकाम है सन्मुख से दो पड़ाव डागर मुकाम है यह भी रास्ता कैलास को सुगम पड़ता है निर्वाण मण्डली के [अटक भवन स्थित] श्रीयुत दि० नागा बाबा मुक्तिगिरीजी कैलास मानसरोव होते हुये मंडली के साथ ताकलाकोट में प्रवेश हुये थे दाया तथा ज्ञानिमासे तीर्था पुरी को भी मार्ग जाता है भस्मासुर दानव यहीं भस्म हुआ था अभी तक भस्म की ढेरी मौजूद है २ मट्ठ और लामा गुरू यहां पर पुजारी हैं यहां तक चौराहा का वर्णन समाप्त करते हैं अब जिस मार्ग से पूज्यपाद श्री १०८ स्वामी जयेन्द्रपुरी मण्डलेश्वरजी की निर्वाण मण्डली गई थी वह अगम्य मार्ग दिखलाते हैं लेकिन यह मार्ग कुछ कठिन अप्रगटित है आम मार्ग नहीं है अतः उक्त मण्डली का मार्ग तथा कृत्य संक्षेप से लिखते हैं।

श्री वदरीशो विजयते

प्रथम मण्डली ने २ मास वदरीश पुरीका सेवन कर-मध्य में ही मुचु कुन्द गुफा तथा सतपंथ आदि के दर्शन कर पवित्र कैलास यात्रा का कई दिनसे शुभ विचार होने लगा [जाको जापर सत्य सनेहू सो तेहि मिले न कछू संदेहू] अत्युत्कट स्नेह कैलास में सब का लगा हुवा था स्नेह रूपी रज्जु कैलास तक पहुंच गई अत : शुभ मंगलमय यात्रा की कई दिन से तैय्यारीयां होनी शुरु हो गई थीं सर्व सम्मति से तथा शास्त्रीय दैवज्ञ पंचांग रीती से पुण्य तिथी मंगलकारक दिन श्रावण वदी ७ गुरुवार को ही

निश्चय किया गया भूतपूर्व कैलास यात्री मास्टर—आदि द्वारा मार्ग का निश्चय कर यथोचित सामग्री की तैय्यारी करी। यद्यपि कई व्यक्तियों ने कैलास का कठिन मार्ग बर्फ तस्करादि का भय नाना प्रकार से बतलाया लेकिन निर्वाण मण्डलीने कुछ ध्यान न देते हुए कैलास दर्शन का दृढ़ विचार, कर गुरुवार की उक्त सप्तमी को प्रातः काल ब्राह्म मुहूर्तमें उठकर नित्य नैमित्तिक क्रियासे निवृत्त हो बद्रीशके पट खुलनेके पूर्व सर्व मण्डली भगवानके दर्शनार्थ उपस्थित हुई अभिषेक तथा पूजनादि की सामग्री एकत्रित कर निर्विघ्नता पूर्वक बड़े आनन्दके साथ में भगवान का पूजन तथा अभिषेकादि हुआ लघु आरती के पश्चात् मध्यमें कुछ गन्धर्व मण्डली ने बड़े प्रेम से घण्टा भर भगवान की स्तुति सम्बन्धी गीत सुनाये पश्चात् भगवान का भोग तथा आरती पुष्पाञ्जली करते हुये-मांगलिक श्लोकावली द्वारा ईशस्तुति करी गई पुनः मुख्याधिकारी श्री रावल साहिबजीने स्वकर कमलों द्वारा मण्डलाधिपती पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराजको पुष्पोंका सुसज्जित हार माला पहना कर मांगलिक चन्दन तुलसी दल प्रसाद को अर्पण किया।

पश्चात् लक्ष्मी जी गरुड़ जी हनुमान जी गणपती जी घण्टा कर्ण आदिके दर्शन भेट परिक्रमा करते हुये कतिपय तीर्थ पुरोहित पण्डाओं को तथा भिक्षुकों को सन्तुष्ट करते हुए पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज सहित मण्डली के स्वस्थान बंगले में आकर प्राप्त हुये मांगलिक भिक्षा करते हुये निशामुख में गणपती

अन्तर्यामी का ध्यान कर आगे को गमन की तैय्यारी करी पं० नारायण दत्त व शंकरदत्त जी जिनके बंगलेमें दो मास निवास किया था आपने बड़े प्रेम से गमन की तैयारी को अवलोकन कर पर्वतीय खच्चर तथा एक अच्छी बढ़िया मजबुत छोलदारी भेंट कर कुली आदिकों का यथोचित खाद्य पदार्थ का सुप्रबन्ध किया माननीय रावल साहिब जी की भी तरफ से २ खच्चर तथा एक वाहनीय घोड़ा आदि का इन्तज़ाम हुआ पथ दर्शक कुली भी यहीं से पांच किये गये आवश्यकीय सर्व वस्तुएं एकत्रित हो जाने पर ब्रह्माण्डपती श्री शंकर भगवान की जय ध्वनी कर पुरी में गमन किया "भक्तशील सेठ पं० नारायणदत्त शंकरदत्त जी की बैठक में मण्डली ने कुछ विश्राम कर—भक्त जनों के हितार्थ मांगलिक वेदान्त अमृत रूपी धारा को पान कराकर पश्चात् मण्डलीस्थित पुजारी ने वेदोक्त मन्त्रोंसे उक्त पं० जी को शुभाशीर्वाद देकर बद्रीश जी के दर्शन को गमन किया पुरी के संचालक अधिपती रावल साहिब जी ने मण्डली का आगमन देख सप्रेम सादर से सर्व मण्डल को निज हेडक्वाटर में ले जाकर सहर्ष स्वागत करते हुये पूज्यपाद् मण्डलाधिपती जी के कम्बु (ग्रीवा) में सुसज्जित पुष्पों का हार पहना कर—पुनः सर्व महात्माओं के हृदय में सुन्दर अत्युत्तम भगवत्प्रसादीय माला पहिना कुछ मांगलिक चर्चा कर आपने कुछ चिट्ठियां भोटके लिये लिखी जो कि सहायप्रद थीं पश्चात्, गमनके समय पर पुनः श्री बद्रीनाथजीके दर्शनको पधारे अत्युत्तम श्लोकों द्वारा ईशस्तुती कर-यावत् दर्शकमण्डलीने बड़े ऊंचे

स्वरसे श्रीबद्रीनारायण भगवान की जय ध्वनी कर उपरोक्त सर्व प्रतिमाओंके दर्शन भेट परिक्रमा कर कैलासदेवका ध्यान धरते हुए प्राङ्मुखी दरवाज पर आकर प्राप्त हुये; पूज्यपाद् श्री स्वामीजी की दयालुता तथा पूर्व प्रभावको अवलोकन कर कतिपय जन समुदाय एकत्रित हो कैलासदेवकी जय जयकार उच्चारण करने लगे मघवत् भगवानभी मन्द मन्द शीतल वायु तथा वर्षा बर्साकर आह्लादको प्राप्त होने लगे चारों तरफसे जयध्वनी कर जोड़ व करतल ध्वनी तथा मांगलिक चर्चायें होने लगी ऐसे आनन्दमय मंगलके शुभावसर पर सर्व मण्डलीने शनैः २ गमन कर निशामुखमें २ मीलके फासले पर माणा गांव गणेशगुफाकी सन्निधीमें पड़ाव किया सन्ध्या कालमें पुष्पाञ्जली बड़े प्रेमके साथ में हुई शर्वरीमें शयन कर पुनः द्वितीय दिन भिक्षासे निवृतहो पं० नारायणदत्तजीने सहर्ष सर्व आवश्यकीय खच्चरादिका सुप्रवन्धकर कतिपय भक्तमण्डलीने एकत्रित होकर कैलाश गमनका फोटो स्वामीजीका पृथक तथा सर्व मण्डलीका चित्र ध्याननिमित्त लेकर उक्त भक्त मण्डलीने खच्चर छोलदारी आदिका इन्तिजाम कर पुनः पुनः सहर्ष नमन करते हुए प्रेमभरी दृष्टिसे अवलोकन करते हुए स्वस्थानको प्राप्त हुये।

नोट—कुछ व्यक्तियोंने वहुधा कैलास मार्गमें तस्कर (चोर) आदिका भय वहुत बतलाया था कुछ लोगोंका कहना था कि मण्डलीके साथमें एक दो वन्दूक रहेगी तो वहुत अच्छा होगा इत्यादि कई २ बातोंका प्रश्नोत्तर हुवा लेकिन उक्त प्रपञ्च शस्त्रादिकी आवश्यकता न समझ कर शंकर परमपिताके आधार पर ही गमन किया लेकिन

श्री स्वामीजीका दृढ़ संकल्प धार्मिक स्वामी भक्त कुत्ते पर कुछ रहा निदान ईश्वर कृपासे सात्विक दृढ़ संकल्पकी पूर्ती इसी माणागांव से होगई अकस्मात्-एक अच्छा बढ़िया सुन्दर रमणीय दर्शनीय भोटिया श्वान मण्डलीकी छोलदारीके सन्निधीमें आकर स्थित हो गया तथा इसी प्रकार से दूसरे पड़ावमें अति दर्शनीय सुपुच्छ सघन रोमावली श्वानबधूभी श्वानको अवलोकन कर साथमें होगई— इन दोनों भूटानी कुत्तोंकी उपस्थितीसे भूटान मार्गमें बहुत सहाय मिली; मण्डलीमें प्राण रक्षणार्थ शीत प्रधान होनेसे ४ छोलदारियां तमोटी रक्खी गई थीं एक छोटी महाराजकी तथा एक माननीय वासुकी ब्र० जीकी व एक सेवकोंकी तथा एक बड़ी विशाल समुदायकी जिसमें कि १२-१३ मूर्ती समा जाय बस इन्हीं चारों छोलदारियौं के इर्दगिर्द उक्त भोटिया कुत्ते घूम २ कर भ्रमण करते हुये भयंकर तीव्र ध्वनी कर रक्षा किया करते थे ये स्वामी भक्त धार्मिक कुत्ते उसी सरीखेके थे कि जिस समय साक्षात् धर्मावतार अन्तर्यामी धर्मपुत्र धर्मवीर राजा युधिष्ठिरजी की परीक्षा, स्वर्गारोहण समय श्वानका रूप धारण कर धर्मकी परीक्षा ले, निज स्वरूपको प्रगट कर, स्वर्गतक सहाय की थी इसी प्रकार उक्त श्वानभी कभी २ नदी में स्नान करना, एकान्तमें बैठना समुदायके साथ जाकर परिक्रमा देवदर्शनादिका करना इत्यादि धार्मिक लक्षणोंसे विदित होता था कि ईश प्रेरित स्वामी भक्त धार्मिक युग जोड़ी ही थी कई लक्षणों युक्त इन दोनों श्वान जोड़ीने चिरकाल पर्यन्त मण्डलीके साथ रहकर अहर्निश मोट कुत्तोंसे तथा भयङ्कर याचक भोटियोंसे

रक्षा करते रहे, ऐसे सुन्दर दर्शनीय स्वामीभक्त श्वान, इण्डियामें ५०) में भी जोड़ो नहीं आ सकती, ईश प्रेरित ऐसे कुत्ते अनायाससे प्राप्त होगये थे। [नूतन मार्ग-बदरीनाथसे कैलास तथा ताकलाकोट तक]

सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी
विश्वरूपी विशालाक्षो विद्यां देहि सरस्वती।

माणां गांवको सन्निधिमें सरस्वती गङ्गा पड़ती है यह पवित्र विद्याप्रद गंगा उपरोय हिमाचलसे पर्वतोंको छिदिर भिदिर कर हर हर रटती हुई-बड़े वेगसें गमन कर अलकनन्दा में आ मिलती है सर्व मण्डलीने माणागांव से उत्थान कर- सरस्वती गङ्गाके तट ही तट-आत्मचिन्तन करते हुए गमन किया श्रावण कृ० ८ को करीव १॥ मीलके फासलेपर ही पड़ाव किया गया मध्य में मार्ग उतराई चढ़ाईका मार्ग विशेष रहा सरस्वतीजीका पुल [सेतु] पार करने पर थोड़ी दूरी पर वर्फका अगम्य और खण्डित भयङ्कर मार्ग मिलता है यहां पर रास्ता छोटा होजानेके कारण गिर जानेका बड़ा भय रहता है ऐसे कठिन मार्गसे खचरादि की प्राण रक्षा शंकर भगवानने ही करी। भयभीत मार्गको तय करके सरस्वती गङ्गा तटपरही मुकाम किया गया—

ॐ जय शङ्कर पार्वतीपते मृड शम्भो शशि खण्ड मण्डन।
मदनान्तक भक्तवत्सल प्रिय कैलास दया सुधाम्बुधे॥ १॥

[पड़ाव (२) वलवान् श्रा० कृ० ८ भृगुवार]

रहनेको मैदान, तथा गंगाजल, गीलीलकड़ी इधर उधर प्रताल करनेसे मिलती है, सर्व मण्डलीने पवित्र स्थल पर छोलदारियां

डाल कर निशामुखमें सहर्ष पुष्पाञ्जलीका पाठ कर शर्वरीमें शयन करते हुए ब्राह्म मुहूर्तमें उठ नित्य क्रियासे निवृत्त हो , चाय सत्तू को ग्रहण कर ॐ नमः पार्वतीपतये की उच्च ध्वनी कर आगेके पड़ावको गमन किया ।

ॐ कैलास वासी कवची कठोर स्त्रिपुरान्तकः ।
वृषाङ्को वृषभारूढ़ो भस्मोद्धूलित विग्रहः ॥ २ ॥

[पड़ाव (३) घस्तौली श्रा० कृ० ६ शनीवार ।]

मार्ग उतराई चढ़ाईका साधारण है रहनेको मैदान जल यहां भी सरस्वती गङ्गाका मिलता है यह पड़ाव करीव वलवानसे ३ मील पड़ता हैं लकड़ी जलानेकी गीली मिलती हैं लेकिन ईश्वरकृत महिमा ऐसी अद्भुत है कि गीली ही लकड़ियां मसालकी तरह अच्छे तौर से जल जाती है। रसोई वड़े आनन्दसे निशामुखमें वन जाया करती थी। दूसरी अद्भुत वार्ता यह है कि प्रायः इधर वर्षा मध्याह्नमें २-३ वजेसे पड़ने लगजाती है और धीरे २ सायंकाल तक व रात्री तक पड़ती रहती है कभी २ वर्फका भी ऊपरसे आगमन हो जाता है लेकिन देश जैसी मूसलाधार वर्षा ईश्वरीय कृपा से इधर नहीं होती नहीं तो सारा प्यारा भारत रसातलमें ही गोता खा जाय यह मघवत् इन्द्र भगवान ही की कृपा है हम लोगोंकी उपस्थिती में इस पड़ावमें सारी रात वर्षा पड़ती रही प्रातः काल तक वर्षा न्यूनतासे पड़ती रही वर्षा के कारण आज भिक्षा वनाने में वड़ी झञ्झट रही एक दम गीली-लकड़ियों को वड़ी मुश्किलसे जलाकर रसोई वनाई गई इस वास्ते यात्री को चाहिए कि मार्गके वास्ते एक हवा फूंकने

की फुकनी अवश्य रक्खें नहीं तो कहीं २ पर बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है सर्व मण्डलीने भिक्षाके अनन्तर शङ्कर भगवानकी पुष्पाञ्जली करते हुए शर्वरीमें शयन कर प्रातः ब्राह्म मुहूर्तमें उठ नित्य क्रिया से निवृतहो जल्दी शीघ्र ही भिक्षासे निवृतहो मध्याह्नमें १२ बजेके करीव शंकर भगवानकी जय ध्वनी करते हुये आगेके पड़ाव को गमन किया।

ॐ—कैलास शैल विनिवास वृषाकपेहे
मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदा पह शक्तिनाथ-
संसार दुःख गहनाज्जगदीश रक्ष॥ ३॥

[मु० (४) चमरौल श्रा० कृ० १० रवि]

१॥ मील तक मार्ग साधारण है सर्व मण्डलीने कुछ बीचमें थोड़ा विश्राम कर आगेको प्रयाण किया कुली लोग यहांसे बहुत कठिन मार्ग बतलाते थे और उनका कहना था कि अब आगे आज जाना ठीक नहीं रहेगा यद्यपि मार्ग कठिन था दूसरे ये लोग द्रव्यादि के लोभसे पड़ाव भी बढ़ाना चाहते थे अतः परम पिता श्री शङ्कर भगवानकी जय ध्वनी कर सर्व सम्मतीसे आगे को मुकाम बढ़ाया गया। आगे जाने पर उतराई बहुत मिली यह मार्ग खण्डित तथा ऐसा भयङ्कर था कि मनुष्योंका भी जाना बड़ा कठिन होता था खच्चरों को महान तकलीफ रही बेचारे बुद्धिमान कुली लोगोंने कई जगहों पर खण्डित रास्तेको काट कूट कर ठीक कर खच्चरोंकी प्राणरक्षा की थी शङ्करजीकी अतुल कृपासे महान कठिन मार्गको तय

करके ६-७ मील गमनकर निशामुखमें पड़ावमें आकर प्राप्त हुये इस पड़ावमें सरस्वती गङ्गाका तथा नालेका जल मिलता है लेकिन लकड़ीका बिलकुल अभाव है प्राय: इस तरफ बकरियोंका आवा-गमन विशेष रहता है भोटके व्यौपारी सैकड़ों बकरियोंका समुदाय का समुदाय एकत्रित कर सामान भर कर इधर उधर व्यौपारको जाया करते है बस शर्वरीमें लकड़ीके अभावसे इन्होंकी मींगणीको एकत्रित कर समुदायके वास्ते चाय बनाई गई सत्तू चाय तथा कुछ गुड़की सूकड़ीको ग्रहण कर ईश्वरीय महिमाको अवलोकन कर ईश्वरको धन्यवाद दे शंकर भगवानकी पुष्पांजली कर विश्राम किया। प्रातःकालभी उक्त मींगणीको एकत्रित कर चाय सत्तूको ग्रहण कर आगेको पड़ाव किया गया।

ॐ—कैलास शैल भुवने त्रिजगज्जनित्रीं
गौरीं—निवेश्य कनकाचित रत्न पीठे।
नृत्यं विधातु मभिवाञ्छति शूल पाणौ
देवाः प्रदोष समये नु भजन्ति सर्वे ॥ ४॥

(५) (मु० तारै आ० कृ० ११ सोमवार)

यहांसे आगे मार्ग कुछ दूर तक साधारण मिलता है लेकिन जल के नदी नाले झरने तथा वर्फादि बहुत जगह पर पड़ती है देशी यात्रियोंको इस मार्गमें बहुत जगह वर्फ मिलने से बहुत कष्ट होता है सुना जाता है कि मु० तारै तकके बीचमें वर्फादिके खण्डहरें टूट कर गिर जाते हैं प्राणियोंको प्राण बचाने मुश्किल हो जाते हैं अतः ऐसी अवस्था में शङ्करभक्तकी शङ्करजी ही प्राण रक्षा करते हैं मण्ड-

ली ने आत्मचिन्तन करते हुये १२-१३ मीलके फासले तक चलकर ईश्वरीय अलौकिक दृश्यको अवलोकन करते हुये निशामुखमें करीब ४ वजे के पड़ाव किया मध्यमें अति हिमाच्छादित एक नदी मिलती है यहींसे कठिन मार्ग है बुद्धिमान साथके अनुचर खच्चरवालोंने फावड़ेसे वरफ को काट काटकर सीढ़ीके तौरपर मार्ग बनाकर खच्चरों को कुदा कुदू कर शनैः २ पार किया था इसी वर्फको पार करते समय मण्डली स्थित पुजारीजी भी खच्चरकी टक्करसे अधः पतन हो गये थे शङ्कर भगवानने ही जीवनदान दीया वर्फ की उतराई चढ़ाई विशेष स्थलों में होने से एक जगह पर स्वामीजी भी व कुछ ४-५ मूर्ति महात्मा भी एक दो दफे गिर गये सुना भी गया कि इसी मार्गमें कभी कभी जहरीली हवाभी चलती है जिसके कारण यात्रियों को मूर्छा होकर शिरमें दर्द हो जाता हैं मण्डली गत १-२ महात्माओं के भी कुछ साधारण मूर्छासी हुई पुनः तुरन्त नस्य सुंघाने से शान्त होगई अन्तर्यामी की अपार कृपासे से निर्विघ्नता पूर्वक सर्व मण्डली नदी नाले वर्फादिको पार करते हुए पड़ावमें आकर प्राप्त हुए यहां पर भी इस पड़ावमें लकड़ियोंका अभाव रहा अतः पूर्वोक्त वकरियों की मींगनीको एकत्रित करके चाय बनाकर चाय सत्तू सूकड़ी आदि मण्डलीमें दीया गया। सूकड़ी एक गुजराती शब्द है गुड़ आटा घृत मिलाकर कसारके तौर पर बनाई जाती है। बस इसीका जल-पान कर शङ्कर भगवान की पुष्पाञ्जली करते हुए रात्री बिताई प्रातः कालभी नित्य क्रियासे निवृत हो उक्त मींगणीको एकत्रित कर चाय बना कर चाय सत्तू सूकड़ीको ग्रहण कर जयध्वनी करते हुए

आगेके पड़ाव को गमन किया उपरोक्त पड़ावमें जल नदी तथा नालेका मिलता है पड़ाव की जगह भी ऊंचे स्थलपर अति दर्शनीय निर्मल झरणे हिमाच्छादित पर्वतमालाओंसे वेष्टित मनमोहित हैं ऐसी पवित्र भूमीको अवलोकन कर मालूम पड़ता था कि हमारे पूर्वज ऋषि महर्षि इसी निर्जन एकान्त रमणीय स्थलमें घोर तप करके निर्वाण पदवीको प्राप्त हुए होंगे।

निम्न लिखित कुली लोग जो कि बदरीनारायणसे परिचर्या निमित्त साथमें हुए थे फी मूर्ती को खुराक तथा १) की मजदूरी प्रति दिनकी ठहराइ हुई थी इन लोगोंका काम यही रहता था कि पड़ाव उठते समय सब सामानको छोलदारी सहित खच्चरों पर लाद कर आगेके मार्गको दिखलाना, कठिन समयमें घोड़ोंकी रक्षा, तथापड़ाव पर जाकर छोलदारियां गड़वाकर भोजन निमित्त लकड़ियोंको} उपस्थित करना,

उक्त कुलियोंके नाम:—

(१) आलमसिंह जाती जीतवान माणागांव—ये रावल साहिब जी की तरफसे भेजे हुए थे इन्होंने अपनी जिंदगीमें बड़ी २ कठिन हिमाच्छादित पर्वतोंकी यात्रा की हुई है कई विदेशीय भाषाओंके ज्ञाता तथा पथ दर्शक में बड़े कुशल हैं।

(२) नथ्थू जाती जीतवान माणागांव

(३) जगथू „ „ „

(४) रामसिंह „ „ „

(५) गङ्गासिंह „ दुर्याल गांव पाण्डूकेश्वर व बामनीगांव

वदरीनाथ। ये पवित्र स्थलके पांचों सेवक पथ दर्शक सें कुशल रहे।

ॐ—शीर्ष जटागण भारं गरलाहारं समस्त संहारम्।
कैलासाद्रि विहारं पारं भव वारिधे रहं वन्दे ॥ ५ ॥

[(६) मु० कलपोती श्रा० कृ० १२ भौम]

मार्ग उतराई चढ़ाईका तथा छोटे मोटे पत्थरोंका विशेष रहा वर्फ भी कई स्थलोंमें पड़ती है इधर मार्गमें पगदण्डी व रास्ताविलकुल नहीं था बहुत दूर तक ४ हाथ लम्बे ३ हाथ चौड़े पत्थरों परसे गमन करना पड़ता है इस प्रकारसे करीब ३-४ मील पत्थर और १०-१५ जगहों पर वर्फ मिलती है मध्यमें नील पर्वतके अलौकिक दूर से दर्शन होते हैं यह पर्वत अति ऊंचा तथा हिमाच्छादित, इसी पर्वत पर भक्तशील कागभुशण्डजीने शङ्कर भगवानकी घोर तपस्या करके निर्वाण पदको प्राप्त हुए हैं कुछ दूर चलकर राक्षस तालाव मिलता है इसके दर्शनसे भी अभ्युदय की प्राप्ती होती है पश्चात् कुछ दूर चल कर देव तालावके दर्शन होते हैं यह सरोवर बहुत लम्बा चौड़ा अति निर्मल जल हिमाच्छादित इसके दर्शन से अन्तः करण शुद्धि होकर भक्ति प्राप्त होती है पुनः आगे गमन करते हुए भगवती जगदम्बाके दर्शन होते हैं ये भोट लोगों की देवी मानी हुई है ये मार्ग धूपदीप के अभावसे पत्थरही भेटमें अर्पण किया करते हैं उतराई चढ़ाई तथा विशेष वर्फकी समाप्ती पर बहुत पत्थरोंका समुदाय एकत्रित ऊंचा सा करके एक मध्यमें लाल झण्डी-यांसी लगा दिया करते हैं इन्हींको देव मानकर भक्तिसे श्रीफल

अथवा पाषाण अर्पण करते हैं क्योंकि यह देव उतराई चढ़ाईमें तथा वर्फादिके कांटेको काटते समय सहाय करते हैं इत्यादि सर्व मण्डलीने श्रीफल देवी को अर्पण कर सब प्रसाद बांटकर आगेको गमन किया बस यहींसे अङ्गरेज बहादुरकी सरहद समाप्त हो जाती है। चीन भूटानकी सरहद शुरू होती है अतः यहां जगदम्बा की सन्निधीमें ५-१० मिनट विश्राम कर प्रसादको ग्रहणकर पश्चात आगे जाना होता है यहांसे आध मील चलकर करीब ३॥ फर्लाङ्ग वर्फ कठिन पड़ती है। इसीके ऊपरसे जाना होता है मार्ग सीधा है इस वर्फके कांटेसे ईश्वरही रक्षा करे यात्री को ध्यान रहे कि ऐसे विशेष वर्फके कांटे को प्रातः कालही पड़ाव उठाकर ठंढ २ में ऐसे कठिन मार्गको तय कर लेवे क्योंकि १०-११ बजके पूर्व २ यह वर्फ जमी रहती है पश्चात् गर्मीसे पिघल जाती है फिर इसके ऊपरसे गमन करनेसे तकलीफ होती है मंडलेश्वरजीने प्रति मंडलीके महात्माओंको बदरीनाथसे पाद रक्षणार्थ एक २ यथोचित रबड़का तथा कपड़ेका जूता ले दिया था एक दो मूर्ती का विशेष पत्थरोंमें गमन करनेसे छिदिर भिदिर भी हो गया था अतः सर्व महात्माओंने अन्तर्यामीका ध्यान धर उक्त वर्फके कांटे पर गमन किया वर्फ धूपके कारण पिघल गया था सर्व मूर्ती व खचरादि गोड़े जानुतक धंसते चले गये विशेष वर्फके कारणसबका शरीर शिथिल होगया लेकिन पूज्यपाद स्वामीजो की अपार कृपासे तथा शङ्कर भगवानकी दयासे कोई मूर्ती भी नीचे न गिरती हुई इस भयभीत कांटेसे सुगमतासे सब पार होगये पार जाकर अपने २

वस्त्रसे पैरोंपरसे वर्फको पूछकर ५ मिनट विश्राम कर ईश्वरीय अद्भुद् लीलाको अवलोकन करते हुए आगेको गमन किया इसी उपरोक्त वर्फके कांटेमें अगर ऊपरसे वर्फ गिरने लग जाय फिर तो प्राणी इसीवर्फमेंही लय हो जाय, सुना भी गया कि एक दो दफे बकरियोंका कुछ समुदाय इसी वर्फके कांटेमें लय हो गया था इस वर्फके कांटेसे कुछ आगेका मार्ग साधारण रहा पश्चात् कुछ दूरीपर चलते २ शङ्कर भगवानका ध्यान धर प्रातःकाल ६ बजेसे चलकर सायंकाल ६॥ बजे तक गमनकर पड़ाव किया। यह पड़ाव कठिन तथा दूरका रहा मध्यके मार्गमें भी पहाड़की उतराई चढ़ाई विशेष होनेसे सबको थकावट विशेष होगई थी, तथा कुछ व्यक्तियोंको चोटकी भी शिकायत रही अतः संक्षेपसे निशामुखमें हरिभजन करते हुए सर्वरीमें शयन किया, प्रातःकाल नित्यक्रियासे निवृत हो लकड़ीके अभावसे चाय सत्तूको ग्रहण कर शङ्कर भगवानकी जय ध्वनी करते हुए आगेके पड़ावको गमन किया।

ॐ—वसन्तंकैलासे सुर मुनि सभायां हि नितरां
ब्रुवाणं सद्धर्म निखिल मनुजानन्द जनकम्।
महेशानी साक्षात्सनक मुनि देवर्षि सहिता
महादेवं वन्दे प्रणत जनतापोप शमनम्॥ ६॥

[मु० ७ चोसनाला श्रा० कृ० १३ बुध]

वस यहीं तक हिमालयकी वर्फकी हद हो चुकी थी अब आगे ईश्वर कृपासे मार्ग अच्छा आया अतः प्रसन्न हृदयसे मांगलिक वार्ताओं को कथन करते हुए कुछ दूर चल कर भगवानके श्यामकर्ण

घोड़ेके चरणारविन्दके दर्शन एक अति सुन्दर पाषाण पर हुये पूछने से मालुम हुआ कि राम व लक्ष्मणजी इसी मार्गसे कैलास यात्राको आये थे, तबसे उनके घोड़के चिन्ह हैं पर्वतीय तथा यात्रीजन इन चिन्हके इर्द गिर्दमें पत्थर लेकर चढ़ाते हैं तथा नमन करते हुये आगेको प्रयाण किया करते हैं, पश्चात् ६-७ मोल चल कर करीब अपराह्नमें २-३ बजेही मुकाममें आकर प्राप्त हुए, यह पड़ाव पर्वतीय गङ्गाजीकी सन्निधीमें है वथवेकी भाजोभी यहां मिल जाती है रहनेको भी छोटी २ गुफाके सदृश स्थानभी मिल जाता है आस पास लकड़ियोंका तथा घोड़ोंकी घासका यहां पर सुभीता है, लकड़ीकी सुगमतासे मण्डलीमें रसोई बड़े प्रेमसे हुई भिक्षाके अनन्तर निशामुखमें शङ्कर भगवानकी पुष्पाञ्जली पाठकर शर्वरीमें शयन करते हुये प्रातः नित्य क्रियासे निवृत हो चाय सत्तूको ग्रहण कर जय ध्वनी करते हुए आगेके पड़ावको गमन किया ।

ॐ—"स्कान्दे"-ब्रह्मा कृतयुगेदेवस्त्रेतायां भगवान् रविः ।
द्वापरे भगवान विष्णुः कलौ देवो महेश्वरः ॥ ७ ॥

[मु० ८ श्यांकरा श्रा० कृ० १४ गुरु]

मार्ग कुछ दूर तक उतराई चढ़ाईका पश्चात् कुछ दूर पर्यंत मैदान लग जाता है इस मार्गमें जङ्गली घोड़े बहुतायतसे मिलते हैं ये घोड़े स्वतन्त्र टोली बांध बांधकर विचरते रहते हैं डोल डोलमें अच्छाकद खूबसूरत अति रमणीय होते हैं, स्वदेशी घोड़ोंसे मिलते जुलते हैं विशेष इतना ही है कि अगर जब कोई इनको पकड़ने जाते हैं तो ऊपरको मुख उठाते हुये बड़े बेगसे भागते हैं, इनका जन्म

मरण इसी पहाड़में ही हो जाता है जिस प्रकारसे भूटानी कुत्ते स्वदेशमें आकर वेकार होजाते हैं इसी प्रकार उपरोक्त घोड़ेभी स्वदेशमें आकर किसी कामके नहीं रहते, कस्तूरी मृगभी इसी प्रांतमें बहुधा अकंसरसे मिलते हैं, पुनः आगे कुछ दूर पर एक देव मिलते हैं इनकी गाथा इस प्रकारसे है कि इस मार्गमें पहिले २ दो चंवरी गाय थीं जो कि चलते हुए मुसाफिरोंका मार्ग रोक दिया करती थीं जिससे मुसाफिर भयके कारण आगेको नहीं जा सकते थे और निराश होकर वापिस लौट आते थे ईश्वर अन्तर्यामीकी अपार कृपा से एक महान वलिष्ट शूरवीर ने इन उपरोक्त गौओंको पराजय करके उक्त मार्गको निर्भय कर दिया तबसे यादगारीके वास्ते यहां पर देवता स्थापन करे गये हैं इसी प्रांतमें एक बड़ जानवरभी होता है जिसके शृङ्ग २-३ हाथ लम्बे करीव ४-५ इंच मोटे इन सींगों को तथा पत्थर व श्रीफल भूटानी लोग अपने देवता पर चढ़ाते हैं (यहां पर व्याघ्रादिका भी भय रहता है) आगे कुछ दूरपर श्याम वर्णके पर्वत नजर आये पूछने से मालूम हुआ कि जब इस मार्ग से भगवान पधारने लगे तब उनको अवलोकन कर पर्वतीय कुछ पण्डा लोग प्रीतीसे उनके पीछे दौड़े भगवानने ऐसा देखा ये लोग अपने पासमें न आ सकें, ऐसा विचार कर भगवानने आग लगा दी अग्नि लगने पर पण्डा लोग वापिस लौट गये तभीसे ये पर्वत श्यामवर्ण अर्थात् काला होगया है यहां पर विशेष घास फूंस भी नहीं होता है यहांके निवासियोंको भगवानका यह वरदान है कि थोड़ा खाने पर भी तुम्हारीभूख निवृत होजायेगी,

इत्यादि उपरोक्त लीलाओंको अवलोकन करते हुये हरी भरी जड़ी बूटियोंकी गन्धको लेते हुये श्यांकरामें आकर प्राप्त हुये, इस पड़ाव पर नदीका जल तथा चौरस मैदान है यहां पर २-३ घरकी वस्ती भी है चीन वहादुर सर्कारकी तरफसे यहां पर रेख देखकी चौकी भी रक्खी हुई है आवागमन मुसाफिरोंकी पूछ ताछः यहीं होती है निशामुखमें भिक्षासे निवृत हो शङ्कर भगवान की पुष्पाञ्जली पाठ कर शर्वरीमें शयन किया प्रातः नित्य क्रियासे निवृत हो चाय सत्तू सूकड़ी आदिको ग्रहण कर शंकर भगवानकी जय ध्वनी करते हुये आगेको प्रयाण किया इस उक्त पड़ावमें नदी किनारे पर प्रायः जङ्गली वथवा वहुतायत से होता है और चंवरी गाय भी वहुत मिलती है।

निम्न लिखित महात्मा गण जो कि कैलास यात्रामें मण्डली के साथमें उपस्थित रहे।

(१) श्रीमान् पूज्यपाद् श्री १०८ स्वामीजी महाराज निर्वाण-पीठाधिपती मण्डलेश्वर।

(२) वासुकी ब्रह्मचारीजी नैपालवाले फलाहारी।

(३) श्रीमान् स्वामी रामचैतन्यपुरीजी कुठारी काशी।

(४) „ स्वामी दि० नारायण भारतीजी उप कुठारी महानिर्वाणी अखाड़ा।

(५) „ स्वामी महानन्दजी काशी।

(६) „ स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी विरक्त।

(७) „ (स्वामी तीर्थगिरिजी स्वर्गीय कैलास गत)

(८) श्रीमान् स्वामी कृष्णानन्दजी पर्वतीय ।
(९) ,, स्वामी रतनानन्दजी काशी ।
(१०) ,, स्वामी स्वरूपानन्द (आत्मानन्दजी) ।
(११) ,, स्वामी गिरीशानन्दजी नैपाली ।
(१२) ,, स्वामी विश्वनाथपुरीजी नि० अखाड़ा
(१३) ,, स्वामी सुखदेवगिरीजी पर्वतीय ।
(१४) ,, धर्मदत्त शर्मा इन्द्रप्रस्थीय ।
(१५) ,, ब्रह्मचारी शिवचैतन्यजी प्राक्प्रान्तीय ।
(१६) ,, सेवक रामप्रसादजी कालीपुर (कलकत्ता) ।
(१७) ,, डूंगरसिंहजी ।
(१८) ,, परशुरामजी पर्वतीय ।

५ वैरागी साधु । ५ कुली लोग । कुल २८ मूर्ती ।

ताकलाकोट से श्रीमान् दि० बाबा मुक्तीगिरीजी सम्मिलित हुये आपके साथ दो मूर्ती और थीं ।

ॐ—येन रुद्रेण जगदूर्ध्वे धारितं पृथ्वी द्विधा त्रिधा धर्त्ता धारितानागा येन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय वै नमोनमः ॥ ८ ॥

[मु० ६ पारखी श्रा कृ० १२ शुक्र]

मार्ग कुछ दूर तक उतराई चढ़ाईका रहा ६-७ मील तक चौरस मैदान देखनेमें अति रमणीय छोटे२ कङ्करोंसे पूरित मार्ग निर्जल था करीब १०-१२ मील तक बिलकुल जलका नाम निशान न था कुली लोगोंके कथनानुसार पहिले पड़ावसे ही कुछ महात्माओंने अपने २ कमण्डल जलसे भर लियेथे जिससे काम चला । पश्चात निशामुख में करीब ५ ६ बजे के मुकाम किया आज चलना

बहुत विशेष पड़ा अतः महात्मा लोग सब थक गये थे, व मार्गमें जलकी भी विशेष तंगी रही, इस पड़ावपर कुछ भोटियोंका भी पड़ाव रहा, ये लोग ऊनके व्यौपारी थे हिन्दी भाषासे बिलकुल अनभिज्ञ रहे, तथापि इन्होंने धीरे २ निज भाषामें बड़े प्रेमसे वार्तालाप करते हुए दुग्धादिसे सेवा करी, सायंकालमें चाय तथा भोजन बना भिक्षासे निवृत्त हो, शंकर भगवानकी पुष्पाञ्जली कर, सर्वरीमें शयन किया, प्रातः नित्य क्रियासे निवृत्त हो, चाय, सत्तूको ग्रहण कर जय ध्वनी करते हुये, आगेके पड़ावको गमन किया, पूर्वोक्त पड़ावमें जलकी बहुत तंगी है, जरा २ स्रोतसे पानी निकलता है, गड्ढा खोदकर पानीको इकट्ठा कर रक्खा है, बस इसीसे काम चलाना पड़ता है।

ॐ एकं ब्रह्मैवा द्वितीयं समस्तं सत्यं सत्यं नेह नानास्ति किंचित्।
एको रुद्रोन द्वितीयोऽवतस्थे तस्मादेकं त्वां प्रपद्ये महेशम्॥ ६॥

[मु० १० थूलीमठ, आ० शु० १ शनी०]

आगे मार्ग उतराई चढ़ाईका विशेष रहा, खुश्क नदियां भी बहुत पड़ी, ईश चिन्तन करते हुये, ६-७ मील तक गमन कर, थूलीमठकी सन्निधीमें शतलुज नदीके तटपर २-३ बजेके करीब पड़ाव किया, प्रथम स्वस्थ चित्त हो स्नान क्रियासे निवृत्त हो, शीघ्र ही भोजनकी तैयारी करी, इस पड़ावमें लकड़ी तथा जलका अच्छा सुभीता रहा, अतः बड़े प्रेमके साथमें भिक्षा व विश्रामकर निशामुखमें ही थूली मठको प्रयाण किया, यह उपरोक्त सतलज नदी, मानसरोवरसे निकलती हुई, थूलीमठ आदि प्रान्तमें होकर पञ्जाब

में निकल गई है, उक्त पड़ावसे थूलीमठ करीब १॥ मील रहा, मार्ग कुछ दूरतक खुश्क नदीका व कुछ थोड़ीसी साधारण चढ़ाई पड़ती है, पश्चात् मठ प्रारम्भ हो जाता है, थूलीमठ यह मठ प्रसिद्ध समृद्धि शाली पुरातन तथा विशाल है, चीन भूटानके वासिन्दे व लाम्बा गुरु यहांपर विशेष रहते हैं, वदरी नाथजीके आस पासके लोग यहां पर ऊनका व्यापार करने आया करते हैं, वकरीकी ऊन प्राय: इधर विशेष होती है, ये लोग कदमें लम्बे चौड़े तथा पैर छोटा रखते हैं, आहार इनका चाय, सत्तू मांसादिका विशेष होता है, उपरोक्त मठ बहुत रमणीय प्राचीन ढंगके तौरपर इर्द गिर्द पर कोटा बन्द, पासमें सरस्वती गंगा अति रमणीय निर्मल जल सहित हर हर करती हुई बहती है, मठके अन्तर्गत वड़ी वड़ी ८-१० हाथ लम्बी ४-५ हाथ चौड़ी विशाल अष्ट धातुकी आदि वद्रीनारायणकी अच्छी सुन्दर प्रतिमाके दर्शन हैं। इसकी परिक्रमाकेमें भी अच्छि२ विशाल अष्टधातु पाषाण मृतिकादि, ब्रह्मा; शंकर गणेश व बौद्ध सम्प्रदायोंकी चित्र विचित्र अद्भुत बनी हुई है। इन देवताओंकी प्रतिमाके सामने, चांदीके वड़े २ कटोरे जल पूरित व घृतका अखण्ड दीपक, भोगके वास्ते चाय आदि रक्खी जाती है, पश्चात ये लोग भी भगवानके सामने नृत्य गीतादि भी अपनी भाषामें वडे प्रेमसे करते हैं। पुराने विशाल विचित्र वाजे भी इन लोगोंके पास अच्छे २ रहते हैं, इन लोगों द्वारा मालूम हुआ कि प्रथम आदि वद्री नारायण भगवानकी मूर्ती व मंदिर यहीं पर था, पश्चात् पूज्यपाद श्री० शङ्कराचार्य भगवानने स्वयं नारद कुण्डमेंसे प्रतिमा निकालकर वर्तमानीय

वद्रीनाथमें पुनः मूर्ती स्थापन करी, पहिले आदि वद्रीनाथ भगवान यहीं पर वास करते थे, जब शङ्कराचार्य महाराजने यहां वद्रीनाथ में प्रतिमा स्थापन करी, तब भगवान उक्त लोगोंका दुराचार देख-कर, थूलीमठसे एक झरोखे द्वारा भागकर यहांपर वद्रीनाथमें आ गये। वे लोग अब भी भगवानके भागनेका झरोखा स्थान यात्रियों को दिखाया करते हैं, लेकिन यहांकी मूर्तियां अति दर्शनीय व ऊंची व रमणीय अष्टधातुकी ऐसी हैं, कि ऐसी मूर्तियां व स्थान भारत भूमीमें कहींपर देखनेमें नहीं आई, यहांपर लम्बा गुरु पुजारी होते हैं। ये लोग भक्त, देवमें निष्ठा, व दीर्घ जीवी होते हैं। कोई २ तो अहर्निश पूजा ध्यानादिमें तत्पर रहकर माला घुमाते रहते हैं, मंदिरके इर्द गिर्द भागमे लकड़ीका एक गोल ढोलसा बनाकर निज भाषामे ईश्वरीय नाम लिखकर उक्त ढोलके अन्दर डाल देते हैं, मंदिरमें आते समय व जाते समय प्रति व्यक्ति इसको घुमा देते हैं, जितनी वार यह ढोल चक्कर काटता हुवा घूम जायगा, उतनीही वार ईश्वरके नामकी माला फिर जायगी।

[ॐ माने याने पदमें हूं]

महादेव पार्वती इत्यादि मंत्रकी माला रटते रहते हैं। मंदिरकी परिक्रमाके अन्तर्गत इन्हीं लोगोंकी निज भाषामें हस्त लिखित पुस्तकें बहुत पुरातनकी रक्खी हुई हैं इन पुस्तकों तथा मंदिरमें विशाल मूर्तीयोंको अवलोकन कर बड़ा ही चित्त प्रसन्न होता है। भोगस्थान कुठारस्थान, शयनागार, स्नानागार आदि सब अलग २ स्थान बने हुए हैं, प्रधान मठाधिकारी महन्तजीका भी मंदिरसे कुछ फासलेपर

अलगही रमणीय बना हुआ है, ये यहांके राजा साहिब कहलाये जाते हैं, आप अति सुशील तथा पुण्यात्मा प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं, लासा राजधानीसे पास होकर मठाधीशकी पदवी मिलती है। सर्व मण्डली ने बड़े प्रेमपूर्वक मठके अन्तग.त देवी देवताओंके अलौकिक दर्शनकर पश्चात् भोगस्थानमें आकर यहां भी देवदर्शनकर लामा पुजारीको बुलवाकर मण्डलीकी तरफसे भोगनिमित्त ११)रु० दिये गये, इन्होंने बड़े प्रेमसे स्वीकार कर आगामी द्वितीय दिन भगवानका चाय, सत्तूका भोग लगानेका विचारकर हम सर्व मण्डलीको भी निमन्त्रण दिया। कि आपलोग सब भोग समय पधारकर दर्शनका लाभ उठावें दूसरे दिन बड़े प्रेमसे उपरोक्त लाम्बा गुरुओंने भगवानको चाय, सत्तूका भोग लगाकर प्रीतिसे स्थित हो भगवानके अभिमुख पाठ किया यद्यपि इन लोगोंका पाठ कुछ हम लोगोंकी समझमें नहीं आता था, तथापि इनका कार्यक्रम देखकर चित्तमें बड़ा आनन्द होता था, प्रकृतिने इनलोगोंकी रचना अद्भुत ही रची है, शीत प्रधान देश होनेसे ये लोग सर्वदा स्नानादि क्रियासे बिलकुल वंचित रहते हैं और, वायु शुद्धि को ही प्रधान समझते हैं, पाठ करते समय १-२ घूंट चाय ३-३ मिनटमें पी पी कर पाठ क्रिया कर्म किया करते हैं, पाठ समाप्तिपर नाद ध्वनीकर, पुनः चाय सत्तू ग्रहणकर पाठारम्भ कर देते हैं, सर्व महात्मा मण्डलीने निखिल देवताओंके दर्शनकर मांगलिक पाठ श्रवणकर, मंदिरमें दक्षिणा भेटादि चढ़ाते हुये स्वस्थानमें आकर, प्रातःकालमें ही चाय सत्तूको ग्रहणकर आगे के पड़ावका विचार किया। यहांके महन्त मठाधिकारीजीने मण्ड-

लीकी सेवा शुश्रुषा करनेके विचारसे ठहरानेका मनसुवा किया था, लेकिन स्थान अपवित्र गन्दगीको देखकर किसीका रहनेको विचार नहीं हुआ। उसी समय गमनकी तैयारीकर यहांसे २ घोड़े और ३ कुली ही रक्खे गये. विशेष आवश्यकता न समझकर ३ घोड़े और २ कुली वापस किये गये। मठाधिकारी महन्तजीने प्रसन्न होकर मार्ग सहायतार्थ ३ स्थलोंकी चिट्ठीयां प्रधान व्यक्तियोंके नामसे दी थी। इन चिट्ठीयोंके होनेसे दापा, ज्ञानिमा व ताक्लाकोट आदिमें अच्छी सुगमता रही, । पुनः गणपति व कैलास देवकी जयध्वनि करते हुये, अगले पड़ावको गमन किया।

ॐ चन्द्र शेखर चन्द्र शेखर चन्द्र शेखर पाहि माम्।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमाम् ॥ १० ॥

[मु० ११ डागला० श्रा० शुक्ल २ रवि०]

मार्ग एकदम २॥ मीलकी चढ़ाईका है, पश्चात् ६-७ मील तक मैदान ही मैदान पड़ता है, मु० डागलामें गंगा नदी तट पर ही मुकाम किया, आज वर्षाका विशेष जोर रहा, वर्षा व आंधीकी वजह से निशामुखमें रोटी चाय आदि कुछ नहीं बनाया गया, केवल मूकड़ी सत्तू आदिको ग्रहणकर निर्वाह किया गया, ईश्वराराधना पुष्पाञ्जली करते हुये सर्वरीमें शयनकर प्रातः नित्य क्रियासे निवृत्त हो शीघ्र ही भिक्षाकर शंकर भगवानकी जयध्वनि करते हुये उपरोक्त गंगाको पारकर आगेके पड़ावको गमन किया।

ॐ जय कोट्यर्क संकाश जयानन्त गुणाश्रय।
जय भद्र विरुपाक्ष जयाचिन्त्य निरञ्जन ॥ ११ ॥

[मु० १२ मध्य नदीके तटपर वर्षाकी अधिकतासे यहींपर मुकाम किया गया श्रा० शु० ३ सोम०]

पहाड़की खुष्क नदियां, विशेष पानी पड़नेसे थोड़ी देरमें ही चड़े वेगसे वह निकलती हैं, पश्चात् थोड़ी देरमें ही पानी थोड़ा होनेसे सूकने लग जाती है, इस कारण यात्रियोंको चाहिये कि ऐसी चढ़ती हुई नदीमें कभी गमन नहीं करें, नहीं तो इसमें प्राण का धोखा हो जाता है। नदी कमती होनेसे फिर पार जानेसे ठीक होता है, इत्यादि। डागलासे १॥ मील सीधी चढ़ाई पड़ता है, पुनः कुछ दूर तक मैदान व उतराई आ जाती है, कुछ दूरी तक चले पश्चात् मध्यमें वर्षाका आगमन हो गया, वर्फादिके वड़े २ ओले पत्थर भी पड़ने लगे, कुछ फासले पर एक पहाड़की खुष्क नदी मिली, यह छोटीसी खुष्क निर्जल नदी देखते ही देखते महान वेगवाली हो गई, चढ़ती हुई नदीमें ही सबने चलना शुरू किया कि जल्दी पार उतर जांयेंगे, निदान २-३ मूर्ती शीघ्रही पार हो गईं, कुछ मूर्ती बीच टापू में ही खड़ी पार रह गईं। कुली लोगोंने घोड़े के सहित नदी पार उतरनेका बिचार किया, कुछ दूर तक चले, पुनः घोड़ा व कुली दल दलमें धसने लगे, नदीका बहुत वेग होनेसे, खच्चरें सामानसे लदी हुई थी अतः दल दलसे नहीं निकल, सकीं पानी क्षण क्षणमें वृद्धिको प्राप्त होने लगा, सामान भी वहनेकी हालतमें हो गया। ऐसी भयानक हालतको अवलोकन कर, दोनों कुलियोंने व कुछ महात्माओंने शीतकी परवाह न करते हुए साहसकर शनैः २ घोड़ों परसे सब सामानको

उतारकर घोड़ोंकी जान बचाई, यह खच्चर भी शरीरसे खाली हो जानेपर शनः २ दल दलसे निकलकर पार आ गये। वर्षा व नदी के कमती हो जाने पर बचे हुये महात्मा भी शनैः २ नदीके पार हो गये। बहुतसा सामान भी कीचड़से खराब हो गया था, वर्षा के कारण आगेके गमनका मार्ग भी फिसलन का हो गया था, वायु देवका भी जोर ज्यादा था, अतः सर्व सम्मतिसे यहीं पर पड़ावका निश्चय हुआ, थोड़ी देरमें वर्षाके कम होनेसे यह नदी भी कमती हो गई। अतः इसी नदीके तटोपरि छोलदारी तमोटी लगा कर कुछ विश्रामकर निशासुखमें बड़े प्रेमसे शंकर भगवानकी पुष्पाञ्जली करी गई, सत्तू व सूकड़ीको ग्रहणकर शर्वरीमें शयन कर प्रातः नित्य नैमित्तक क्रियासे निवृत हो सत्तू व सूकड़ी को ग्रहण किया, आज नाग पञ्चमी रही अतः नागपञ्चमीका हर्षोत्सव मनाकर शंकर भगवानकी जय बोलते हुये आगे पाड़ावको गमन किया।

[संक्षेपसे निम्नलिखित भाषा जो भोट आदि
कैलास प्रांतमें बोली जाती हैं]

संख्या

१ को—चिक	८०—ग्यज्यूं	चांदी-मुल
२ को—नी	६०—गुप च्यु	१) रुपैया-गोरमो
३ को—सुम	१००—ग्याथाम्वा	॥)-टंका
४ को—जी	१०००—त्वंग	।)-गोंज्यो
५ को—गां	१०००००—लाख-ठी	=)-आना

६ को—टू
७ को—दुन
८ ग्यद्
९ गु
१० च्यू
२० नीसू
३० सूंज्यू
४० ज्युपच्यु
५० ङपच्यु
६० ङुकूच्यू
७० दुनङ्यू
आग—मै
दिन—निमा
रात—छ्यान
तारा—ङकार
वस्त्र—गोलाक
हाथ—लक्या
पांव—कांम्वा
शिर—गो
आंख—मिक
नाक—ना
दांत—स

१००००००० —करोड़-भुम
शंकर [महादेव] माने
कागजकी-शिगु
कलमका-निगु
श्याही-नकुङ्
वर्तन-नोद
कांसी-ली
तांवा ज्यां
पीतल-रगन
लोहा-च्यक
सोना-सर

≡)-ज्जो
।≡)-टांका
(कोला) कपड़ेको-रा
जरी कपड़ा-गोसरा
तम्बू-गुर
रास्ता-ग्रेरलम्
पानी-ती-छू
लकड़ी-सींग
सत्तू-चम्फा
गुड़-गुरम भेली
चाय-ज्या
कस्तूरी-लरछी
गोला-भेरा
तैल-मरकू
मिश्री-करा
शक्कर-श्रीमा करा
छुवारा-खसुर
वादाम-ग्यखरतरका
खमजाम-नमस्कार
खेरां कानाडोम-कहां जाते हो
ङराग-मैं
कैलाश-ङारेयो

बाल—टा [खरांग लो छों छी छे.द—तुम्हारे पास क्या सौदा है

डाढ़ी मूंछ—खप्पू डा-चावल

पेट—डोटपा आटा-वकपी

[पुराणी वर्फ-गां खां वांक-कैलासी] गेहूं डो

घोड़ा—ता घी-मार

वर्षा—छरपा दाल-टलमा

गाय—भलांग लाल-मस

वैल—लौं काला-लगु

खच्चर—टे निमक-छा

वकरी—लुक मिर्चों-छोदमरू

चंवर गाय—यक दूध-होमा मठा—दरा

धूप—पो कर्पूर—क्पूर केशर—गुरगुम

गुगुल—गुलगुल तिल—तिल जौ—स्वा

माचिस—चकटा दीपक—क्यू वार देवता—ल्हा

देवी—डोंगमा ल्हा खरांगना दूगे—तुम्हारे पास है।

[ओ माने याने—पदमें हूं महादेव पार्वती]

ॐ—जय नाथ कृपा सिन्धो जय भक्तार्त भंजन।
जय दुस्तर संसार सागरो त्तारण प्रभो ॥ १२ ॥

[मुं० १३ दापामण्डी श्रा० शु० ४ भौमवार]

दापा जानेमें १ मील चढ़ाई तथा उतराई पड़ती है, पुनः ६-७ मील कुछ सीधा मैदानका मार्ग चलकर फिर दापामण्डीके समीपमें चल कर एक मीलकी सीधी उतराई पड़ती है। सर्व मण्डलीने प्रातः

८ बजेसे गमन करते हुये ३ बजे पड़ावमें आकर प्राप्त हुए, यह दापामण्डीके नामसे प्रसिद्ध है। आसपासके लोग यहाँ व्यापारको आया करते हैं। ऊन, बकरी, सुहागा, चंवर, ऊनीवस्त्र, स्वदेशी-वस्त्र नमक आदिकी बिक्री अच्छी तरहसे होती है, बस्ती पहाड़के निम्न भागमें नदीके तटपर कच्चे मकानात आदिकी हैं, मध्य ऊर्ध्व भागमें दापानारायणके देवदर्शन अद्भूत व विशाल हैं। मूर्ती अष्टधातुकी करीब १०—१२ फूट ऊंची मन्मोहित, अतिही दर्शनीय है, प्रधान देवी व दापानारायणके दर्शन, ईर्द गिर्द छोटे २ देवी देवताओंके छोटे से छोटे बड़े से बड़े दर्शन हैं, यहां भी घृतका अखण्ड दीपक व जलपूरित चांदीके कटोरे रक्खे रहते हैं। पुजारी लाम्बा गुरु होते हैं, मन्दिरके अधोभागमें कुछ व्यौपारियोंकी दूकाने हैं, कपड़ा आदि यहां पर बहुतायतसे मिलता है। चमड़ेका सामान ऊन तथा नमक फिटकरी दूर दूर देशान्तरोंमें यहांसे बिकनेको जाया करती है। निशामुखमें ३ बजेके करीब सर्व मण्डली यहांके पड़ावमें आकर प्राप्त हुई। अधोभागमें गंगा तट पर मुकाम कर व भिक्षाकी तैय्यारी कर शर्वरीमें ६—७ बजे बड़े प्रेमसे भिक्षाकी पंक्ति हुई। पश्चात् हरिचिंतन करते हुये शर्वरीमें शयन कर पुनः प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्तमें उठ कर प्रातः स्मरण कर, नित्य नैमित्तिक कार्यसे निवृत्त हो, खादय पदार्थ सब प्रायः यहीं पर खतम हो गया था, अतः आटा, सत्तू, चावल, गुड़ आदिका बन्दोवस्त यहींसे किया गया विशेष घोड़ोंकी आवश्यकता न समझ कर उपरोक्त २ घोड़े भी यहांसे वापिस किये गये, कारण कि ऊपर कैलास मार्गमें घोड़े

नहीं जा सकते हैं। चोर आदिके भयसे स्वयं घोड़ेवाले नहीं जाते हैं, अतः यहांसे चंवर गायका प्रवन्ध किया गया। चंवर का जलदी इन्तिजाम न होनेकी वजेसे भौम, बुध, गुरु, शु० आदि ३—४ दिन यहींका मुकाम हुवा। ४ चंवर तथा १ भोटिया व २ कुली आदिका ठीक तौर पर ज्ञानमण्डी तकका वन्दोवस्त कर प्रातः श्री० शंकर भगवानकी जयध्वनी करते हुये अगले पड़ावको गमन किया। दारामण्डीमें लकड़ीकी सुगमतासे रोटी, शाक, भात, कढी आदिकी रसोई अच्छी बनती रही।

नोट—पाठकगण इस बात पर शंका न करें कि जगह २ पर रोटी, दाल, शाक, चाय, सत्तूका पुनः पुनः नाम लिख रक्खा है, इसका कारण यह है, कि प्रायः सुना भी गया है, वह देखा भी है। कैलास जानेवाले यात्रीगण मार्गमें अच्छी तरहसे रोटी शाकादि नहीं बना सकते, केवल चाय सत्तूको ग्रहण कर निर्वाह करते हुये कैलास यात्रा कर लिया करते हैं, बहुत कष्टके मारे रोटी नहीं बना पाते हैं। वृक्षादिके नहीं होनेसे विशेष लकड़ी भी नहीं मिलती है, कुछ मिलती भी है, तो गीली कांटेदार व छोटी मिलती है, पूज्यपाद श्री स्वामीजीके पुण्यप्रतापसे तो मार्गमें बरावर कोई दिन छोड़ कर नित्य प्रति समयानुसार यात्रा पर्यंत एक टाईम रोटी शाकादिकी रसोई बनती चली गई। यद्यपि समुदाय विशेष भी रहा, तब भी खान पानादिकी तरफसे किसी व्यक्तिको किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं हुई। इसी उपरोक्त कारणसे जगह २ पर रोटी शाकादिका शब्द दिया गया, अर्थात् परिश्रम करनेसे इधर भी रोटी शाकादि अच्छी

तरह पर वन सकती है। प्रथम कैलास यात्राके पूर्व कतिपय मनुष्यों द्वारा ऐसा सुननेमें आया था, कि कैलासकी तरफ मिष्टान्न नहीं खाया जाता, और रोटी शाकादि भी नहीं बनता है, सो सब मिथ्या है, हां इतना जरूर है कि कभी २ मार्गमें आंधी, लू, वर्षा, वर्फ अधिक पड़ जानेसे व भोजन स्थानका विशेष प्रबन्ध न होनेके कारण रोटी नहीं वन सकती है, अंतः जीव रक्षणार्थ अपने पास छोलदारी तमोटी तम्बू यात्री अवश्य रक्खें।

ॐ—प्रसीद मे महादेव ससारार्तस्य खिद्यतः।
सर्व पाप क्षयं कृत्वा रक्ष मां परमेश्वरः ॥ १३ ॥

[मु० १७ ग्यू गल नदी श्रा० शु० ८ शनिवार]

मार्ग कुछ दूर तक उतराई तथा चढाईका पड़ता है। पश्चात् ५—६ मील तक मैदान गमन करतेही १ फर्लांग पर १ नदी मिलती हैं। इसमें गोड़े २ जल छोटीसी नदी भी है परन्तु वड़े वेगसे हर हर करती हुई आस पासके पहाड़ोंसे निकल कर सतलुजमें जा मिलती है। आज भी मार्गमें वर्षाकी वजहसे कीचड़ अधिक मीली कुछ दूर पर वेचारा एक चंवर जोकि सामानसे लदा हुआ था, कीचड़के कारण पर्वतके ऊंचे स्थलसे उतरते समय अकस्मात् नीचेको गिर गया। जगह वहुत ढालकी थी। अतः वन्दरकी तरह २-३ कलाऐं खाता हुवा नीचे गिर पड़ा। ईश्वर अन्तर्यामीकी अपार कृपासे विशेष चोट न लग कर शीघ्र खड़ा हो गया। उक्त भोटीयाने सब सामान उसका खोल कर, पुनः युक्तिसे ठीक बांध कसकर ईश चिन्तन करते हुवे आगेको गमन किया। ऐसे भयंकर मार्गमें ईश्वर

कृपासे ही प्राणियोंकी प्राण रक्षा होती है। कोई खेंगुर नदी भी इस को बोलते हैं। इस नदीसे करीब ४ मीलके फासले पर कारचा धूरा भारी पहाड़ है। दाहिने नील रंगसा पहाड़ चमकता हुवा नजर आता है, यही जहरमोरा असल है जो बदरीनारायण लैनमें सेर विक्रो होता है। ५ मील उतराईसे लदाकखरक है रहनेको मैदान है। बस अब यहीं तक आपको चढ़ाई व उतराईका मार्ग मिला है, अब इससे आगे मैदान व भयानक नदीयोंसे ईश्वर पार करें। नदीयोंका फैलाव चौड़ा गहरी करीब २ गोड़ा तक व कमर तक शीतल जल बर्फके तुल्य शरीर एकदम जकड़ सा जाता है, किन्तु ईश्वर अभय यही दिखाता है कि छोटे २ भोटीए भेड़ बकरीयां इन शीतल जलपूरित नदीयोंको पार करती हैं। हे ईश्वर आपकी माया अपरम्पार है सर्व मण्डलीने उपरोक्त ग्यूंगल नदी पर पड़ाव कर निशामुखमें भिक्षाकी तैय्यारी कर पुनः भिक्षासे निवृत्त हो बड़े प्रेमसे शंकर भगवानकी पुष्पाञ्जली करते हुये शर्वरीमें शयन कर प्रातः नित्यक्रियासे निवृत हो चाय सत्तूको ग्रहण कर जयध्वनी करते हुये आगेके पड़ावको प्रयाण किया।

नोट—पड़ावके अन्तमें हमने जगह २ नित्य नैमित्तिक व पुष्पांजली आदिका शब्द दे रक्खा है इसका यही कारण कि जो यात्री इसी प्रकार अपनी धार्मिक क्रिया करते हुये कैलास यात्रा करेंगे। उनकी निर्विघ्नता पूर्वक यात्रा समाप्त हो जायगी, इसमें कोई संदेह नहीं।

ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः।
नमस्ते रुद्र रूपिण्य शांकर्यै ते नमो नमः॥ १४॥

[मु० १८ सवन श्रा० शु० ९ रविवार]

यहांसे प्रथम ग्यूंगल नदीको पार किया, यद्यपि इसमें गोड़े २ तक जल रहा परन्तु वेग विशेष होनेसे बड़ी मुश्किलसे पार हो सके ईश कृपासे सर्वमण्डली सुगमतासे पार होगई लेकिन एक महात्मा स्वतन्त्र स्वेच्छाहारी गमन करनेसे वेगमें आकर गङ्गाको नमन करते हुए कई गोता खा गये। प्रातः काल शीतका मौका था शरीर थोड़ी देर शिथिल सा हो गया पुनः अन्तर्यामो की कृपासे सचेत होकर आगेको गमन किया, लद्दाकसे ३ मील पर सूम नदी है फिर एक मील पर दूसरी नदी है, इन दोनोंको पार करके ४ मील पर शिवचिलिंग तिजारतकी भारी मण्डी है। मण्डीके समयमें प्रायःछोटी मोटी वस्तु सव मिल जाती है ऊनका व्यापार विशेष होता है यहां से आगे ज्ञानिमके सिवाय मानसरोवर तक गुड़, सत्तू, चायके सिवाय और कुछ नहीं मिलेगा ज्ञानिममें प्रायः सव वस्तु मिलेगी। उससे आगे ताकलाकोटके सिवाय और कहीं नहीं मिल सकती सिर्फ मांसाहारियोंको वकरीका मांस मिलेगा। सुवहसे १२ बजे तक रोटी व चाय वनानेका मौका अच्छा है पश्चात् हवा [आंधी] व वर्फ वर्षासे अग्नि नहीं जलती है आजके मार्गमें १०-१५ जगह साधारण उतराइ चढ़ाई मैदान विशेष रहा मध्यमें जल वहुत दूर तक नहीं मिलता है अतः जलके समीप में पड़ाव किया ८ बजे सबेरेके चले हुये सन्ध्या ४ बजमें पड़ाव किया, इस पड़ाव में जल की संकोचता रही, वहुत थकावट हो जानेसे शिवचिलिंगका मुकाम न हो सका वीचमें ही सवन पर मुकाम किया गया वर्षाका कुछजल

गड्ढे में भरा हुआ था बस इसी जलसे भोजनादिकी यावत् क्रिया की गई। भिक्षासे निवृत हो शङ्कर भगवानकी पुष्पाञ्जली कर शर्वरी में शयन किया:—

नोट—बहुत गीली लकड़ी होनेकी वजहसे ९-१० बजे रात्रीको भिक्षा हुई पंक्तिके मध्यमें इन्द्र देवताभी पधार गये अतः वर्षाके पड़ते २ पंक्ति समाप्त हुई, प्रातः ईश चिंतन करते हुये ईश-प्रकृति को धन्यवाद देकर शङ्कर भगवानकी जय ध्वनी करते हुये आगेके पड़ावको गमन किया। इस उपरोक्त पड़ावको गमन करने पर उक्त नदीके तट पर ४ भोटिये लाम्बा जो कि गानविद्यामें कुशल थे मण्डलाधिपतीजीके अभिमुख इन लोगोंने बड़े प्रेमसे डमरू द्वारा मधुर वाणीसे निज भाषामें सुष्ठू प्रकार से ईश सम्बन्धी भजन सुनाये, जिनको सुनकर चित्तमें अत्यानन्द प्राप्त हुआ पश्चात् पारितोषिक द्वारा उक्त गन्धर्वोंको सन्तुष्ट कर आगेको गमन किया था।

ॐ—नमःते विश्वरूपिण्यै ब्रह्ममूर्तै नमो नमः।
सर्वदेव स्वरूपिण्यै नमो भेषज मूर्तये ॥ १५ ॥

[मु० १९ शिवचिलिंगसे करीब २-३ मील पीछे श्रा० शु० १० सोम]

मार्ग उतराई चढ़ाईका साधारण है नदीयां भी एक दो छोटी छोटी मिलती हैं, हम लोगोंके साथमें भोटिया आगामी मार्गसे अनभिज्ञ था अतः मार्गमें बड़ी धींगा धींगी रही।

ईश्वर कृपासे एक घुड़सवार अकस्मात् शिवचिलिंगको जारहा था इसके द्वारा पूछनेसे रास्तेका ठीक पता लगा, अतः यात्रीको

चाहिये कि अपने साथमें ऐसा भोटिया लेवे जो मार्गका ठीक ज्ञाता हो, इत्यादि ईश्वरीय अद्भुत प्रकृतिको अवलोकन करते हुये नाना विध पुष्पोंकी सुगन्ध लेते हुये शिवचिलमसे २ मीलके फासले पर पीछे नदीके तट पर मुकाम किया यहां पर जगहका अच्छा आराम रहा जङ्गली वथुआ भी यहां पर वहुत होता है अपराह्नमें भोजनकी तैयारी कर शङ्कर भगवानका भोग लगाकर निशामुखमें पंक्ति होकर पुनः पुष्पांजली करते हुये शर्वरीमें शयन किया इधरकी मार्गमें जंगली घोड़े व जङ्गली चंवर वहुत दूर २ घूमते हुये मिलते हैं] पहाड़के धुरे पर चढ़ाई खतम होने पर या पड़ावके निकट निकट पत्थरोंको एकत्रित कर मध्यमें झण्डियां टांग देते हैं रङ्ग विरङ्गे कपड़ोंके टुकड़े किसी वृक्षकी साखाओं पर व पत्थरों में बांध देते हैं इससे यात्रीको धीरज सन्तोष हो जाता है पश्चात् सर्व मण्डलीने प्रातः धार्मिक क्रिया से निवृत्त हो चाय सत्तूको ग्रहणकर ॐ नमः पार्वती पतये क उच्चारणा कर आगेके पड़ावको गमन किया।

ॐ—चन्द्रकलौज्ज्वल भालं कण्ठव्यालं जगन्त्रयो पालम्।
कृत नर मस्तक मालं कालं कालस्य कोमलं वन्दे॥ १६॥

[२०वां मु० मानिमनथंगा श्रा० शु० ११ भौमवार] (मानाथांगा)

मार्ग कुछ दूर तक साधारण उतराई चढ़ाई पश्चात् ४-५ मील तक मैदानही मैदान पड़ता है बीच २ में नदियां भी गोड़े २ तक की जलकी मिलती है शिव चिलिंगसे करीब ३-४ मील मानिमनथंगा है एक छोटीसी नदी यहांभी पार करनी होती है मानिमनथंगासे ६

मील गामोचन वस्ती है, यहां पर भी व्योपार होता है। सर्व मण्डली को पड़ाव पर पहुंचनेसे एकही फर्लाङ्ग वाकी रह गया था निदान मध्यमें गमन करते २ दैवयोगसे आज ऊपरसे १ मील तक वर्फ बड़े जोर शोरसे पड़ी सर्वमूर्ती को घवरा कर एकही जगह पर स्थिर होना पड़ा, कुछ देर बाद वर्फ के बन्द हो जाने पर वर्षाका आगमन हो गया वर्षाको कुछ शान्ती होने पर पुनः आगेको गमन किया गया पड़ाव पर ठण्डको अधिकतासे छोलदारियांभी बड़ी मुश्किलसे गाड़ी गई। कुछ देर विश्राम कर भिक्षाकी तैयारी करी, गीली लकड़ी होनेसे सिर्फ आज केवल रोटीही बनाई गई मिष्ठान्न आदिके साथ खाकर निर्वाह किया गया पश्चात् बड़े प्रेमसे महिम्नका पाठ कर सर्वरीमें शयन किया। प्रातःकाल प्रातःस्मरण कर नित्यक्रियासे निवृत हो चाय सत्तू को पाकरके शंकर भगवानकी जयध्वनी बोलकर आगेके पडावको गमन किया।

ॐ—मत्स्यं कूर्मं वराहं च वामनं च जनार्दनम्।
गोविन्दं पुंडरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम्॥ १७॥

[मु०२१ ज्ञानिममण्डी श्रा० शु० १२ बुधवार]

मानिमनथांगासे ज्ञानिम तक मार्ग सीधा पड़ता है बीचमें काण्टेदार वृक्षादि बहुतायतसे मिलते हैं, गामोचनसे गुरम्याती नदी जो कि जोहारके धरेसे आती है दिनके कई एक बार घटती बढ़ती रहती है जल बहुत ठण्डा कटितक रहती है वर्षाऽधिकतासे न्यूनाधिक भी होती रहती है गुरम्यातीसे ३ मील दरम्याती नदी यहभी

जोहारकी तरफसे वड़े वेगसे आवाज़ देती हुई आती है उपरोक्त नदीयां पार करके ज्ञानिमा भारी मंडी पड़ती है। वीचमें २ पड़ाव भी भोटियोंके मिलते हैं यहां पर ऊन तथा वकरियोंका व्यापार विशेष होता है आजका पड़ावभी ज्यादा रहा लेकिन मैदान होनेकी वजहसे कुछ मालूम नहीं पड़ा १५-२० मील चल कर निशासुखमें ज्ञानिममें आकर प्राप्त हुये कुछ विश्राम कर महिम्नके पाठके पश्चात सर्वरीमें ११ वजेके करीब भिक्षाकी पंक्ति हुई। सर्वरीमें शयन कर प्रातः नित्य क्रियासे निवृत हो, आगेके वास्ते खाद्य पदार्थ भी यहीं से लिया गया, दापासे चंवर वैलभी यहीं तक किये थे अतः आगेके मार्गके वास्ते चंवर भी यहींसे ताकलाकोट तकके किये गये। इस मुलुकमें चंवरी गाय तथा चंवर वैल दोनों होते हैं गाय दूध देती है। जिसका घृत अखण्ड दीपकोंमें विशेष तौरपर व खाद्य पदार्थोंके काममें आता है और नर (वैल) को सवारी तथा वोझे आदिके काममें लिया जाता है, जिसको तिब्वतमें यक और पश्चिमी भोट इलाकेमें (चंवरी व) चंवर संज्ञा करके वोलते हैं। ज्ञान-मण्डी-यह व्यापारिक मण्डी दर्शनीय है दूर देशान्तरोंसे हज़ारों आदमी व्यापारके वास्ते यहां आया जाया करते हैं २००-३०० छोलदारियां [तमोटी] इर्द गिर्द लगी रहतीहैं दो महिने श्रावण तथा भाद्रपद तक यहांपर भीड़ भाड़ विशेष रहती है यहांपर भोट (तिब्वत) राज्यकी ओरसे मैजिस्ट्रेटका हेडकार्टर है, और राज्य गवर्नमेण्टकीओरसे भी एक प्रेजिडेंट (एजन्ट) इन्साफ व व्यौपारियोंकी देख भाल करते हैं। यहां पर तिब्वती दूर २ की चीजें आ मिलती हैं

जैसे चंवर गाय, चंवर पूछ, घोड़े व सब किस्मके ओढ़ने बिछाने पहिरनेके ऊनी वस्त्र यहां तक बेशकीमती हैं २००) तकके कीमती छोटे बड़े सब किस्मके घोड़ेकी ज़ीन खांकर (घूंगरे) आदि ऊन तथा बकरी, सुहागा, नमक, चाय चंवरका घृत खाद्यसामान प्राय: दूर देशान्तरोंकी छोटी मोटी चीजे वस्त्रादि सब वस्तु प्रताल करने से मिल जाती है उपरोक्त वस्तुओंका व्यापार इस तरफकी बड़ी बड़ी मण्डीयोंमें प्राय: सब जगहों पर मिलता है रोगियोंकी चिकित्सा निमित्त एक सरकारी डिस्पेन्सरी भी खुली हुई है। मण्डी की सन्निधी में एक छोटी सी नदी व ऊपर टीलेके उच्चस्थल पर भूटानी देवके दर्शन हैं यहांसे कैलासको दो दिन का मार्ग है सुना जाता है कि इसी मार्गमें चोरोंका भय विशेष रहता है पश्चिमी तिब्बतमें भारतीय व्यापारियोंके लिये ज्ञानिमा बड़ी मण्डी है इसके उत्तरमें तीर्थापुरी और कैलासकी पर्वत माला; दक्षिणमें भोटका इलाका पूर्वमें मानसरोवर और मान्धाता पर्वत, पश्चिम में थूलिंगमठ और दापा तथा नेती हैं यह मण्डी ज्ञानिमाके बड़े चौड़े समतल मैदानमें स्थित हैं ज्ञानिमा प्लेटो (आधित्यका) १५००० फीट की ऊंचाई से प्रारम्भ होकर धीरे धीरे १४००० फीट ढलवानकी ओर सतलजके घाटेके किनारे किनारे पश्चिमकी ओर चला गया है इस अधित्यकामें पत्थर बिलकुल नहीं हैं यात्री को चलनेमें बड़ा सुभीता रहता है भूमीमेंसे स्थान स्थान पर पानी फूटता है इसी लिये रात्रीमें भूमी बड़ी ठण्डी होती है, हिमालयकी बर्फानी चोटियां भी निकट हैं यहां पर उपरोक्त डेढ़ दो महिने तक

मण्डी भरती है रामपुर,वशहरी, लद्दाखी, तुर्किस्तानी, यारकन्दी, चीनी, भोटिये व्यापारी अपना २ माल पशुओंपर लादकर लाते हैं। गधे, याक, झब्बु, खच्चर, भेड़, बकरी, घोड़े जैसे जिसकी हैसियत हो लद्दू पशु काममें लाया जाता है। दूर दूरके भिन्न२ भाषा भाषी विचित्र वस्त्र धारण किये हुये यहां पर दीख पड़ते हैं,सभी तिब्बती भाषा जानते हैं। इसमें बात चीत कर एक दूसरेके हाथ अपना सौदा बेंचते हैं, करीब साढ़े चार लाख रुपयेका व्यापार इस मंडीमें होता है, साढ़े चार लाख रुपया क्या है? कुछ भी नहीं, जितना कष्ट ये लोग उठाते हैं, उसके मुकाबले साढ़े चार लाख व्यापार क्या है, परन्तु बात यह है कि व्यापार हो नहीं सकता, जहां हानिके भय अधिक और लाभके साधन कम हों। एक तो विकट घाटोंसे गुजरना; दूसरे रास्तोंकी सर्दी, तीसरे मार्ग चलने का खराब उतराई चढ़ाई विशेष, चौथे नदियोंपर पुल नहिं पांचवें डाकुओंका भय, कोई कहां तक हानि सह सकता है, तिसपर भी धन्य है इन लोगोंको जो सब प्रकारसे दुःखं सहकर अपना पेट पालनके लिये इतना उद्योग करते हैं। ज्ञानिमाकेपश्चिम मैदानमें जहां घाटियां हैं, वहां जिकपा डाकुओंका बड़ा डर रहता है, इक्के दुक्के आदमी तो अवश्य ही लूटकर मार देते हैं व्यापारी लोग इसी कारण मिलकर चलते हैं और अपने पास हथियार रखते हैं ज्ञानीमा मण्डीमे पक्के मकान बनानेकी आज्ञा नहीं है, कच्ची ईंटें पानीके किनारेसे काट २ कर उनकी दीवारें खड़ी कर लेते हैं उन दीवारोंके ऊपर कपड़े टाट दरी आदि लगाकर मजबूत ओलतीनुमा

छतसी बना लेते हैं, यहां पर हवा भी बड़ी तेज चलती है। उससे बचनेके लिये अपनी गठरियोंकी दीवारें अन्दरसे बना सब तरहके छेदोंकी पूर्ति कर लेते हैं। जो व्यापारी लासासे आते हैं उनके तम्बू बड़े रंग विरंगे शानदार दृढ़ होते हैं। आजकल जोलाईके आखिर में दोपहरको यहां तम्बूके अन्दर बैठे हुये गर्मी मालूम होती थी। रातको ऐसी सर्दी पड़ती है कि बाहर कोहरा जम जाता है और भूमी सफेद सी हो जाती है। जरासी पर्वतों पर वर्फ गिरी, बस उसी समय बड़ी ठण्डी हवा चलने लग जाती है। सबेरे जब हम लोग स्नानादिको जाया करतेथे, तब पानीमें हाथ डालनेसे एकदम हाथ सुन्न हो जाया करता था। जहां मंडी लगती है वहां पासही पहाड़ीके ऊपर किसी प्राचीन किलेके खंडहर हैं। कहते हैं कि यहां किसी राजाका स्वतन्त्र राज्य था और ज्ञानिमाका मैदान जलसे भरा था, उस झीलके होनेसे दुर्ग बड़ा सुरक्षित समझा जाता था। इसी मैदानमें एक ऊंचा टीला है जिसके इर्द गिर्द ज्ञानिमा मंडी है। इस टीले पर बहुतसे पत्थर एक कुण्डमें इकट्ठे किये हुये हैं, जिन पर (ओम माने पद्में हूं) का मन्त्र खुदा है ये अक्षर देखनेमें बंगला लिपी जैसे मालूम होते थे। ज्ञानिमाका लामा गुरु प्रति दिनउस टीले पर चढ़ कर पवित्र कुण्डकी पूजा किया करता था, 'हुणिए' रङ्ग विरंगी झंडियां यहां चढ़ाते हैं और मनोभिलाषा पूर्णकी प्रार्थना करते हुये मिन्नत मांगने आते हैं इसी कुण्डमें पशुओंके सींग भी चढ़े थे जो किसी श्रद्धालुने चढ़ाये होंगे। एक बड़ा विचित्र जानवर होता है। इसके दो दो तीन

तीन हाथ लम्बे सींग होते हैं इन ही सींगोंको ये भोटिए लोग देवताको बड़े प्रेमसे चढ़ाते हैं। व्यापारी लोग यहां अपने २ डेरोंमें दुकानें लगाते हैं। कलकत्ता, वम्बई, कानपुरसे विलायती और देशी कपड़ा खरीद कर ले जाते हैं, सूखे फल, फूल चीनी वर्तन, लालटैनें, मूंगे, मोती मालाएं, घोड़ोंकी जीनें, खिलौने आदि सामान ले जाते है। तिब्बती लोगोंके सिक्केका नाम टंका है, इसका मूल्य छः आनेके वरावर होता है, कभी घट बढ़ भी जाता है। भोटीए लोग इन्हीं टंकोंको दाममें ले लेते है, और जब तिब्बत से चलने लगते हैं, तब यही टंके 'हुणिओं' को दे कर उनसे उनका माल, घोड़े, पश्मीनें, चुटके आदि खरीद लेते हैं। तिब्बतका व्यापार अधिकांश अदले बदले का है, टंके भारतमें तो चल नहीं सकते, पर अंग्रेजी सिक्का, रुपैया, दुअन्नी, चवन्नी, अठन्नी, तिब्बतमें खूब चलती है, इस कारण भोटिओंको सिक्कोंमें प्रायः कसर खानी पड़ती है तो भी वे किसी न किसी प्रकार कसर निकाल ही लेते हैं, अपने व्यापारको सुरक्षित रखने तथा अपना उधार वसूल करनेके लिये भोटिए व्यापारियोंको तिब्बती हाकिमों को प्रसन्न रखना पड़ता है। उनको कोई न कोई भेंट प्रत्येक वर्ष देनी पड़ती है, उनकी हर प्रकार खुशामद करते हैं। जो व्यापारी मिलनसार हैं, आदमी पहचानकर उधार देते हैं, हाकिमोंको प्रसन्न रख अच्छा लाभ उठाते हैं, दुकानों पर दिन भर तांता लगा रहता है, हुणिए माल देखते फिरते हैं, जो सिर मुंड़े व लाल वस्त्रधारी हैं वे लाम्बा गुरू कहलाये जाते हैं, सिर मुंडे हों यही लाम्बाओं

की पहिचान है, लासाके व्यापारी गोरे और खूब सूरत होते हैं, वे पश्चिमी 'हुणिओं'की तरह भद्दे और काले नहीं होते. प्रायः जितने व्यापारी व बकरी समुदायवाले होते हैं, सबके साथमें एक या दो (श्वान) कुत्ते अवश्य रहते हैं। ये कुत्ते दर्शनीय व स्वामी भक्त होते हैं, और अन्यके वास्ते रुद्र रूप धारण किये हुये मालिकके असबाबकी रक्षा करते हैं, जहाँ किसीको उन्होंने देखा झट उस पर लपके, यदि मनुष्य सावधान न हो तो टांग चीर डालना तो उनके लिये साधारण काम है, हम लोग बड़े सावधान रहते थे, यह कुत्ते पशुओंकी रक्षा करते हैं। इस साल अभी मंडी विशेष तौर पर भरी नहीं थी बहुत थोड़े व्यापारी आये हुये थे, और तिब्बती हाकिमकी आशा देख रहे थे, दूसरी बात यह है कि जिधर जाओ चारो तरफ उधर दुर्गन्ध ही दुर्गन्ध नजर आती है जगह २ बकरीका मांस खुला ही छोड़ देते हैं आस पासके कूड़े कचरेके ढेर तक भी जमा रहते हैं मांसादिका खाना तो इनके वास्ते बहुत ही सहज बात है, करें क्या बिचारे प्रकृति माताने इस मुल्कमें बकरीयां ही ज्यादा उत्पन्न कर दी हैं, यहां तक कि गरीब आदमी तो प्रायः सब इस प्रांतमें बकरीकी खालका कोट पाजामा, टोपी, जूता, अंगरखा, अनाज धरना, भरना, आदि सब बकरीके खालका बनाकर गुजारा करते हैं इत्यादि यहांके एक प्रधान साहूकार ने सर्व मण्डलीसे प्रेमसे वर्त्ताव करते हुए, खाद्य समान आदि सब खरीदवाया ५ चंवरका भी इन्तिजाम ताकलाकोट पर्य्यन्त ५२)रु० तकमें किया गया, आगामी मार्गकी सामग्री एकत्रित

करनेमें यहां भी दो दिन लगे, अतः आज निशामुखमें बड़े प्रेमके साथमें पुष्पाञ्जली कर सर्वरीमें शयन किया, प्रातः नित्य-क्रियासे निवृत हो, चाय-सत्तूको ग्रहणकर पांच चंवरके साथमें एक भोटिया तथा उसका एक बच्चा- यह भोटिया सुशील तथा वृद्धावस्था-व प्रधान व्यक्ति रहा, यद्यपि मार्गको कैलास पर्यन्त तथा ताकलाकोट तक यह पहिलेसे जानता भी था, तो भी जर्जरावस्था होनेसे बहुत सा मार्ग भूल गया था, अतः पथ दर्शकमें बड़ी झंझट रही, उक्त स्वामी तीर्थ गिरी जी महात्माकी तबियत यहींसे ज्वरादिके कारण खराब हो गई थी, पूज्यपाद् श्री स्वामीजी महाराजने कृपा करके एक चंवर खाली करवाके इनके ऊपर बैठनेका इन्तिजाम पूरी तौरपर ठीक करवा दिया था, जिससे कि ये भी पतित पावन कैलासके दर्शन कर सकें, यद्यपि इनकी असाध्य हालत यहींसे शुरु हो गई थी, तब भी महाराजका शुभ पुण्य विचार ऐसा रहा, कि एक बार इस महात्माको कैलास दर्शन हो जाय, तो बहुत अच्छा रहेगा, आगे दैव इच्छा बलवान है, एतादृश शुभ धारणाको धारणकर श्री शंकर भगवानकी जय ध्वनी उच्चारण करते हुये आगेके पड़ावको गमन किया चलते समय भोटियेदर्शकों की भीड़ भाड़ भी काफी रही, अब यहांसे एक मार्ग सीधा कैलास को व दूसरा तीर्थापुरी भी होकर कैलासको जाता है हम लोग मार्गकाफेर पड़जानेके कारणसे तीर्थापुरी नहीं जा सके, तीर्थापुरी भी बौद्ध तथा वैदिक मतवालोंका प्रधान तीर्थालय तथा मठ है यहां ऊष्णोदक का बड़ा गरम कुण्ड है जिसमें हाथ बड़ी मुश्किलसे

डाला जाता है ग्रन्थकके चश्मोंसे उवल २ कर जल निकलता है।
वह पृथ्वीके नीचे २ राक्षस तालावसे आता है यात्री लोग इस
स्थानको भस्मासुरकी ढेरी कहते हैं, दन्त कथा यह है कि भस्मा-
सुर नामक राक्षसने श्री शिवजी महाराजको प्रसन्न करनेके लिये
उग्र तपस्याकी थी भोलेनाथ उसके प्रेमपाशमें बंध गये और उस
से वरदान मांगने को कहा शंकरजीकी बाणीको सुन कर भस्मासुर
बोला, भगवन् मुझे ऐसी शक्ति दीजिये जिसके शिर पर मैं हाथ
रक्खूं वह उसी क्षण भस्म हो जाय, महादेवजी भोलेनाथ भक्तिके
आधीन थे कहा कि "एवमस्तु" जब भस्मासुरके हाथमें भस्म
करनेकी शक्ति आगई तो उसने दुष्टता वस उसका प्रयोग शिवजी
पर ही करना चाहा, महादेवजी भाग कर पृथ्वीके नीचे छिप गये।
भस्मासुरने देवी पार्वतीजीको घेरा। और उनसे अपना प्रेम प्रगट
किया। पार्वतीजीने कहा बहुत अच्छा,तुम पहिले शिवजीका ताण्डव
नृत्य करके दिखलाओ विना उस नृत्यको जाने कोई भी शङ्कर भग-
वानकी वस्तु ग्रहण नहीं कर सकता भस्मासुर उन्मत्त हो उसी
समय नाचने लगा ताण्डव नृत्य करते करते अपने हाथोंसे अपनेही
शिरको छू दिया, वस उसी दुष्टताका यही फल हुआकि उसी क्षणमें
भस्मको प्राप्त हो गया इसी कारण इस स्थानको भस्मासुरकी ढेरी
कहते हैं और यात्री लोग यहांसे सफेद मिट्टी अपने साथ लेजाते हैं
और उसको पवित्र मान अपने शिर पर लगाते हैं। जिस किसीको
भूत प्रेतकी बाधा व नजर लग गई हो तो उसके वास्ते भी यही
अमूल्य दिव्यौषधी है। शतद्रु नदीके किनारे तीन घाटिओंके सङ्गम

पर तीर्थापुरीका मन्दिर विराजमान है इर्द गीद सुन्दर सुहावनी घास हरे २ मैदान मीलों लम्बे चले गये हैं पहाड़ी पर खड़े होकर दृष्टि डालनेसे प्रकृतिका चित्र विचित्र दिखाई देता है, चारों तरफ हरी भरी दूर्वा पशुओंके चित्तको प्रसन्न करने वाली है । पहाड़ियां खुश्क हैं मैदानभी बड़े २ लम्बे हैं इन मैदानोंके बीच २ कैलास पर्वत मालासे निकलने वाले पहाड़ी नाले गड़ गड़ करते हुये जा रहे हैं। और शतलजकी शक्ति बढ़ाते हैं, ऐसे पवित्र स्थान पर तीर्थापुरीके चश्मे हैं किन्तु तिब्बत वासी उस प्राकृतिक सौन्दर्यका कुछ लाभ नहीं उठाते मरे हुये पशु कुत्ते आदि सतलजमें ही फेंक देते हैं। नदीके पासही मल मूत्र करते हैं यद्यपि इर्द गीर्द बहुत भूमी दिशा फिरागतकी भी है लेकिन इनको सफाईका तनिक भी ध्यान नहीं। मन्दिर अंधेरे भागमें अखण्ड चंवर घृतके दीपकोंसे सुसज्जित रहता है इधर यहांके मन्दिरोंमें घृत बहुत जलाया जाता है। लाम्बा गुरुओं की फोटो भी टंगी रहती है तीर्थापुरीजीसे कैलासजी को तीन दिन का मार्ग है तिब्बती पथ दर्शकोंका मुख्य भोजन चाय है चाय बनाकर सत्तूओंके साथ खाते हैं जैसे गर्मदेशमें जल पिया जाता है ऐसे ही इधर चायका व्यवहार होता है । जहां जाकर पहुंचे लकड़ी, कंडे इकट्ठा कर दियासलाई हो तो अच्छा नहींतो चकमक की रगड़से आग पैदा कर धुकनीसे झट आग सुलगा लेते हैं। इधरको हरी लकड़ी भी बहुत अच्छी जलती है छोटे २ झाड़ आधे भूमीके अन्दर आधे बाहर होते हैं इसको उखाड़कर तत्काल जला लिया जाता है । ज्ञानिम मण्डीमें बकरीका झुंडका झुण्ड एक-

न्नित हो अ घोड़े, चंवर, ऊनआदिको बहुत विक्री होती है ।

ॐ—रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम् ।
नमामी शिरसा देवं किंनो मृत्युः करिष्यति ॥ १८ ॥

[मु० २३ राक्ताछ्यू आ० शु० १४ शुक्रवार]

ज्ञानिमसे १२ मील पर सुमरशिला नाम डोंग (स्टेशन) भोटियोंकी छोल्दारी और जानवर बकरी आदि रहते है रहनेको मैदान पानी बहुत कम है, सुमरशिलासे ६ मील राक्ताछयू डोंग हैं पानी अच्छा है; हवा जोरसे चलती है । ज्ञानिमसे चलते ही २-३ जलाशय कोचड़के पड़ते हैं, पुनः बहुत दूर तक मार्ग सीधा पड़ता है हम लोगोंके साथमें पूर्वोक्त वृद्ध भोटिया जो कि "चंवर"के साथ में था मार्गसे कुछ अनभिज्ञ था मध्य अपरान्हकालमें गमन करते २ एक जलाशय मिला, अभी समय कुछ चलनेका था अतः सर्व-सम्मतिसे व भोटियाके कथनानुसार आगेको गमन किया गया आगे चलनेसे पूर्व यद्यपि श्रीमान् पूज्यपाद् स्वामीजी महाराजने अपनी अमृतमय वाणीसे सबको समझा भी दीया था कि आगे जल मिलना कठिन है, अतः यहीं पर जलाशयके समीप पड़ाव डाल देने से अच्छा होगा लेकिन भवितव्यता प्रकृति माताने सबके ऊपरअज्ञान का पड़दा डालते हुये आगेको गमन कराही दिया । महान ब्रह्मनिष्ठ पुरुषोंके सत्यवाक्योंको धारण न करनेसे यही हुआ कि शाम तक कहीं पर भी बरुणदेवका पता नहीं लगा और चलते २ रजनी माता भी आकर प्राप्त होगई । रात्रीके साढ़े सातका टाइम हो चुका था चारों तरफसे मेघ मण्डल भी दौड़ते हुये वर्षाका पूर्व रूप दिखला

रहे थे। सवेरेके नौ बजेसे चलती हुई सर्व मण्डली अति श्रान्तको प्राप्त होगई थी, जलके नहीं प्राप्त होनेसे कुछ मूर्तियां इतस्ततः चारों दिशाओंमें एक एक मील तक जलकी खोजमें निकले लेकिन जल-निधी परमेश्वरका आज लोप ही हो गया था। निराश होकर सर्व मूर्ती एकत्रित हुई। सर्व सम्मतीसे आगे गमनकी काङ्क्षा न कर यहीं पर पड़ाव किया गया, वेचारा वृद्ध भोटिया भी दुःखित व निराशाको प्राप्त हुआ। सर्वरीमें निर्वाह किया जलके न मिलनेसे आज मण्डलीमें नित्य शुद्ध क्रिया व भोजनादि खाना पीना कुछ नहीं हुवा ईश्वरीय प्रकृति मायाको धन्यवाद देते हुये शनै २ महिम्नका पाठ करते हुये गाढ़निद्रा भगवतीके ध्यानमें स्थित हुये यहांका मैदान मीलों लम्बा चौड़ा खुष्क पर्वतमालाओंसे घिरा हुआ अति दर्शनीय था लेकिन ईश्वरकी अद्भुत माया ऐसी विचित्र है कि निर्जल भूमीमें भी जंगली घोड़ोंकी टोली की टोली बांध कर भ्रमण करते रहते हैं; सर्वमण्डलीने रात्रीमें आज क्षुधा तथा तृषा युक्त ही शयन किया था अतः प्रातःकाल सूर्योदय होने पर शीघ्र ही तैय्यारी कर आगेको गमन किया गया उपरोक्त एक दिन एक रात अन्न जलके रहित हो गये थे। अतः कुछ मूर्तियां आगे चलनेको समर्थ न हो सकीं कारण कि यहांकी उतराई चढ़ाई व चलाई मनुष्यकी नस २ ढीली कर देती है। वरुणदेवकी माला रटते २ चार पांच मील तक गमन किया ईश्वर कृपासे एक सजल रमणीय अभीष्टप्रद छोटीसी नदी प्राप्त हो गई, इस नदीको,दूरसे ही अवलोकन कर सबके चित्त में वड़ाही आनन्द हुवा जिस प्रकार कि तृषायुक्त पपियाको स्वाति

नक्षत्रकी एक अमृत मय जलकी बूंद मिल जाती है और वह इच्छित फलको प्राप्त होकर आनन्दको प्राप्त हो जाता है, इसी प्रकार जलके सन्निधिमें जाकर वरुणदेवको स्वात्मा भावसे नमन कर पड़ाव डालना आरम्भ किया, तृषित लद्दू चंवरोंको खोलकर उनको भी जल पिलाया गया उपरोक्त ४-५ मीलके मार्गमें ऊंचे नीचे गड्ढे व बथूवेका शाक बहुतायतसे मिलता है यह पड़ावकी नदी इन्हीं पर्वत मालाओंसे निकल कर सतलुजकी धाराको बढ़ाती है। पड़ाव डाल कर शीघ्रही नित्यक्रियासे निवृत्त हो भिक्षाको तैयारी करी गई। आज श्रावणी रक्षाबन्धनका पवित्र दिन भी रहा, अतः शंकर भगवानका सविधि पूजन कर विशेष नैवेद्य लगा कर श्रावणी रक्षाबन्धनका शुभोत्सव मनाया गया निशामुखमें बड़े प्रेमके साथ शिव स्तुती पुष्पाञ्जली करते हुये सर्वरीमें शयन कर प्रातः नित्य क्रियासे निवृत हो चाय सत्तूको ग्रहण कर शङ्कर भगवानकी जय ध्वनी कर पर्वतोंकी अलौकिक शिखिरमालाओंको अवलोकन करते हुये आगेके पड़ावको गमन किया।

ॐ—मिली हिली गिली गोलो गोलो गोलालयो गुली।
गुग्गुली मारकी शाखी वटः पिप्पलकः कृतीः ॥ १९ ॥

[२५ वां पड़ाव (श्रावण समाप्तम्) भाद्रपद कृ० १ रवि]

राक्ताछ्यूसे ९ मील जिनडाग डोंग हैं यहां भोटिओंके बकरी आदि जानवर चुगते हैं जिनडांग डोंगसे १० मील पर दारजिन का पश्चिम किनारा है रहनेको मैदान है। दारजिनसे १० मील "श्री कैलास महादेव" जिसके दर्शन कारण महान्महान ऊंचे शृंग

और नदियोंसे पार होकर आये हो ऐसे पवित्र परमपिता कैलास के दर्शन अत्युग्र पुण्योदय होनेसे अत्युत्तम दर्शन होते हैं अतः एक बार प्रेम से बोलिये श्री जटाजूट त्रिशूलाक्ष डमरूधारी श्री कैलासाद्रिविहारी शंकर भगवानकी जय जय जय जय ! कैलास समुद्रकी सरहद से ३०००० तीस हजार फुट ऊंचाईमें है चारों ओर मैदान और पानीके झरणे बहते रहते हैं बींचमें २ मील ऊंचा २५ मील गोलाईमें अत्युत्तम हिमाच्छादित लिंगाकार श्रृंग है इस २५ मील गोलाईमें पूर्व-पश्चिउत्तर-दक्षिण चारों तरफ चार गोनवे लाम्बा गुरू और देव मूर्तियां आदि कई एक दर्शनीय उत्तम दर्शन हैं। प्रति स्थानोंको गोनवा बोलते हैं । गोनवा देवस्थान अर्थात् मंदिरका नाम है पहिले लेंडी गोनवा यहां पर सोना, चांदी, तांबा, पीतल अष्टधातु आदिकी मूर्तियां और महादेव पार्वतीकी संगमरमरकी दिव्य मूर्ती है अन्य देवोंकी उंची छोटीसे छोटी दर्शनीय मूर्तियां बनी हैं दीपक अखण्ड रात्री दिन एक दो लगे ही रहते हैं। किसी विशेष उत्सव पर दीपोत्सव भी बड़ी धूम धामसे मनाया जाता है घृतके दीपकका खर्चा यहां ज्यादातर होता है । लाम्बा गुरु पुजारी होते हैं । सुना गया है कि ये सत्यवादी व दीर्घजीवी होते हैं कतिपय भक्तजन इनकी आयु किसी २ की २०० से भी अधक बतलाते हैं विशेष करके यहांके मन्दिरों में चंवर गाय व बकरी घृत आदि विशेष अर्पण किया जाता है । इस पहिले गोनवामें ४ हाथ लम्बे हाथीके २ दांत दर्शनीय हैं अब यहांसे ३ गोनवे जो शेष हैं साधारण उपरोक्त मूर्तियां व दर्शन सब इसी प्रकारसे हैं सिर्फ

चौथे गोनवेमें सबसे अधिक इन्तिजाम है । इत्यादि हम लोगोंने यह मुकाम श्री कैलासजीकी सन्निधीमें प्रथम लेंडी गोनवेसे १॥ मील पीछेके भागमें जल तथा लकड़ीकी सुगमता देख कर नदी तट पर बहते हुये झरणेकी सन्निधीमें मुकाम किया । यहां पर भोटियोंकी और भी २-३ छोलदारियां पड़ी थीं मार्गमें छोटी छोटी दो तीन जलपूरित नदियां मिली जिसमें कि गोड़े २ जल था औरभी बहुतसे छोटे २ जलाशय झरणेकी तौर पर मिलते हैं,कैलास के आस पास हवा व शर्दी विशेष पड़ती है अपनी २ छोलदारियां डाल कर कुछ विश्राम कर भिक्षाकी तैयारी करी गई वायु देव इन्द्र मेघ मण्डलका भी बड़ा जोर रहा वर्षा बड़ी देर तक पड़ती रही। लेकिन ईश्वरीय कृपासे भिक्षा करते समय सर्व उपद्रव एक दम शान्त हो गया । इधर बहुत शीतल जल होनेके कारण दाल आदि नहीं बनाई जाती अतः हम लोग दालके अभावमें कढ़ी नित्य प्रति बनाया करते थे विना दहीके वस, वेशनमें मसाला आदि डाल घोल कर पका लिया, इधर ये कढी बहुत फायदेमन्द गरम वपाचक होती है रोटी, शाक, कढ़ी चटनी आदिकी भिक्षाकर निशामुखमें बड़े प्रेमके साथ पुष्पांजली करते हुये ईश्वरको धन्यवाद देकर सर्वरी में शयन कर प्रातः नित्य क्रियासे निवृत हो, चाय, सत्त को ग्रहण कर, शङ्कर भगवानकी जय ध्वनी करते हुये आगेके पड़ावको गमन किया ।

ॐ—रत्नैः कल्पित मासनं हिम जलैः स्नानञ्च दिव्याम्बरम्
नानारत्न विभूषितं मृग मदामोदांङ्कितं चन्दनम् ।

जाती चम्पक विल्व पत्र रचितं पुष्पंच धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ २२॥

[भाद्र० कृ० २ सोमवार पड़ाव २६ डेरफू गोनवा कैलास]

लेंडी गोनवे तक मार्ग कुछ दूर तक चढ़ाई उतराई का है। इस पहाड़ी शिखरको पार कर पुनः गोनवे तक मैदान मिलता है कैलासके नीचे सिन्धु नदीके किनारे किनारे जाना पड़ता है यहींसे कैलासजीको मार्ग जाता है। यह सिन्धु नदी कैलास पर्वत मालाओंसे निकल कर सतलजमें जा मिलती है इसीके साथ कुछ दूर तक कैलास परिक्रमामें जाना होता है सामने पर्वतोंके बीच मार्ग फटा हुआ है सिन्धु नदीने ही पर्वतको इतस्ततः कर कैलास में प्रवेश होनेको अत्युत्तम मार्ग बनाया है यहींसे प्रवेशहो कैलास की परिक्रमा प्रारम्भ होती है। प्रथम सिन्धु नदीमें स्नान करना होता है। स्नानान्तर पुनः गोनवेमें जाकर सविधी भेट पूजनादि द्वारा दर्शन करे, महादेव पार्वतीके अलौकिक दर्शन और अन्य देवताओंके अच्छे २ दर्शन हैं। पृष्ठ भागमें पुस्तकालयभी बना हुआ है तिब्बती भाषामें बहुतसे ग्रन्थ हस्त लिखित हैं उनको कपड़ोंसे लपेट कर सावधानीसे रखते हैं लाम्बा लोग हर समय "ओम माने पदमें हुं" का जप करते रहते हैं। स्त्रियां भी अवधूतानी की तरह इन मठोंमें रहती हैं और अपने समयको बुद्ध भगवान की सेवामें खर्च करती हैं। मण्डलोकी तरफसे ५) तथा कुछ टंकी मन्दिरमें चंवरगाय तथा दीपकके घृतके वास्ते दिये गये, नारिकेल व मिष्टान्न मिश्रीका भोग लगाकर दर्शक सर्व मंडलीमें बांटा गया थोड़ी देरमें

लाम्बा गुरुओंकी प्रेरित एक अतिवृद्धा प्राचीन सनातनी बुढ़िया काशी लामाओंकी प्रशंसा श्रवणकर महाराजके दर्शनको पधारी। यह दीन वृद्धा युवती सत्यवादी और दीर्घ जीवी मालूम होती थी इसको भी पारितोषिकमें १) रु० देकर सन्तुष्ट किया गया सम्पूर्ण देव दर्शनादिसे निवृत्त हो पृष्ठ भागसे ही गमन किया। यहांसे करीब मील भरकी सीधी उतराई पड़ती है लेंडी गोनवेसे ४ मीलपर डेरफू गोनवा पड़ता है प्रदर्शनीयमें ४ हाथ लम्बे महिषके [भैंस] के शृंग हैं उक्त घृतके अखण्ड दीपक व पुस्तकालय यहांपर भी है, लेंडीसे डेरफूतक मध्यमें ३-४ नदीयां भी छोटी २ पार करनी पड़ती हैं। देवदर्शन भेट पूजनादि करते हुए इसी गोनवेमें पड़ाव किया गया यहांपर लकड़ीका बहुत अभाव है कण्डे आदि भी बहुत मंहगे मिलते हैं कुत्ते तो हमेशा रुद्र रूप धारण कर निज मालिककी रक्षामें तत्पर रहते हैं आजके पड़ावमें भी कुछ कण्डे खरीदकर केवल चाय ही बनाकर चाय सत्तूसे निर्वाह किया गया इधर अन्नादिक पदार्थोंका बड़ा अभाव रहता है पड़ाव डालते ही यहांके दीन दुखी क्षुधार्ति भयंकर रूप धारण किये हुये सत्तू मांगने की कांक्षासे बहुत सा स्त्री पुरुषका समुदाय मिलकर निज छोल-दारियोंके इतस्ततः घेरकर खड़े हो गये सत्तू मांगनेके लिये बारम्वार आग्रह करते थे इनकी भयंकर अद्भुत आकृतिको अव-लोकनकर मालूम होता था कि आज ये (चुरस्तये) धातुका प्रयोग करेंगे ईश्वरकी कृपासे निज द्विभाषया भोटियों द्वारा सत्तू

देदेकर, पृथककर पुनः शान्तिसे पुष्पाञ्जलीकर सर्वरीमें शयन किया रात्रिमें वर्फ भीं ऊपरसे खूब पड़ी शर्दीका भी जोर विशेष रहा बड़ी मुश्किलसे कष्टकी रात्री निकाली प्रातः उठकर बाहर नजर की तो चारों तरफ वर्फ ही वर्फ भूमिपर नज़र आता था। मालूम पड़ता था कि पृथ्वी माताने श्वेत चद्दरको धारणकर सोमवारका श्रृङ्गार किया होगा। थोड़ी देर बाद पृथ्वीपर गिरी हुई वर्फ सूर्योदय होनेसे पिघलकर जलमय हो गई। कैलासके इर्द गिर्द वर्फानी पहाड़ियोंसे अच्छे २ सुन्दर रमणीय झरने बहकर आते हैं, इनमें जल बहुत ठंडा वर्फ जैसा ही होता है प्रातः इन्हीं झरणोंमें स्नान कर चाय सत्तूको ग्रहणकर आगेको मुकाम उठाया गया।

ॐ शंकरः शूल पाणिश्च खट्वाङ्गी विष्णु वल्लभः।
शिपि विष्टोऽम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्त वत्सलः॥ २१॥

[मु० २७ जुमलफू गोनवा भाद्रपद कृ० ३ भौमवार]

डेरफूसे ४ मीलपर गौरी कुण्ड है पहाड़की उतराईमें झीलके तौरपर यह कुण्ड बिलकुल हिमाच्छादित है। वर्फ तोड़ हटाकर स्नान मार्जन करना होता है गौरी कुण्डसे करीब ७ मीलपर जुमलफू गोनवा है। यहांपर दर्शनीय स्फटिक शिलामूर्ती नुमाईशमें रक्खी है। जुमलफूसे ३।४ मील "ग्यांग टांग" गोनवा" है यहींपर सब गोनवोंके इन्तिजामके लिये बड़े लाम्बा गुरूके दर्शन तथा अकथनीय अद्भुत मूर्ति जिसमें नुमाईशमें १ से १५ हाथ लम्बी शेरकी खाल है इस गोनवेमें सफ़ाई व इन्तिजाम अच्छा है। ये चौथा गोनवा देखने योग्य है कैलासकी प्रदक्षिणाका घेरा चारों
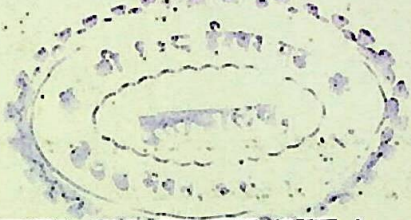
श्री गौरीशङ्कर शृङ्ग का एक दृश्य ।
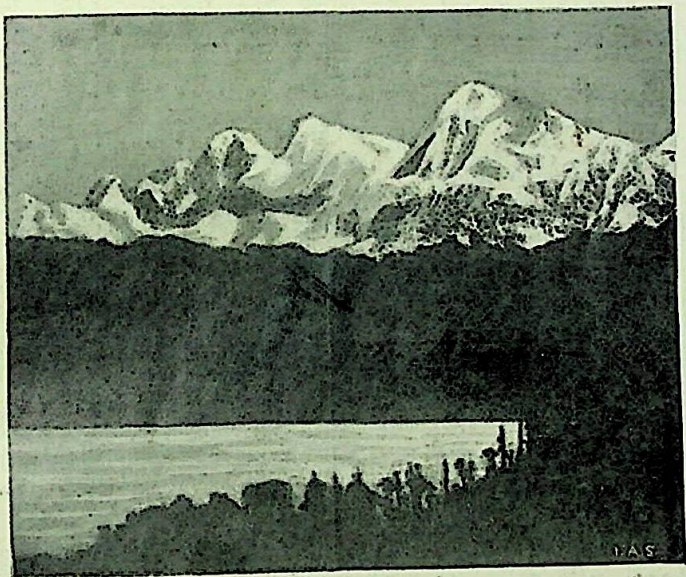
गौरीनाथं विश्वनाथं शरण्यं भूतावासं वासुकी कण्ठभूषम् ।
त्र्यक्षं पञ्चास्यादि देवं पुराणं वन्दे सान्द्रानन्द संदोह दक्षम् ॥
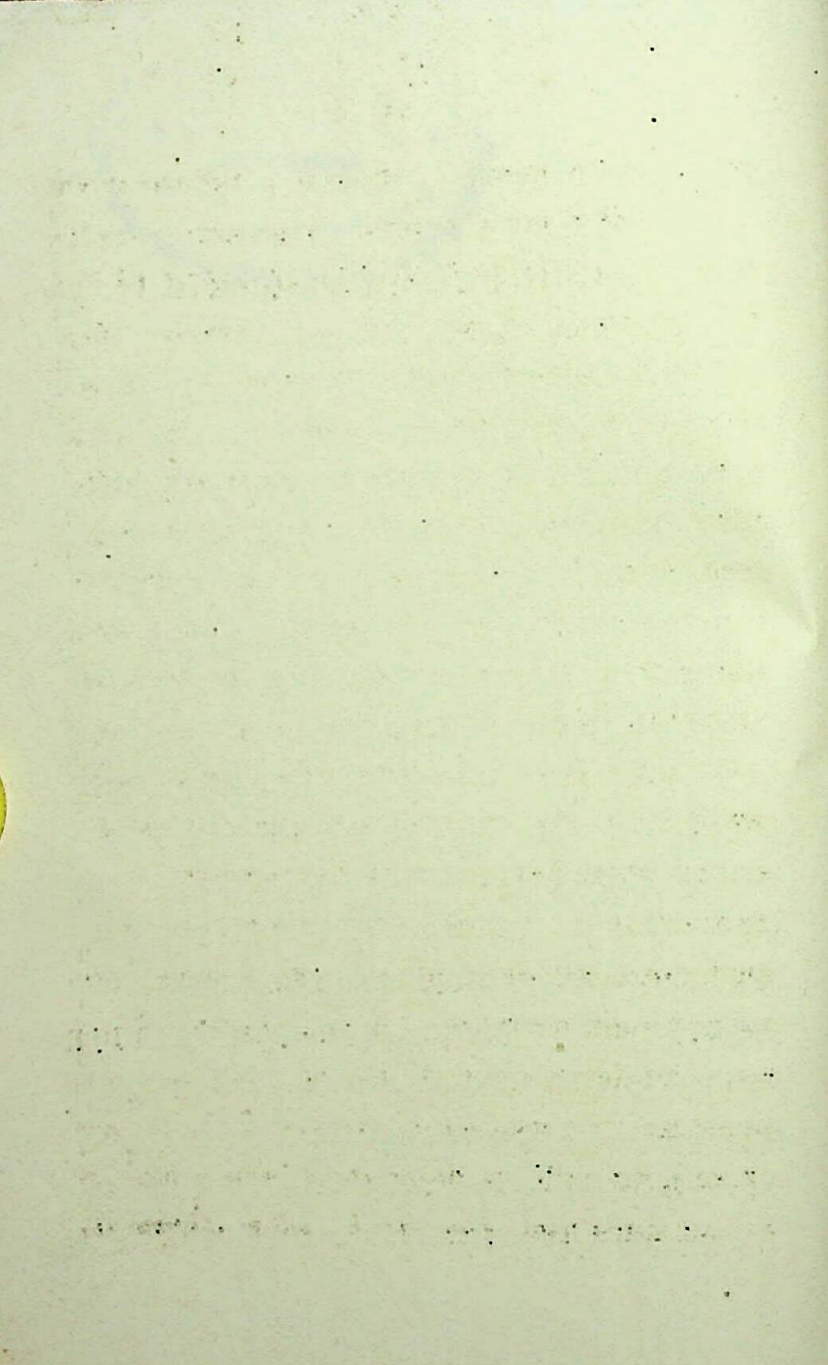
तरफ २५ मीलका पड़ता है। परिक्रमामें ३ दिन लगते हैं कोई यात्री २ दिनमें ही मार्ग तै कर लेते हैं तिब्बती लामा तो रात-दिन चलकर इसे पूरा कर लेते हैं जैसी जिसे हैसियत होती है वैसी ही वो पूरा करता है जो अमीर यात्री हैं। जिनके साथ नौकर तथा खेमे हैं वे आनन्दके साथ चार पांच दिनमें अपने सुभीतेके अनुसार यात्राका मजा लूटते हैं। जिनके पास नौकर नहीं हैं वे जहांतक जल्दी हो सकती है करते हैं। क्योंकि अपने लोगोंसे सामान पीठपर लादकर इन पहाड़ोंकी यात्रा नहीं हो सकती। जिनको अभ्यास है वे कर भी सकते हैं। हम लोगोंको तो पांच सेर बोझ लेकर चलना भी कठिन था। दूसरे गोनवेमेंसे कैलासके स्वच्छ साफ भव्य दर्शन हुये। प्रायः चारों तरफ एकदम कैलासके कोहरासा छाया हुवा रहता है। साफ भव्य दर्शन कभी २ होता है प्रातः काल ५ बजेके करीब अत्युत्तम सुन्दर कर्पूरके सदृश्य श्वेत भवनके शिखिरके दर्शन अच्छे होते हैं। कैलासकी सन्निधी मूलमें पूजन करनेके लिये मण्डलीकी तरफसे पुजारीको भेजा गया, कैलाससे २ मीलके करीब ईर्द गिर्द अधोभागमें परिक्रमा करी जाती है, मार्ग दूर होनेकी वजहसे व शीत प्रधानतासे सबकी आवश्यकता न समझकर, पुजारीका उत्साह देखकर, पूजा निमित्त ऊपर मूलमें भेजा गया, पासमें सिन्धु नदीको पार कर धीरे २ मूलमें ऊपरको जाना होता है। मध्यमें उतराई चढ़ाई, जल बर्फादि सब मिलता जाता है, करीब २ मील तक गमन कर कैलास मूलमें पहुंचना होता है। क्या ही अलौकिक दृश्य

था; यह अनुपम छटा ! श्रीकैलासजीका पर्वत सचमुच ईश्वरीय विभूतिका अनोखा चमत्कार है, मैंने मन्दिरमें जा जाकर शिवालय बहुत देखे हैं, पर ऐसा प्राकृतिक शिवालय इस भूमण्डलमें कहीं नहीं है जिस कुशल शिल्पीने प्रथम शिवालय, वर्फालयकी रचना विधिका नकशा तैयार किया होगा, उसके हृदय पटपर तिब्बत स्थित इस नैसर्गिक शिवालयकी प्रति कृति अवश्य रही होगी इसके विना वह कदापि शिवालय बना नहीं सकता था, प्रकृतिने हिम द्वारा वही काट वही छांट, वही घेरा, वही श्वेतचिनाई, वह लम्बाई, ऊंचाई,सजावट इस कैलास पर्वतके निर्माणमें खर्च की है; भारतमें नकली शिवालय देखा करते थे, आज यहां शिवजीका अकृत्रिम स्थान अद्भुत देखनेमें आया। २१२५० फीट ऊंचे इसी कैलाशजीकी महिमाका वर्णन क्या कोई कर सकता है, जिस गौरवके साथ ये उन्नत मुख किये हुये चारो ओर देख रहे हैं इनकी दृष्टि अपने प्यारे भारतपर पड़ रही है। जहां उनकी प्रतिकृति वनाकर "करोड़ो आत्मायें" हर हर महादेव कैलाशपतिकी ध्वनिकर अपनेको कृत्य कृत्य व धन्य मानते हैं। दूर देशान्तरोंसे चीन, जापान, स्याम, ब्रह्मा, लासा आदिसे बौद्ध तथा वैदिक धर्मालम्बी इसकी परिक्रमा करने आते हैं।

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वत धर्म गोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे॥१॥

दो०—ज्ञातव्यक्षर परम पर, तुम यहि विश्व निधान।
रक्षक धर्म निरन्तर, पुरुष सनातन मान॥ २॥

हे विश्वेश मुमुक्षुओंसे जानने योग्य अविनाशी ब्रह्म सो आप ही हो और इस जगतके प्रधान मुख्य आश्रय आप ही हो, इसीसे बिकार शून्य और अनादि कालसे प्राप्त हुए वैदिक धर्मके पालक आप ही हो और अनादि कालका पुरुष अर्थात् शरीर मात्रमें निवास करनेवाला आत्मा आप ही हो ऐसा मैं मानता हूं।

श्री कैलासजीका विश्वकर्मा रचित अभिष्ठप्रद अद्भुत हिमाच्छादित मंदिर अकथनीय है। जिस कैलाशजीकी महिमा हमारे पुराणों तथा श्रुति स्मृति इतिहासोंमें विस्तारसे करी है। जिसकी प्रशंसामें तिब्बती ग्रन्थ भरे पड़े हैं। ऐसे पवित्र निर्बाण प्रद श्री कैलाशजीके दर्शनकर हम लोगोंने अपने आपको धन्य और कृत्य २ माना। यद्यपि इस पवित्र दर्शनके लिये वड़े २ कष्ट सहने पड़े, हवा, आंधी, वर्षा वर्फादिका कष्ट, गन्दे तिब्बतिओंका संग; लाम्बाओंकी घुड़कियां आदि सब सुननी भी पड़ी, तो भी क्या इस आनन्दके सामने सब दुःख हवा हो जाता है। पश्चात् मण्डली स्थित पुजारीजी सविधी मूलमें पूजनादिकर वर्फका प्रसाद लेकर मण्डलीमें आकर प्राप्त हुये। सर्व मण्डलीको वर्फका प्रसाद बांटकर आगेके पड़ावको गमन किया, सिन्धु नदीके किनारे २ जा- रहे थे; सबकी आंखें कैलासजीपर थी। सिन्धु नदीको पारकर गौरी कुण्डकी ओर चले; कैलासजी यहांसे बिलकुल पास है; चढ़ाई बड़ी कठिन है चलते २ इन्द्रदेवजीका भी आगमन हो गया धड़ाधड़ वर्षा पड़ने लगी, कभी २ धवला वर्फ देव भी जोरसे पड़कर सबको नीचे बैठा दिया करते थे, चढ़ाई उतराई वर्षादिके कारण

यहां सबकी हालत श्रांत सी हो गई थी, जैसी वेढव चढ़ाई चढ़कर आये थे उसी प्रकार वेढव ३ मील तक गौरी कुण्डसे आगे उतराई पड़ती है ईश्वर कृपासे नीचे पहुंचे ! कि फिर बादल घिर आया और मूसलाधार वर्षा होनेको फिर तैयार हुई, चारों तरफ जलके बादल दिखाई देने लगे, लेकिन थोड़ी देर वर्षकर सब उक्त उपद्रव शांत हो गया, नदीके किनारे २ गोनवाकी तरफ चले कुछ दूर पर चलकर कैलास पर्वतसे निकली हुई दूसरी धाराको पकड़ लिया २ मील और गमन करके जल तथा लकड़ीका सुभीता देखकर जुमलफू गोनवेसे १॥ मील पीछेपर मुकाम किया, कल काष्टादि के अभावसे सन्ध्यामें रोटी आदि नहीं बनाई गई थी, आज जल्दी पड़ाव डालकर निशामुखमें भिक्षाकी तैयारी कर रसोई हिल मिलकर बड़े प्रेमसे बनाई गई। दरचन मन्दिरमें तिब्बती क्रूरताकी भयंकर व्यवस्था मालूम हुई ऐसा सुननेमें आया; कि लामाओंने एक बकरेको पकड़कर उसका मुख और नाक कसकर बांध दिया; दम घुटकनेसे पशु छटपटाने लगा, बेचारे पशुने तड़प २ कर प्राण दे दिये, अपनी इस क्रूरताका कारण इन्होने यह बतलाया कि बौद्ध धर्मके अनुसार लामाओंको हिंसाका निषेध है; इसलिये उस नियमकी रक्षाहित पशुको शस्त्रसे नहीं मारते; केवल दम बन्द कर देते हैं पशु आप ही मर जाता है; इत्यादि सर्व मण्डली थकी थकाई थी अतः रात्रीमें शयनकर प्रातः ठण्डे शीतल झरणेमें स्नानकर व चाय सत्तूको ग्रहणकर नमः पार्वती पतये हरकी ध्वनीको धारण

करते हुये अगले पड़ावको गमन किया, जुमलफूगोनवासे ही श्रीयुत स्वामी तीर्थ गिरीजी की तबीयत कुछ खराब थी ज्ञानमण्डीसे ही कुछ बुखारकी शिकायत थी। स्वामीजी महाराजने इनके बैठनेके लिये एक चंवरी बैलको खाली करवा दिया था, जिसपर बैठकर पूज्यपाद् मण्डलेश्वरजीके अनुग्रहसे उक्त महात्मा तीर्थगिरीजीने कैलासके दर्शन अच्छी तरहसे कर लिये थे, लेकिन भावी बलवान है, आजके मार्गमें कुछ दूर चलने पर आपकी तबीयत बहुत कुछ ढीलीसी हो गई थी, चंवरी बैलपर भी बैठनेकी ताकत नहीं रही क्योंकि पञ्चतत्वोंकी चिट्ठी आपहुंची थी, रास्तेका मामला था मण्डलीकी तरफसे सेवा शुश्रुषा यथोचित बहुत कुछ करी गई। पूजनीय वासुकी ब्र०जीकी भी तरफसे औषधि आदिकी पूरी देख रेख रही, क्योंकि कैलासकी गोदमें इनको बैठना था, अतः दवाई आदि कोई काम न देते हुये तबीयत एकदम खराब होती ही चली गई यहां तक कि बैठने उठने बोलने चलनेकी बिलकुल शक्ति नहीं रही। अन्तमें सर्वसम्मतिसे व पूज्यपाद् स्वामीजी महाराजके अनुग्रहसे कुलियोंको कुछ लोभ देकर कण्डीके सदृश बांस व कपड़ा लगा कण्डी बनाकर उक्त महात्मा उसमें बिठलाये गये; दो-दो कुली पारी २ से उठाकर कुछ दूर तक ले चले। मध्यमें एक छोटा-सा गोनवा पड़ता है; गोनवेके दर्शन करें। यहांपर यहांके प्रधान देवके लिये श्रीफल तथा अच्छे वस्त्रकी पताका व अखण्ड दीपक घृतादिके वास्ते कुछ टंकिया चढ़ाकर दर्शन परिक्रमा करते हुये आगेको गमन किया; आधीमीलके चलनेपर ठीक कैलासकी परि-

क्रमामें अच्छी सुन्दर नदीके तटपर कालके वशीभूत हुये; आज कैलास लोकको प्राप्त हो गये। आप वहुत सुशील व सदाचारी, पराक्रमी भक्त, ब्रह्मनिष्ठ; व्रतधारी महात्मा थे; पूर्व संचित पुण्योदय व महात्माओंका सत्संग तथा भक्तिके प्रतापसे साक्षात् कैलासमें आकर सर्वस्व देह कैलासपतिको अर्पण कर दी। पञ्चतत्वके प्राप्त हो जानेपर सर्व मण्डली साफ संजल नदीके तटपर जाकर कुछ देर जीव भगवानकी आशा रखते रहे, अन्तमें नाड़ीके छूट जानेपर पूज्यपाद् श्रीस्वामीजीके सहित सर्व मण्डलीने बड़े प्रीति पूर्वक आपको सविधि स्नान, भस्मी, पुष्पादिकसे अर्चनकर अभिषेकके अनन्तर शंकर भगवानकी जय...ध्वनी करते हुये गंगामें जल समाधी दे दी गई। जलका वेग बहुत विशेष रहा; अतः कुछ दूर तक आपका स्थूल शरीर दिखाई दिया फिर साक्षात् कैलासकी गोदमें जाकर अप्रगटित हो गये। पुनः सर्व मण्डलीने अन्तर्यामीको धन्य-वाद देकर ईश प्रार्थना करी कि आपको शीघ्र ही सद्गति प्राप्त होवे ईश्वरीय अद्भुत लीलाको अवलोकनकर आज थोड़ी दूर चलकर ही जलकी सन्निधिमें पड़ाव डाल दिया गया।

[भाद्रपद कृ०४बुधवार पड़ाव २८ वां तीसरे गोनवेसे१॥मील आगे]

ॐ शिवो महेश्वरः शंभुः पिनाकी शशि शेखरः।
वाम देवो विरूपाक्षः कपर्दी नील लोहितः॥ २०॥

भिक्षाकी तैयारी कर, निशामुखमें भिक्षा करके पुष्पाञ्जलीकर सर्वरीमें शयन किया। प्रातः नित्य क्रियासे निवृत्त हो चाय सत्तू को ग्रहण कर ८ बजेके करीब मुकाम उठाकर शंकर भगवानकी जय ध्वनि करते हुये आगेके पड़ावको गमन किया गया।
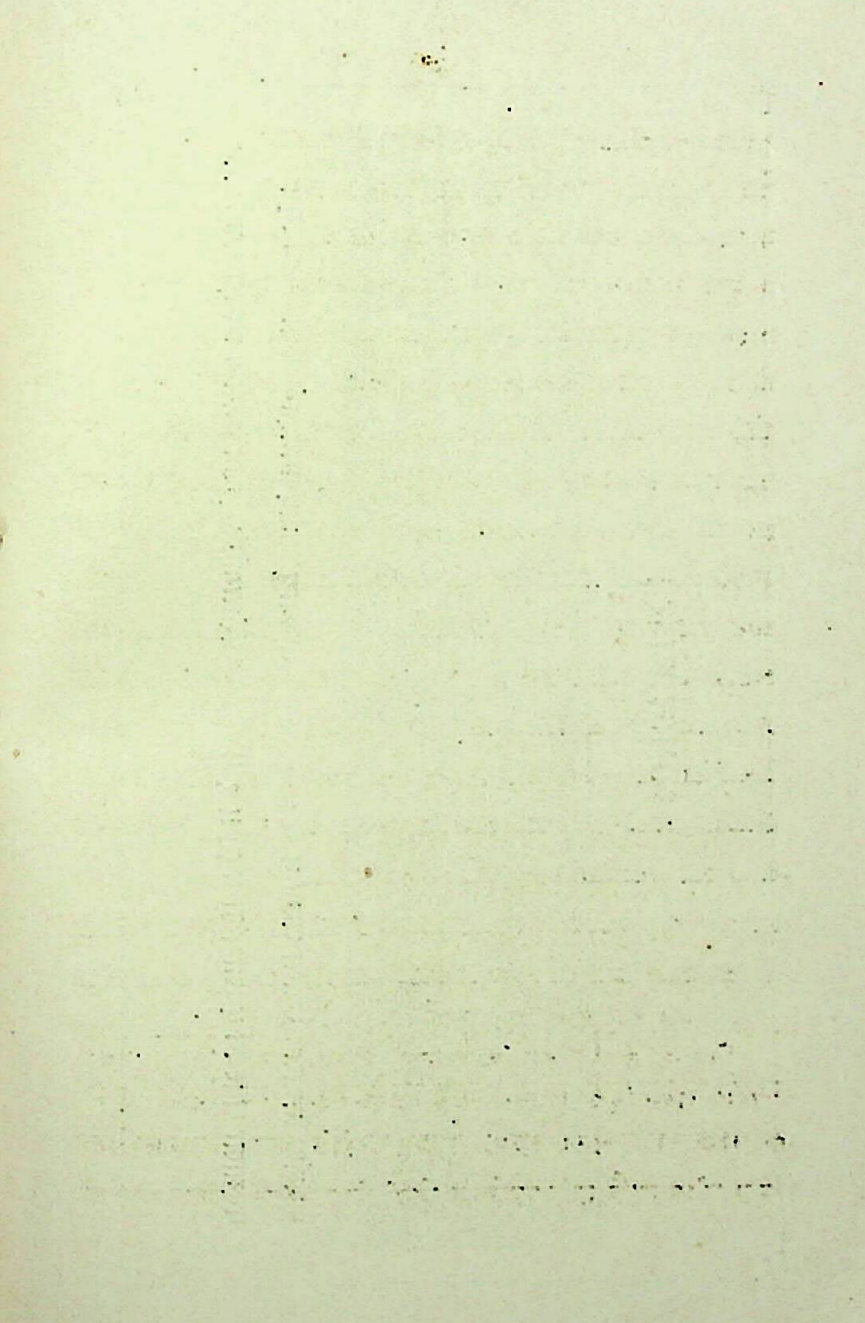
श्रीमानसरोवर ।

कमलैक निवासेन रथांगा भरणे न च । भग्नवायु शतोदयोगमक्षारं विष वर्जितम् ।
वनमाला लयत्वेन दधन्नाराणीं तनुम् ॥ १ ॥ नाशिंतागस्ति तृष्णार्तिं प्रसन्न सागराधिकम् ॥२॥

INDIAN ART SCHOOL

ॐ मानसरोवरका स्वरूप

कमलैक निवासेन रथांगा भरणेन च।
घनसाला लयत्वेन दधन्नारायणीं तनुम् ॥ १ ॥ २५ ॥
भग्नत्रायु शतोद्योगमच्चार' विष वर्जितम्।
नाशितागस्ति तृष्णार्ति प्रसन्न सागराधिकम् ॥ २ ॥ २६ ॥

[मु० २६ वां भाद्रपद कृ० ५-६ बुध गुरु मानसरोवर]

तीसरे गोनवेसे पहाड़ी घाटीको लांघकर बीचमेंसे मानसरोवर का मार्ग फूटता है, चौथे गोनवेमें ज़ानेसे चक्कर बहुत पड़ता था अतः यहींसे नदीको पारकर धाराको लांघते हुये सूखे ऊंचे मैदानमें पहुंचे, दूरसे राक्षस तालाब भी चमक रहा था, राक्षस तालाबसे १॥ मीलके फासलेपर जो पगडण्डी मानसरोवरको जाती है उसी को धरकर चले, उपरोक्त नदीसे ३० मील करीब मानसरोवर पड़ता है, मार्ग एकदम सीधा है। हमारे साथ भोटिया मार्गसे अनभिज्ञ था, अतः उलटे रास्तेमें चलनेसे कुछ दूरीपर दलदलका मार्ग मिला जिसमें चंवर आदि सब धसने लगे, खाद्य सामान भी जगह २ पर गिरनेके कारण दुर्दशाको प्राप्त होने लगा, आज भी भयानक खतरे दार मार्ग रहा पुनः ईश्वरीय कृपासे इस दलदल मार्गको छोड़कर कुछ साफ रास्तेमें चले, यहां मार्गमें आगे छोटे २ कांटेदार वृक्ष बहुत मिलते हैं उतराई चढ़ाई भी कहीं २ पर मिलती हैं मार्ग बहुत दूरका रहा अतः निशामुखमें करीब ७ बजेके मान-सरोवरमें जाकर प्राप्त हुये। रात्रीमें लकड़ीके अभावसे आज भी रोटी आदि कुछ नहीं बनाया गया, पुष्पाञ्जलीसे निवृत्त हो गुड़

सत्तू को खाकर सर्वरीमें शयन किया, प्रातः नित्य क्रियासे निवृत्त हो भिक्षाकी तैयारी करी। विशेष प्रधान तीर्थस्थान होनेकी वजहसे एक मुकाम और यहांपर विशेष किया गया। गुफासे थोड़ी चढ़ाई चढ़नेपर मानसरोवरके पुनीत दर्शनका सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिस मानसरोवरकी महिमा बचपनसे सुना करते थे, जिसके दर्शनार्थ भारतकी करोड़ों आत्मायें लालायित हैं जिसको देखनेके लिये योरुप, चीन, जापान, भारतके पुण्यशील धुरंधर विद्वान दूर २ से आते हैं जिसकी नैसर्गिक शोभाकी प्रशंसा सब विदेशियोंने मुक्त कण्ठसे की है, यह सरोवर स्वच्छ जलसे पूरित ११ मील चौड़ा २५ मील लम्बा सुना गया है। बड़ी २ जल पूरित नदियां आस पासके पहाड़ोंसे हरहर करती हुई इसमें समागम कर स्वागत करती हैं। सतलज आदि बड़े २ नद इसीसे निकलकर देशान्तरोंमें प्राप्त हो, सैकड़ोंका परोपकार कर अभ्युदयको प्राप्त होती हुई जलनिधिका स्वागत करती हैं, सरोवरके तटपर अच्छे २ चित्र विचित्र हंसादिक पक्षी माधुरीय वाणीसे गुञ्जनाकर सरोवरकी स्तुति कर क्षेमताको प्राप्त होते हैं।

नोट—कोई सत्तर मीलकी परिधिमें इस झीलको बताते हैं लेकिन अंग्रेजी लेखकोंने मानसरोवरकी परिधि ४५ मीलकी लिखी है। परिक्रमा करनेवाले भोटिया लोग इसको सत्तर मीलसे कम नहीं मानते। इसके चारो ओर पर्वत मालायें हैं सामने झीलके पूर्वी किनारेपर नीले पर्वतोंकी कतारें शोभाको प्राप्त हो रही हैं उत्तरमें कैलासजी त्रिशूलाकार दिखाई पड़ते हैं, जल बहुत

साफ निलाई पनेमें हैं आज बहुत वर्षों की इच्छा पूर्ण हुई, झील बहुत गहरी है सर्व मण्डलीने स्नानकर परमात्माको धन्यवाद दिया। यहां थोड़ी दूरपर ऊपरके भागमें गोनवा है, छोटी बड़ी देवी देवताओंकी प्रतिमायें हैं अखण्ड दीपक भी प्रज्वलित रहता है, दर्शनकर आगे सरोवरकी तरफ दृष्टि दी, क्या ही आनन्द आया, मीलों लम्बे हरे हरे मैदान मानसरोवरके इर्द गिर्द में हैं यहां हजारों पशु मजेमें चर सकते हैं। श्रीकैलाशजीसे मानसरोवर आनेमें भूमी नीची होती जाती है और मानसरोवर अधित्यका १५००० फीटकी ऊंचाईपर है, इसका फैलावा बहुत दूर तक है। मानसरोवरसे ताकलाकोटकी तरफ आनेसे फिर चढ़ाई शुरू होती है। झीलके चारों तरफ गोनवे कुछ २ फासलेपर बने हुये हैं, निशामुखमें व प्रातः काल मानसरोवरके दर्शनका आनन्द व हंसादिक पक्षियोंकी गुञ्जनेकी लहर कहीं २ नील कमलका भी दृश्य देखनेमें आता है, एतादृश पुनीत रमणीय भूमिमें २ रात्री निवासकर प्रातः चाय सत्तू से निवृत्त हो आगेके पड़ावको गमन किया, वांककी मछली जोकि बड़ी २ दवाईमें काममें ली जाती है वैद्योंके वास्ते यह अमूल्य औषधी है। यह मछली प्रायः मानसरोवरसे बहुत निकलती है जिसका व्यापार दूर २ तक होता है दूसरी अद्भुत बात यह है कि कोई २ दिन छोड़कर यहांपर बिना बादल हीम वर्षा करता है।

[मानसरोवर कौन परसे बिना बादल हिम बरषे]

प्रधान यात्रा हो जानेके कारण उक्त कुलियोंकी विशेष आवश्य-

कता न समझकर जगतसिंह तथा गंगासिंहजीको ४८)—४८) रुपया देकर यहांसे विदा किये गये।

ॐ कारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।

कामदं मोक्षदं चैव ॐ काराय नमो नमः ॥ २७ ॥

यहांसे आगे मार्ग सीधा तथा कुछ उतराई चढ़ाईका भी पड़ता है सामने गुरलाकी वर्फानी चोटियां चमकती नज़र आती हैं, छोटी२ पहाड़ियोंकी घाटिमेंसे जाना होता है घास भी बहुत विशेष तौर पर मिलती है पुनः २-३ मील तक राक्षस तालावके किनारे २ पत्थरोंके मार्गसे गमन, शीतल जल वायुको ग्रहण करते हुये तथा आतपसे संतप्त होते हुये, निशामुखमें ४ बजेके करीब राक्षस तालाव पर ही मुकाम किया गया-आज पतितपावन श्रीकृष्णचन्द्र भगवानका जन्मोत्सव था, अतः सर्व मण्डलीने अपनी सनातनी प्रथाको धारणकर सब उपवासमें सम्मिलित हो थोड़ा २ भगवानके चरणामृत व प्रसादक ग्रहण कर शंकर भगवानकी पुष्पाञ्जली करते हुये सर्वरीमें शयन किया पुनः दूसरे दिन भिक्षासे निवृत्त हो आगे को गमन किया यह राक्षस तालाव करीब ८-१० मीलकी परिधीमें होगा, जल एकदम बिलकुल साफ हलका तथा मनोहर है हवा यहांपर विशेष चलती है अतः हवाके वेगसे जलको लहरोंका आनन्द समुद्र जैसा आता है, यहांसे आगे गमन करनेपर जलकी मध्यमें संकोचता रहती है अतः ३-४ मीलके लिये यहींसे जल भर लेना चाहिये। आगे जाकर कई एक तिव्वती यात्री व व्यापारी मिले, जोकि पांच अस्त्र शस्त्रोंके सहित घोड़ोंपर सुसज्जित थे, ये

भी कैलास दर्शनके उत्सुक थे समय पाकर यही लोग विचारे गरीब यात्रियोंपर धावा कर बैठते हैं।

ॐ नमन्ति ऋषयो देवानमन्त्यप्सरसां गणाः।
नरा नमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः॥ २८॥

[मु० ३१ वां गौरी गुफासे आधमील आगे नदी तटपर]

गुरला मान्धाता पर्वतके पास पत्थरोंसे भरी हुई करनाली नदीके किनारेपर मुकाम हुआ। करनाली यहां अपनी वर्फानी घरसे निकलकर मैदानमें आई है। छोटी छोटी धारा कई पड़ती हैं-इसीके तटपर निवास, भिक्षा पुष्पाञ्जली आदि सब हुआ, रहने को मैदान कई मीलोंतक चला गया है, यहांसे आध मीलपर गौरी गुफा स्थान रमणीय तथा दर्शनीय है, जंगली घोड़े व चंवरी गायकी मालाकी माला यहां भी भ्रमण करती रहती हैं। प्रातः नित्य क्रिया से निवृत्त हो चाय सत्तूको ग्रहणकर आत्म चिन्तन करते हुये आगे को गमन किया।

ॐ महादेवं महात्मानं महा ध्यानं परायणम्।
महा पाप हरं देवं मकाराय नमो नमः॥ २९॥

[मु० ३२ वां ताकलाकोट० भा० कृ० १० रवि]

यहांसे ताकलाकोट तक मार्ग सीधा कहींपर रास्तेके फेरसे उतराई चढ़ाई भी थोड़ी २ पड़ती है मार्गमें भोटीओंकी बस्ती तथा खेती आदि अच्छी होती है, आज कई नदियां पार कीं, करनालीकी सहायोंका आनन्द देखते हुये कभी ऊंचे कभी नीचे के चढ़ाव पूरे करते हुये करीब १॥ बजेके बाद एक पहाड़ी नालेके किनारे पहुंचे,

यहांसे आगे मैदानमें कंकड़ भी विशेष मिलते हैं इस मैदानको भी तै किया नीचे उतरकर करनालीकी घाटीमें पहुंचे यहां पहिलीवार लहलहाते हरियाले खेत नज़र आये जो खेत लहरें मार रहा था, छोटी२ नहरें काट २ कर भूमि सींची गई है इधर उधर चारों तरफ हरे भरे मटरके खेत दिखाई देते थे। अब यहांसे उतार कमती होता जाता है गुरलाके १६००० फीट ऊंचे घाटेसे चले थे,धीरे२ १३००० फीट तक आ गये होंगे। बीचमें छोटे २ ग्राम मिलते हैं 'हुणिओंकी' स्त्रियें प्रातः खेतोंमें काम करती हैं; प्रत्येक ग्रामके बाहर भागमें छोटे २ मंदिर सरीखे मट्टीके बने हैं जिसमें "ओंम माने पद्में हूं" की कतारें लगी हैं झण्डियां गड़ी हैं मूर्तियां भी बनी है। पड़ाव बहुत दूर होनेकी वजहसे निशामुखमें ६॥ के करीव ताकलाकोटकी प्रथम मण्डीमें पहुंचे जगह साफ व सुभीतेके न होनेके कारण नदी पारकर मण्डीमें जाकर प्राप्त हुए। यहांपर भी भूमीकी गन्दगी देखकर अधोभागमें गंगातटपर मुकाम किया गया। नूतन पड़ाव तथा रात्रिके विशेष होनेसे आज भी रोटी आदि कुछ नहीं बनाई गई। गुड़ सत्तू खाकर ही निर्वाह किया पुष्पाञ्जलीके अनन्तर शयन कर दूसरे दिन भिक्षाकी तैय्यारी करी। चंवर वाले यहींतक थे अतः यहांसे मजदूरी देकर इनको विदा किया गया। छोलदारियोंकी भी विशेष आवश्यकता न समझकर यथोचित दाममें छोलदारियां भी दे दी गई। यथोचित आगेके वास्ते २ खच्चर भोटीया तथा खाद्य पदार्थ भी यहींसे लिया गया यह मण्डी चारों तरफ पर्वत मालाओंसे घिरी हुई अति रमणीय सरयूके

तटोपरि स्थापित है ३००-४००छोलदारियां लगी हुई ऊपरके भागमें पहाड़ीपर एक गोनवापरकोटा बंध है। जिसमें यहांके लाम्बा गुरू राजा३००मूर्तीयांके सहित शिष्यवर्ग द्वारा ईश्वराराधना करते रहते हैं मान्धातापर्वतके ठीक नीचे ताकला कोट मण्डी है। व्यास चौंदास दारिमा नैपालके व्यापारी इस मण्डीमें अपना माल बेचने आते हैं। इधर भारतीय घाटेका नाम लीपू लेख है जो कि ताकला कोटसे सात मीलपर है। यही मण्डी यहांकी तीन नदियोंके संगमपर वसी है और इसके तीन तरफ ऊंची २ पहाड़ियां है। यहांकी भूमी भी अत्यन्त फलदा है। नदियोंके जलका नहरों द्वारा सदुपयोग किया है चारोंओर भूमी सींचकर अन्न बोया जाता है। जहां जल नहीं पहुंचता वहांकी भूमी तो भीषण रूप धारण किये बैठी हैं। वर्षा यहां विशेष नहीं होती। जो कुछ अनाज उत्पन्न होता है वह सिचाई द्वारा ही होता है ताकला कोटके जिलेमें ३३ ग्राम है। वे सब नदियोंके किनारे बसे हैं, यहांके घर लकड़ी पत्थरके होते हैं। ऊपरसे मिट्टी पुती रहती है प्रत्येक ग्रामके पासमें जौ तथा मटरके खेत होते हैं "श्री खुर्जरनाथ मठ" ताकला कोटसे छः सात मीलपर है। यात्री एक ही दिनमें यहां पहुंच सकता है। दर्शनीय स्थान बहुत अच्छा रमणीय है । इधर ताकला कोट आदिकी तरफ सर्वथा वृक्षोंका अभाव न जाने क्यों रहता है। वर्फ विशेष पड़नेसे, शीत-कालमें पौदा जलकर भस्म हो जाते हैं भोटीए लोगोंने अपने घर दीवारें खड़ीकर बनाये हुए हैं. ऊपरसे कपड़े तान लेते हैं। जब मंडी-

का ऋतु हो चुकता है तो कपड़ेकी छत्तोंको उखाड़कर अपने २ घरको ले जाते हैं दीवारें खड़ो रहती हैं। बहुतसे घर गुफाओंके अन्दर हैं। जहां जिसको थोड़ी बहुत सुविधा मिली, वहीं उसने खोद खाद लीप पोत कर घरका स्वरूप खड़ाकर लिया है यहां न तो उतनी सरदी है। और न 'हुणियोंका' उतना जङ्गलीपन है, कुछ २ यहां सफाई ज्ञानिमकी अपेक्षासे अच्छी है। नदीके दोनों तरफ ऊंचे किनारे हैं। इन्हीं किनारेपर चौरस भूमीमें ताकला कोट रमणीय भूमी है पूर्वोक्त मठमें लामा लोग स्व शिष्य वर्गों के निवासकर"ओम् माने पद्में हू"को धाराको पान करते रहते हैं। ये भी अपने २ शिष्यवर्गका नाम युक्तिसे चुन चुनकर रखते हैं १६ वर्षकी अवस्थामें उन लड़कोंका परिक्षा लेकर उपाधियां दी जाती हैं जो ब्रह्मचर्य्यका कठिन व्रत लेकर दीक्षित होते हैं उनको "गिलों" कहते साधारए लामाओंको कठोर नियमोंका पालन नहीं करना पड़ता। ऐसे लामा तिब्बती भाषामें दावा कहलाते हैं। तालकाकोटसे दो मीलके फासलेपर "टोओ" का ग्राम है, यहां पर सरदार जोरावर सिंहकी समाधि है। १८४१ ई० में काश्मीर नरेश गुलाव सिंह जी की आज्ञासे सिक्ख सेनाके नायक जोरावर-सिंहने १५०० सैनिकोंको साथ लेकर तिब्बतपर हमला किया था। कैलासजीके पास वरखाके मैदानमें उस शूरवीरने ८००० तिब्ब-तियोंको पराजय कर ताकलाकोटमें आकर डेरा जमाया, बादमें चीन सर्कारने तिब्बती लामाओंकी सहायताके लिये फौज भेजी जोरावर सिंह अपने बहादुर कप्तान वस्तीरामके सुपुर्द अपनी

फौज कर आप कुछ आदमियोंके साथ अपनी धर्मपत्नीको लद्दाख छोड़ने चला गया, ताकि लौट कर निश्चिन्ततासे युद्ध कर सके। यही उसके नाशका कारण था। चीनी फौज तिब्बतियोंकी मददके लिये आ पहुंची और उसने जोरावरसिंहको रास्तेमें आ घेरा। इतनी बड़ी फौजके सामने मुट्ठीभर आदमी क्या कर सकते थे सब चारों तरफ घिर गये, फिर क्या कहना था, जोरावरसिंहजी पंच-तत्वको प्राप्त हो गये उक्त वस्तीरामके लिये अब क्या रह गया, वे अपने साथियोंके साथ भारतको ओर भागे। सामने लीपूलेख बर्फसे ढका था। उसको पार करनेमें बहुतसे सिक्ख सिपाही भी हताश हो गये। थोड़ेसे असह्य कष्ट झेलकर जीते निज घरोंमें आकर प्राप्त हुये। उसी सिक्खनायक जोरावरसिंह की समाधी टोओ ग्राम है। तिब्बती लोग उस भारतपुत्रके वीरत्वकी अबतक प्रशंसा करते हैं और उसकी समाधीको पूजते हैं। ज्ञानिमा मण्डी की तरह यहां भी भोटिये व्यापारी हुणियोंके साथ मालका अदल बदल करते हैं। मानसरोवरके इर्द गिर्द घासके बड़े २ मैदान हैं। इस लिये अधिकांश ऊन विशेष इधर आती है। ताकलाकोटके व्यापारी इस ऊनको खरीदकर टणकपुर मण्डी भेजते हैं। यहां बम्बई, कलकत्ता, कानपुर आदि नगरोंमें स्थित पुतलीघरोंके एजन्ट सरदियोंमें इकट्ठे होते हैं। तिब्बती ऊन यहां खपती है। मण्डीसे अधोभागमें नदी तट पर हम सर्व मण्डलीने ४-५ रात्री निवास किया। अटल स्थित दिगम्बर नागा बाबा मुक्तिगिरीजी भी अपने शिष्यवर्गोंके साथ यहीं पर आकर मण्डलीमें सम्मिलित हुये थे।

और कुछ वैरागी सीताराम मण्डलीसे भिन्न हो स्वतन्त्र कांढासे मुक्तिनाथकी तरफ पधार गये। यद्यपि मुक्तिनाथजीके मार्गसे पशुपती होते हुये काशी आनेका स्वामीजीके सहित कुछ महात्माओं का दृढ़ विचार रहा और बहुत कुछ कोशिश भी करी गई। लेकिन भावी बलवान थी। प्रयत्न करने पर भी उस मार्गका सहसा पथ-दर्शक मिल ही नहीं सका और बहुत दिन चलते २ कुछ महात्मा श्रान्तको भी प्राप्त हो गये थे अतः अल्मोड़ा आदिका पथदर्शक तथा खच्चर आदिका यथोचित प्रबन्ध होनेके कारणसे भाद्र कृ० ४ गुरुवारकी शामको भिक्षासे निवृत हो शंकर भगवान की जय ध्वनी करते हुये आगेके पड़ावको गमन किया।

ॐ—शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रह कारकम्।
शिवमेक पदं नित्यं शिकाराय नमो नमः॥ ३०॥

[पड़ाव ३७ वां पाला गुफा भाद्र० कृ० १५ शुक्र०]

यहांसे पाला गुफा तक मार्ग कुछ सीधा साधारण उतराई चढ़ाईका है। ताकलाकोटसे पालागुफा ४ मील है जल मिलता जाता है अब यहांसे यात्रियोंके विश्रामके लिये साधारण मकानसे मिलने लग जाते हैं यहांसे गरीब आदमीको छोलदारियोंकी कोई आवश्यकता नहीं, यह पालागुफा धर्मशालाके तौर पर है ५ कमरे आगे तथा ५ पृष्ठ भागमें कुछ दूरी पर गंगाका झरणेका जल है। यहां पर भी लकड़ीका अभाव था। अतः निशामुखमें तथा प्रातः चाय सत्तूसे निर्वाह कर अगले पड़ावको गमन किया।

ॐ—वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्ति धरं देवं वाकाराय नमोनमः॥ ३१॥

[मु० ३८ वां कालापानी भाद्र० शु० १ शनिवार]

पालाशुफासे आगे ३॥ मीलकी चढ़ाई है पश्चात् १॥ फर्लाङ्ग का कठिन कांटा काटना पड़ता है दाहिने हाथकी तरफ जो उतार यह मातृ भूमी की सीमाका आरम्भ है बांये हाथका उतार तिव्वत का तरफ आता है अर्थात इस वर्फानी शृंगसे भारत व तिव्वतकी सरहद मालूम होती है दाहिने भागसे निकली हुई नदियां भारतमें आकर क्रीड़ा करती हैं बांई तरफकी यावत् नदीयां तिव्वतमें हिलोरें खाती हैं दोनों भागोंको पृथक करने वाला अति ऊंचा हिमाच्छादित शृंग मन्मोहित है उत्तर पूर्वमें मान्धाताकी चोटियां हैं हम सर्व मण्डलीने वे दृश्य देख लिये जो संसारमें अद्वितीय हैं जिस तिव्वतका नाम सुना करते थे। जिन लामाओं की आख्या सुनते थे उनसे भी भेट करली। जिस कैलासके गुणानुवाद श्रुति स्मृतियों में गाये हैं जिस मानसरोवर की महिमा योगी लोग जानते हैं। तिव्वतकी शोभाका आनन्द अद्भुत् हिमाच्छदित पर्वतोंका शृंग आदि ये सब पूज्यपाद् स्वामीजी महाराज मण्डलेश्वरजीकी अपार कृपासे अवलोकन कर हम सर्व मण्डली कृतार्थको प्राप्त हो चुके। तिव्वत एक विचित्र देश है। संसारमें सबसे ऊंचा और निराला है। उक्त घाटेको पार कर ४ मीलके फासले पर अच्छे २ हरे भरे ऊंचे वृक्षोंकी पंक्ति मिलने लग जाती है। अच्छी २ सुन्दर बूटियां देवदारु, चीड़ आदि बहुत विशेष तौर पर मिलते हैं। रास्तेमें

व्यापारी लोग आते जाते मिलते हैं। इधर इस घाटेमें जगह २ धर्मशालायें हैं। पहाड़ी धर्मशाला मामूली एक मंजिलकी पत्थरों से छाई हुई छोटे छोटे दरों वाली दरोंमें किवाड़ नहीं लगाये जाते जितने दर उतनी ही कोठरियां बनी रहतीं हैं। उनके बनानेमें पहाड़ी तेज हवासे बचनेका ध्यान रखा जाता है। छतोंकी ऊंचाई इतनी कम है कि मनुष्य कोठरीमें सीधा खड़ा नहीं हो सकता, साथ ही कोठरियां तंग भी बनाई जाती हैं, ताकि उसके गरम रखने में विशेष ईंधनकी जरूरत न पड़े, इत्यादि। आत्मचिंतन करते हुये निशामुखमें कालापानी पड़ावमें जाकर प्राप्त हुए । कालापानी मुकामका नाम है सेठ नन्दरामजीकी धर्मशालामें मुकाम किया। ये धर्मशाला नदीके तट पर ठीक मार्ग पर बनी हुई है । लकड़ियों की सुभिस्तासे आज रसोई बड़े प्रेमसे बनाई गई। यहां कई चश्मों का जल निकल २ कर कालीमें गिरता है। भोटिये इन चश्मोंके जलको कालीका स्रोत समझ कर बड़े प्रेमसे स्नान करते हैं। काली नदीका फाटतो बड़ा छोटा है किन्तु स्वरूप चामुण्डा जैसा है। कालीको सरजू भी बोलते हैं यह नदी बड़ी पवित्र मानी जाती है। आजके मार्गमें कई दिनों बाद देवदारु वृक्षकी कतारें देखनेमें आई तिव्बतकी रुण्ड मुण्डता दूर हो गई। कालापानीके पड़ावमें एक रात्री निवास कर प्रातः चाय सत्तू से निवृत हो आगे गर्वियानकी तैयारी करी गई। ताकलाकोटसे गर्वियांन २६ मील हैं। आज गर्वियांनके मार्गमें रास्ता सुगम, मनोहर दृश्य निर्मल आकाश अनुकूल जलवायु अच्छा रहा।

ॐ—यत्र यत्र स्थितो देवः सर्व व्यापी महेश्वरः ।
यो गुरुः सर्व देवानां यकाराय नमोनमः ॥ ३२ ॥

[मु० ३६ वां गर्बियांग भाद्र० शु० २ रविवार]

मार्ग सीधा कुछ उतराई चढ़ाईका है। गर्बियानमें इस ओर आखिरी पोष्टआफिस है जैसे जोहारकी तरफ मनस्यारी सबसे आखिरी पोष्टआफिस है। गर्बियानकी अधित्यका समुद्रतलसे दस हजार फीटकी ऊंचाई पर है। लीपूलेखघाटे द्वारा तिब्बतमें प्रवेश करने वाले व्यापारियों का यह मुख्य स्थान है खेती बहुत अच्छी होती है। इस लिये यहां अनाज तथा अन्य विक्रियार्थ वस्तुओंका संग्रह किया जाता है व्यास और चौदासके लोग यहां आकर ठहरते हैं। और यहींके पोष्ट आफिस द्वारा उनका रुपया तिब्बतमें आता जाता है। मई अक्टूबर तक यहां स्कूल तथा डाकखाना आदि रहते हैं। जाड़ेमें यहांके लोग धारचुलामें चले जाते हैं। यहांके लोगोंके घर व आर्थिकदशा अच्छी है। स्कूलोंमें पढ़ाई अच्छी है अच्छे २ सुयोग्य विद्यार्थी अल्मोड़ा भी यहांसे पढ़ने जाते हैं। वस्ती यहांकी छोटी है। परन्तु कुछ दिनोंमें तरक्कीका हाल मालूम होता है। लेकिन गलियां गन्दी स्कूलके आस पास गन्दगी मकानोंके आंगनभी गन्दे सफाईके तो ये लोग दुश्मन हैं। गर्बियान से २ फर्लांग पीछेकी तरफ वस्तीमें आते समय बड़ा कठिन मार्ग पड़ता है। आज वर्षाने भी बड़ा भीषण रूप धारण कर रक्खा था। अतः खच्चरोंको चढ़ने में बड़ा कष्ट हुआ, स्कूलके अन्दर मुकाम कर भिक्षाकी तैयारी करी आगेके वास्ते कुली भी यहींसे किये गये। ताकलाकोट के खच्चर

व भोटिया यहीं तक थे। पुस्तकादिके ट्रंककी भी विशेष आवश्यकता न समझ कर ब्राह्मणार्पणमस्तु कर दिया गया। अतः यात्रियों को इस कठिन यात्रामें लघु(हलका)सामान रखनेसे ही ठीक पड़ता है। दूसरे दिन स्कूलके विद्यार्थियोंने पूज्यपाद स्वामीजीके अभिमुख उपस्थित हो सविनय उत्थित होकर मधुर वाणीसे ईश स्तुती करते हुये विद्या तथा सद्बुद्धि निमित्त प्रार्थना करी। आपने हार्दिक शुभाशीर्वाद तथा कुछ रुपये पारितोषिकमें दे प्रसाद बंटवा कर उक्त विद्यार्थियोंको सन्तुष्ट कर कुली आदिका इन्तिजाम कर आगेके पड़ावको गमन किया।

ॐ—षड़क्षर मिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिव संनिधौ।
शिव-लोकमवाप्नोति शिवेन सः मोदते॥ ३३॥

[मु० ४० वां बुद्धि भाद्र० शु० ३ रविवार]

गर्ब्याङ्गसे आगे निर्वाणी पहाड़ीका बड़ा विषम और दुर्गम पथ है। वर्षाके कारण मार्गभी कुछ खराब होगया था। अतः यहां से कोई भी कुली साथमें जाना नहीं चाहता था। एक प्रेमीकी सहायतासे कुलीका ठीक ठाक किया गर्बियांग से बुद्धि ४ मील है। ग्रामसे निकलते हीं उतार आरम्भ होजाता है। बुद्धि तक कठिन उतराई है। "बुद्धिप्रदां शारदाम्" बुद्धिमें भी सरस्वती उपासना स्कूल है। स्कूलके अन्दर ही सर्वमण्डलीका मुकाम हुआ। पहाड़ों से वेष्ठित अधोभाग में छोटासा रमणीक गांव है स्कूलके अध्यापक महाशयने तथा एक अबला दीन युवतीने कुछ अन्नकी सेवा करी। निशामुखमें पुष्पांजलीसे निवृत हो प्रातः चाय सत्तू को ग्रहण कर

आत्मतत्वका विचार करते हुये प्रभुको धन्यवाद दे आगे को प्रयाण किया।

ॐ—भजे विशेष सुन्दरं समस्त पाप खण्डनम्।
स्वभक्त चित्त रञ्जनं सदैव राममद्वयम्॥ ३४॥

[मु० ४१ वां रंकुम्पो गुफा भाद्र० शु० ४ सोम०]

यह मुकाम बुद्धिसे करीब १२ मील पर है। रास्ता कहीं २ पर बड़ा खराब मिलता है। चढ़ाई उतराई विशेष पड़ती हैं यद्यपि साधारण पगडण्डो जैसा मार्ग बना हुआ है। लेकिन मध्यमें बहुत स्थलां पर सड़क टूट फूट गई है। विच्छू घास व जंगलकी हरियाली अच्छी देखनेमें आती है। दो तीन जगह जल प्रपातभी मिलते हैं; जो यात्रीके ठीक सिर पर गिरते हैं। इनके नीचे निकलनेसे ठीक पंचस्नान तो हो ही जाता है नोचे कालीका भयंकर नाद गज भरके करीब चलनेकी जगह जिस पर भी काई जमी हुई है। इस कष्टको पथिक यात्री ही जानता होगा। थोड़ी दूरपर माल पूआ पहुंचे यहांके चट्टानके ऊपरभागमें एक झोंपड़ी है जिसमें एक भूदेवजी निवास करते हैं। इसी स्थानको मालपूआ बोलते हैं। इस झोंपड़ीके इर्द गिर्द खेती है। डाकखानेके हलकारे भी यहीं ठहरते हैं। मालपुआ से गलागाड़ आने जाने वाले हरकारे भी यहीं ठहरते हैं। अभी कुछ दिन था, झोंपड़ीमें सर्व मण्डली ठहर भी नहीं सकती थी। अतः यहां पर कुछ विश्राम कर आगे को गमन किया। कुछ दूरी पर आगे दाहिने हाथ पहाड़ी नाला बड़े वेगसे चट्टानों पर से कूदता हुआ आ रहा है बांये हाथ काली

बड़ी चामुण्डा रूप धारण कर चट्टानों पर संहार कर रही है। आगे जा कर कालीका एक जगह पुल टूट गया है। इधरके पुल का चित्र अपने मनमें रखिये। किसी वृक्षकी बड़ी मोटी लम्बी लकड़ीको काट कर नदी तथा नालेके आर पार धर देते हैं। कहीं पर आवश्यकतानुसार तीन चार भी रख देते हैं। ऐसा पुल इधर सुदृढ़ समझा जाता है। इसी पुल पर हजारों रुपयेके मालसे लदे पशु बे खटके आते जाते है। आगे जाकर मार्ग बहुत खराब चढ़ाईका है। अतः बोझे वाले सब पीछे रह गये। कुछ मूर्तियां आगे बढ़ गईं कुछ मध्यमें तथा कुछ पीछे मार्गमें रह गईं आगे मुकामका निश्चय न होनेसे चलते २ संध्या हो गई थी कृष्ण पक्षकी काली घनघोर घटा वाली रात्री आकर प्राप्त हुई। अतः जिसको जहां पर्वत पर जगह मिली उसने वहीं किसी पत्थरके आसरेसे पड़ाव कर लिया ४-५ मूर्ती कुठारीजीके साथ दो मील आगे को चली गई थीं। १०-१२ मूर्ती स्वामीजीके साथमें रह गईं। ३ मूर्ती कुलियोंके साथ १॥ मील पीछे रह गई। कृष्णकी सर्वरीने सबको भिन्न कर ही दिया। खाद्य पदार्थ सब कुलियोंके साथमें रह गया था। अतः आजभी रोटीका अनध्याय रहा। श्री स्वामी जीके सन्निधीमें रहने वाले महापुरुषोंने निशामुखमें नदी तट पर अधोभागमें साधारण गुफाके नीचे निवास कर क्षुधा से व्याकुल रात्रीमें शिश्ना [बिच्छू घास] का साग बनाकर उसको खाकर ही निर्वाह किया। कठिन सर्वरीके बीत जाने पर प्रातः लम्बोदर की चतुर्थी आकर प्राप्त हुई, सविधी एक दन्त गणेशका पूजन कर

प्रेमका प्रसाद बांटा गया उपरोक्त पश्चिमी ३ मूर्ती व कुलीके आजाने पर गुफासे पृष्ठ भागमें भिक्षाकी तैयारी करी मध्याह्न में भिक्षासे निवृत्त हो प्रकृति माताको धन्यवाददे शिवोऽहम् सोऽहम् की जय ध्वनी कर ऊंचे २ लम्बे चौड़े पत्थरोंको लांघते हुये आगेको गमन किया। पूर्वोक्त काली [श्यामा] नदीका सेतु टूटने से मार्गमें उतराई चढ़ाईकी धावन क्रिया खूब हुई। इस पथिक की विषमताको पथिक यात्री ही जानता होगा।

ॐ अभयं देहि गोविन्द, वन्हि संहरणं कुरू।
वयं त्वांशरणं यामो, रक्षनः शरणागतान्॥ ३५॥

[मु० ४२ वां विष्णु गिरी, गुफा निर्वाणी पहाड़का शिखर भाद्र० शु० ५ भौमवार]

रंकुम्पो गुफासे एकदम १॥ मीलकी चढाई, ३ मील सीधी उतराई कठिन पड़ती है। वृक्षोंकी शाखाओंकी सहायता लेकर चलना पड़ता है, आगे चढ़ाई चढ़ उच्च शिखर पर पहुंचे। पसीनों से तर हो गये। यहां विश्रामकी जगह व आब हवा अच्छी है, पास ही में एक पाषाण शिला देवताकी थी। यह शिला देखनेमें साधारण थी, लेकिन महत्व सुदर्शन चक्र जैसा था, सहचारी भोटियों अनुचरोंने एकवार सबको समझाया कि भगवन्! ये शिला देवमयी नमस्कारणीय, पूजनीय, हैं स्पर्श करना नहीं होता है स्पर्श करने से सहसा वर्षाका आगमन बड़े वेगसे हो जाता है, जिससे मनुष्य बड़े कष्टको प्राप्त होता है, कुछ १-२ मूर्तियोंने विश्वास न करते हुये पुष्प पत्ती चढ़ा स्पर्शकर नमस्कारादि कर लिया, ये प्रत्यक्ष देव

थे। ज्यों ही यहांसे आगेको गमन किया एकदम चारों तरफसे घनघोर बादल उमड़ २ कर वर्षाका पूर्व रूप दिखाई दे शनैः धारा प्रपात् होने लगा। अभी जाना बहुत दूर था, इस मार्गसे विश्वम्भर हीं बचावें, अब यहांसे उतार शुरू होता है, वर्षाके कारण मार्गमें फिसलन व कीचड़ हो गई, रास्ता कहींपर गज भर है कहीं आध गज टूटा हुआ पांव फिसलते हैं ऊपर चढ़ने व उतरनेमें पौधोंकी टहनियां पकड़ २ कर चढ़ते हैं, यदि कहीं भूलसे किसीका पैर इधरसे उधर हो जाय तो फिर सैंकड़ों फीट नीचे घाटीमें जाकर हड्डी २ चूर २ हो जाय, रास्ता कीचमय है, दूरसे काली नदीको नीचे २ मन्द मन्द आवाज आती है चारों तरफ मेघ मण्डल आच्छादित हैं, पूर्वकी तरफ सामने नैपाळके पहाड़ हैं। कमजोर दिलवाले मनुष्यको तो यह घाटी देखकर ही चक्कर आ जाय, मार्ग बड़ा भयंकर घास पकड़ २ कर चढ़ना उतरना होता है। हमारे साथके पथ दर्शकोंने तो ऐसा मार्ग धर लिया कि जिधर बकरी भेड़ भी कठिनाईसे जा सकें एक सीधे ऊंचे चट्टानकी भीत पकड़ २ कर चले, ऐसा रास्ता सारी यात्रामें निर्वाणी जैसा वेढब मार्ग कहिं नहीं मिला। ऐसे मार्गमें सब शिव शिव रटते हुये ही गमन करते हैं। यदि गिर भी जाय तो परम पिताका नाम स्मरण करते हुये प्राण निकले। कालीके पासमें भी आकर उतार बड़ा कठिन है।

नोट—यह मार्ग विशेष बोझा वालोंके लिये भय दायक है। ऐसे मार्गको अवलोकन कर परोपकारी वासुकी ब्र० जीने ईश प्रार्थना करते हुये १।) रुपयाका प्रसाद बांटना कबूल किया कि

अगर पूज्यपाद् स्वामीजी महाराज सर्व मण्डलीके सहित निर्वि-घ्नता पूर्वक पड़ावमें पहुंच जायेंगे, तो हर्षता पूर्वक १।) रु० का प्रसाद् बांट दिया जायगा। इसी प्रकार कुठारीजीके सहित कई मूर्तियोंने सात्विक मन्तव्यता धारण की थी क्योंकि उक्त दुर्गम मार्गमें कई दफे कुछ मूर्तियां गिरनेसे बच गईं, अपने इष्ट देवताको स्मरण करते २ कठिन मार्गको तै कर निशामुखमें ७ बजें पड़ावमें आकर प्राप्त हुये, श्यामविहारीकी कृष्ण पक्षकी रात्री थी, पीछे रह जानेके कारण श्री स्वामी रतनानन्द्जो तो एक मूर्तीके सहित शिव शिव करते ऊपर ही रह गये,कष्टकी रात्रीको शीत,वर्षामें एकांत पर्वत ऊपर ही विताया। वहां सोने, उठने वैठनेका तो विशेष ठिकाना ही नहीं था, यहां नीचे भी पड़ाव साधारण पत्थरकी आड़में था। पत्थरके नीचे ही ईश्वरको धन्यवाद दे रात्रीमें गुजारा किया यहां बकरियोंकी मैंगिनीमें ही उठना वैठना हुआ इस पड़ावमें जल का सुभीता अच्छा है, कालो नदी तथा झरनेका जल मिलता हैं। यहां की सरकारसे प्रार्थना है कि उक्त काली नदीका पुल शीघ्र बंधवाकर तैयार करवा दें जिससे यात्रियोंका ये महान कष्ट दूर हो जाय। इसी निर्वाणी पहाड़की चढ़ाई उतराईमें कितने प्राणी पञ्चतत्त्वको प्राप्त हो जाते हैं, लेकिन धन्य हैं बोझावाले तथा डाकवाला तो प्रति दिन इसी दुर्गम मार्गसे हथेलीपर जानको रख कर अहर्निश आवा गमन किया करते हैं। दूसरे दिन रतनानन्द्जी के आ जानेपर शंकर भगवानकी जयध्वनी करते हुये आगेके पड़ाव को गमन किया।

ॐ त्वं ब्रह्म परमं धाम निरीहो निरहं कृतिः ।
निर्गुणश्च निराकारः साकारः सगुणः स्वयम् ॥ ३६॥

[मु० ४३ वां शंखुला गांव भा० शु० ६ बुधवार]

विष्णुगिरी डार निर्वाणीसे शंखुला ६ मील है, २ मील चढ़ाई बाकी उतराई है । मार्गमें साफ सरकारी सड़कका रास्ता है, गर्वियानके प्रधान पटवारी साहिबजीने सेवा शुश्रूषा निमित्त इस गांव के प्रधान नैनसिंहजीके नाम चिट्ठी दी थी, अतः इस भक्तने मण्डलीके पहुंचने पर यथोचित सेवाकर पुण्यका लाभ उठाया, यहां की हरियाली खेती बहुत रौनक देखनेमें अच्छी प्रतीत होती हैं लेकिन जलका यहां भी कष्ट है बहुत नीचे उतार उतरकर जल लाना पड़ता है उपरोक्त कुली यहां तक किये गये थे । अतः इनको ४॥ रुपयेके हिसाबसे ४ कुलियोंको १८ रुपया देकर यहांसे विदा किया आगेके वास्ते यहांके प्रधानजीके उद्योगसे ४ कुली और किये गये, भिक्षाके अनन्तर पुष्पाञ्जलीसे निवृत्त हो; शयन किया । यहां भी सर्वरीमें मेघ मण्डलने वर्षा बरसाकर मण्डलीका अच्छा स्वागत करा । दूसरे दिन प्रातः काल ही काली नदीकी शाखाओंको पार करते हुये शिरखा गांवकी तरफ प्रयाण किया ।

ॐ शान्तः सन्तः सुशीलाश्च सर्व भूत हिते रताः ।
क्रोधं कर्तुं न जानन्ति एतद्ब्राह्मण लक्षणम् ॥ ३७ ॥

[मु० ४४ वां शिरखा गांव-भाद्र शु० ७ गुरुवार]

ये गांव शंखुलासे ८ मीलपर है; करीब १॥ मीलकी चढ़ाई बाकी उतराई पड़ती है । मध्यमें हरा भरा जङ्गल मन्मोहित

मिलता है, मार्ग भी सड़कका है, छोटी वड़ी हरें भी प्रायः इधर मार्गमें बहुत मिलती है, अच्छे २ सुन्दर स्वच्छ झरणोंका पानी पीनेमें आता है। वर्फ की ऊंची २ शिखरें रुण्ड मुण्ड पहाड़ियां अब इधर देखनेमें नहीं आती यह शिरखा गांव जन संख्या आवादीमें यहां की सजावट अन्यत्र स्थलोंकी अपेक्षासे बहुत अच्छी है। ३०-४० घरकी वस्ती भोटिओंकी है, यहांके प्रधान अधिकारी भी भोटिआ जाति ही हैं। कुछ भक्त मण्डलीने एकत्रित हो हम सब मूर्तियोंके रहनेका प्रवन्ध मकान आदिका किया; यहांके कुछ व्यक्तियोंकी अन्नादिकसे सेवा करने की बहुत अभिलाषा रही, लेकिन हमलोगोंने विशेष न ठहरते हुये एक रात्री ही निवास कर दूसरे दिन प्रातः काल ही तैयारी कर शोसा गांवको चले गये, यहां पानी झरने व नालेका मिलता है, पहाड़की शोभा प्रकृतिकी बनावट ऊंची नीची तिरछी बहुत अच्छी मालूम होती है कहीं स्थान २ पर ऊंची चौड़ी पहाड़ी भूमिपर भोटिओंकी झोंपड़ी बनी है। बिच्छू घासके व भंगके झाड़के तो इधरसे जहाजके जहाज भर लो तो कुछ मालूम न पड़े।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामय।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित् दुःख भागभवेत्॥ ३८॥

[मु० ४५ वां शोसा गांव भाद्र शु० ८ शुक्र]

शिरखा गांवसे २॥ मीलपर शोसा गांव है। मार्ग सीधा पहाड़ी सड़कका कुछ उतराई चढ़ाई भी पड़ती है, यह गांव छोटासा २०-२५ घरकी वस्ती रमणीय नदीके तटपर स्थापित है लेकिन जलका

यहां भी कष्ट है। बहुतदूरीसे लाना पड़ता है,बेचारे दूरसे जाकर जल लानेवाले परेशान हो जाते हैं। मक्काकी तथा धान्यादि की खेती विशेष होती है, यहांके राजाधिराज श्रीयुत् पटवारी साहिबजीने निज सेवको द्वारा श्रद्धा भक्ति युक्त कुछ खाद्य सामान मंगवाकर बड़ी प्रीतिसे महात्माओंको अर्पण कर सेवाका लाभ उठाया। आपकी श्रद्धा भक्ति स्मरणीय है, आप जातिके अत्युत्तम भूदेवजी थे। पूर्वोक्त ४ कुली भी यहीं तक किये गये थे, अतः ४ बोझेवालेको यहींसे फिर वन्दोवस्त कर दूसरे दिन हरिचिन्तवन करते हुये आगेको गमन किया गया। यहांकी शीतल वायु पवित्र आव हवा बहुत अच्छी है। इत्यादि—

ॐ—सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे काम रूपिणी।
विश्वरूपी विशालाक्षी विद्यां देहि सरस्वती ॥ ३६ ॥

[मु० ४६ वां पङ्गु गांव भाद्र० शु० ६ शनी]

शोसासे पङ्गु करीब २॥ मील पड़ता है एक मीलकी उतराई बाकी चढ़ाई है। मार्गमें अच्छी सुन्दर खेती निर्मल झरणोंका जल इतस्ततः हरियाली मिलती जाती है। यहां पर विद्या वृद्ध्यर्थ मिडिल हाई स्कूल है आस पासके विद्यार्थी बड़े शौकसे यहां विद्याध्ययन करते आते हैं लेकिन ऐसी पवित्र रमणीय भूमीमें भी न जाने गीर्वाणी भाषाका क्यों अनादर हो रहा है। आङ्गल भाषाने अपनी टांग घुसेड़ रक्खी है कि यहांके वासिन्दा व पठित विद्यार्थी अंग्रेजी कायदेको ही पसन्द करते हैं। हिन्दी आदिकी पढ़ाई सब स्कूल तरह की थी श्रुति स्मृतियोंका पठन पाठन ब्रह्म

विद्या संहिता आदिकी घोषणा तो किसीके मुखारविन्दसे सुनाई नहीं दी अतः ईश्वरसे प्रार्थना है कि हे विभो! ऐसी परम पवित्र रमणीय भूमीमें कुछ देव वाणी संस्कृत भाषाको भी जगह मिल जाय तो वहुत अच्छा है। जिससे हमारे भाईयों के अन्दर धार्मिक सद् बुद्धिका विस्तार होने लगे। यहां पर भी प्रधानाध्यापक पं० मानसिंहजी ने गांवसे श्रद्धापूर्वक निज भक्तों द्वारा अन्नादिक से सेवा शुश्रुषा करवाई जलका सुभीता और आव हवा भी यहां की वहुत अच्छी है। खाद्य पदार्थ भी प्रायः थोड़ा वहुत सब यहां प्रताल करने से मिल जाता है। अच्छे पठित विद्यार्थी सुयोग्य होने पर अलमोड़ा आदि भी भेज दिये जाते हैं। विद्यार्थियोंके वास्ते वोर्डिङ्गहाउस व पाठशाला का साधारण प्रवन्ध है। निशामुखमें सर्व मण्डली भिक्षासे निवृत हुई कद्दू का शाक प्रायः इधर बहुत होता है कद्दू का तो इधर राज्य ही है। अयाचित ही आज वहुत से कद्दू आकर प्राप्त हो गये थे अतः विशेष ग्रहण करनेसे कुछ मूर्तियोंको अजीर्णकी शिकायत हो गई थी। यहांके सामने वाले पर्वतों पर दृष्टि डालिये क्या ही हरियाली मन्मोहित जड़ी बूटियों से पूरित पर्वत चोटियां आकाशसे बातें करती हुई नजर आती है। नीचे रसातलमें अच्छे २ जल पूरित झरणें हर हर रटते हुये गमन कर कालीकी धाराको बढ़ा कर आल्हादको प्राप्त हो रहे हैं। यहाँका अलौकिक दृश्य व आव हवा बहुत लाभदायक है। दूसरे दिन गमन करते समय उक्त प्रधानाध्यापकजीके सहित सुशील विद्यार्थियोंने कुलियोंका बन्दोवस्त करते हुये ॐ नमोनारा-

यणाय की प्रेम भरी दृष्टी से सहर्ष उच्चध्वनी करते हुये पुनः पुनः नमन कर अच्छा स्वागत किया कुलियोंकी बड़ी धींगाधींगी होने से चलनेमें बड़ा विलम्ब हो गया था ।

ॐ—जितन्ते पुण्डरीकाक्षः नमस्ते विश्व भावन ।
सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महा पुरुष पूर्वज ॥ ३९ ॥

[मु० ४७ गांव खेला भाद्र० शु० १० रवि०]

पङ्गू से खेला ६ मील हैं ४॥ मील उतराई १॥ मील चढ़ाई साधारण विशेष कठिन नहीं है। मार्ग सड़कका हरा भरा जंगल मिलता जाता है। सड़क कई स्थलों पर टूटी हुई मिलती है। धौली गंगा यहां दारिमासे आकर कालीमें मिली है । चौदाससे ५००० फीट नीचे आगये होंगे काली नदीका पुल पार कर पुनः आगेसे चढ़ाई शुरू होती है। खेलाअच्छा साधारण ग्राम है। एक फर्लांगकी दूरी पर पोष्ट आफिस भी है। दारिमा और चौदासका यह नाका है यहां से अस्कोट ३० मील अस्कोटसे अल्मोड़ा व टणणकपुर ७० मीलके करीब होगा कालो भी विचित्र नदी है। इतनी बड़ीं २ पहाड़ी नदियां इसमें मिलती हैं लेकिन ये एकसी ही सदा बनी रहती है। भयंकर नदी है सड़क कुछ खराब होनेकी वजहसे मजदूर लोग मरम्मत करते रहते हैं। यहां खेलामें भी एक सर्वरी निवास कर दूसरे दिन तपोवनको प्रयाण किया।

॥ ॐ | यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः ।४०।

[मु० ४७ तपोवन भाद्र शु० १० रवि]

यह पड़ाव बीचमें हम लोगोंने विशेष किया। यहां पर ठहरने

का विचार नहीं था लेकिन स्थानीय महात्माकी रमणीय पवित्र देव भूमि तथा आपकी श्रद्धा भक्तिको अवलोकनकर यहां भी एक मुकाम कर दिया। खेलासे धारचुला १० मील है। धारचुलासे पीछे १॥ मील तपोवन पड़ता है। खे०से तपो० तक मार्ग साधारण सीधा सड़क कहीं २ टूटी मिलती है। जलके झरणे प्रायः बहुधा मिलते जाते हैं। मक्का जौ-लवाकी खेती अच्छी होती है। यह शुभ स्थान एक सुपात्र बंगाली महात्माने चेताकर यात्रियोंके उपकारार्थ राम कृष्ण सेवाश्रम डिस्ट्रिक्ट बोर्डकी तरफसे औषधालय खुला हुवा है। इसकी सन्निधीमें अधोभागकी तरफ एक गौशाला, पाकशाला तथा शंकर भगवानका देवालय है। एक तरफ कालो नदीका कच्चा घाट है। स्थानीय स्वामी महात्मा बहुत सुशील उत्साही धर्मात्मा हैं। आये गये अभ्यागतकी यथोचित सेवाकर हो दिया करते हैं। हम सत्रे मंडलीकी भी आपने एक दिन अन्नादिककी सेवा बड़े प्रेमसे करी। आप धन्यवादके पात्र हैं। आपकी श्रद्धा भक्तिको अवलोकन कर यहां भी एक मुकाम देवालयमें कर पुनः द्वितीय दिन धारचुलाको गमन किया, यहांके उक्त महात्माजी स्वयं पधार कर मण्डलीके स्वागतार्थ प्रथम धारचुला पहुंचे थे।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च स्कन्दस्तस्मै वै नमो नमः ॥४२॥

[मु० ४८ धारचुला भाद्र शु० ११ सोम]

तपो०से १॥ मील मार्ग सीधा गंगाके तट ही तट सुन्दर झरणोंको अवलोकन करते हुए जाना पड़ता है यहांके प्रेमी लोग मंडलीको

बाट देख रहे थे। अच्छा स्वागत किया, ये ४०० के घरके करीब आबादीका अच्छा कस्बा है। कालीके उस पार नैपाल राज्य है। व्यास चौंदासके भोटीए शीत कालमें यहीं ठहरते हैं। पं० प्रेम वल्लभजी बड़े श्रद्धालु सज्जन भक्त हैं, आप स्वामीजी महाराजकी वेदान्तकी मुक्तिप्रद अमृत रूपी धाराको श्रवण कर बहुत ही संतुष्ट हुए सब मण्डलीका यथोचित ठहरनेका तथा चाय, पानीका प्रबन्ध कर व भिक्षाका बन्दोबस्त किया, आज परिवर्तनी एकादशीका दिन था, अतः आपने बड़ी प्रीतिसे शीघ्र ही फलाहार तैय्यार कराया मध्यान्हमें मोहन भोग पूरी शाक केला, चटनी, मट्ठा, दुग्धादिकी भिक्षा बड़े प्रेमसे हुई, पंक्तिमें मांगलिक श्लोक उच्चारण करते हुए, पंक्ति समाप्त हुई, निशामुखमें भी चाय आदिसे सेवा भक्तिसे करी, पहाड़में ये आपकी श्रद्धा भक्ति सेवा मंडलीकी प्रथम प्रथम हीं थी, पुनः दूसरे दिन ४ कुलियोंका यहींसे प्रबन्ध कर आगेके पड़ावको गमन किया गया, उपरोक्त कुली ८ रु०में आस्कोटतक ठहराये थे, यहांकी आवहवा, आम पीपलकी,हरियाली शोभा अच्छी है। यहांसे आगे कुछ२ गर्मी विशेष बढ़ती जाती है। झरणेका जल तथा गंगाजल यहां भी दूरसे लाना पड़ता है।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चेन्द्रस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ४३॥

[मु० ४६ बलवाकोट भाद्र शु० १२ भौम]

धार चुलासे बलवाकोट १ मील है। मार्ग सीधा साधारण कहीं २ पर चढ़ाई उतराई पड़ती है। मार्गमें धान्यकी खेती

विशेष मिलती जाती है। खेतोंके मध्यमें बस्तीसे कुछ दूरी पर पाठशाला है। यहीं पर मुकाम हुवा, प्रधान हरिसिंहजीने श्रद्धा पूर्वक अन्नादिकसे यहां भी सेवा यथोचित करी, यहां कुछ गर्मी विशेष है; अतः रात्री निवास कर दूसरे दिन आस्कोटको गमन किया उपरोक्त पाठशालामें पढ़ाई साधारण है। विद्यार्थी की योग्यता देख कर अलमोड़ा भेज दिये जाते हैं।

अथ कस्मादुच्यते ओङ्कारः। यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणा नूर्ध्व मुत्क्रामयति तस्मा दुच्यते ओङ्कारः॥ ४४॥

[मु० ५० अस्कोट भाद्र शु० १३ वुध] १४ गुरुवार।

बलवाकोटसे अस्कोट १० मील है। सात मील तक मार्ग सीधा तथा कुछ उतराईका है। बाकी ३ मील की चढ़ाई हैं। मार्ग सड़कका साफ मध्यमें ५ मील पर काली तथा गौरीका संगम है। प्रधान तीर्थ स्थान है ऊपर भागमें शंकरजीका मंदिर भी बना हुआ है। कालीके किनारेसे जोहारको रास्ता जाता हैं, जो लोग टणकपुरके मार्गसे शोर होकर अस्कोटसे जोहार रास्ते कैलास दर्शन करना चाहते हैं, वह इसी मार्गसे मनस्यारी पहुंच सकते हैं। अच्छी सुन्दर आबहवा ग्रहण करते हुए हम सर्व मण्डली मध्यान्हमें अस्कोट जाकर प्राप्त हुए। अस्कोट ताकलाकोट से ६ मील हैं अलमोड़ा ७ मील टणकपुर रेलवे स्टेशन करीव ८ मील होगा आस्कोट पहिले बड़ी रियासत थी, और इसकी प्रभुता नैपालसे काबुल तक फैली हुई थी समयके हेर फेरसे अब ये एक छोटेसे ताल्लुकेके बराबर हैं। यहांके क्षत्रियोंका

सम्बन्ध नैपालके क्षत्रियोंके साथ होता है ऊंचे स्थल पर इतस्ततः पोष्ट आफिस न्यायालय दरबार गृह आदि सब सफाईके तौर पर बने हुए हैं आसपास धान्यकी खेती बहुत विशेष होती है प्रथम एक चिट्ठी पं० प्रेम वल्लभजीकी यहां पहुंच गई थी। अतः सेवक लोग स्वागतार्थ मण्डलीकी बाट देख रहे थे। आस्कोट पहुंचने पर कुछ भक्तोंने स्वागत करते हुए मण्डलीके ठहरनेका इन्तिजाम पाठशालामें ही किया यहांके राजा साहेब बहुत साधु भक्त तथा सत्संगी हैं। आये हुये अभ्यागतोंका यथोचित आंदर सत्कार भी प्रेमसे कर ही दिया करते हैं पूज्यपाद् स्वामीजी का आगमन सुन कतिपय राजकर्मचारी भक्त मण्डली सत्संगके निमित्त दर्शनार्थ पधार कर अमूल्य सतसंगका लाभ उठाते रहे माननीय डिप्टी कलक्टर साहेबजी व पुण्यशील धर्मपत्नी रानी साहिबाजीकी तरफसे अन्नादिककी सेवा बड़े प्रेमसे हुई। उक्त रानी साहिबाजीकी धर्म पताका कीर्ती इतस्ततः विस्तृत हो रही थी आपकी बचपनसे ही धार्मिक वृत्ति व साधु सेवामें अत्युत्कट प्रेम है। सर्कारी स्कूलको २०००) में लेकर धर्मशाला नाम कायम कर साधु अभ्यागतोंको अर्पण कर दिया, अतः अतिथि मण्डल अभ्यागतको यहां भी ठहरनेका अच्छा सुभीता हो गया हैं।

नोट—मण्डलीके साथ उपरोक्त दो स्वामी भक्त भोटीया कुत्ते जो कि बद्रीनाथ से ही साथमें हो गये थे, इनकी भी यात्रा परिक्रमा सब पूरी हो गई थी,अब ये नीचे आनेमें दिनों दिन गर्मीसे परेशान हो गये थे, अतः इनके अनूकूल यहां सुभीतेकी जगह देख

कर,राजदरबारके सुपुर्द कर दिया गया चातुर्मास भाद्र पद यहां समाप्त हो गया था,दो दिन निवास कर पूर्णमासी पर हंसेश्वर दर्शनार्थ गमन किया, टणकपुर वालोंको ये मार्ग अच्छा पड़ता है।

॥ अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापी । यस्मादुच्चार्य माण एव यथा स्नेहेन पलल पिण्ड मिव शान्त रूपमोत प्रोतमनु प्राप्तो व्यति षक्तश्च तस्मादुच्यते सर्वव्यापी ॥ ४५ ॥

[मु० हंसेश्वर भाद्र शु० १५ शुक्र पड़ाव ५२ वां]

अस्कोटसे हंसेश्वर महादेव रमणीय स्थल ३ मील हैं। तीन मील तक उतराई कुछ थोड़ी चढ़ाई मामूलीसी पड़ती है कालीकेतट पर पुरातन महादेवजीका स्थान दर्शनीय है,पासमें सुन्दर बगीचा, तथा अश्वत्थवृक्ष हरियालीसे सुशोभित है। श्री महन्त हंसगिरिजी की तरफसे यथोचित अभ्यागतोंका सत्कार यहां भी हो जाता है। हमलोगोंकी उपस्थितिमें भिक्षाके पश्चात् निशामुखमें अमरावतीके अधिपती इन्द्र भगवानने तो मूसलाधार वर्षा बरसाकर अच्छा स्वागत किया। कैलास यात्रा समाप्त हो गई थी। पवित्र स्थानको अवलोकनकर पूज्यपाद् स्वामीजीके अनुग्रहसे यहांपर विशिष्ट-मालपूआ पूरी-शाक-चटनी आदिकी रसोई करीब ४५ मूर्तियोंकी उपस्थितिमें बड़े समारोहके साथ हुई। मांगलिक श्लोक ध्वनी करते हुए पंक्ति समाप्त हुई। यह स्थान भी एकान्त निर्जन भूमिमें मन्मोहित है। अतः दो दिन निवासकर पुनः द्वितीय दिन गांव दिगरामें गमन किया।

ॐ सच्चिदानन्द रूपाय भक्तानुग्रह कारिणे ।
माया निर्मित विश्वाय महेशाय नमो नमः ॥ ४६ ॥

[मु० ५३ वां—गांव दिगरा आश्विन कृ० २ रवि]

हंसेश्वरसे दिगरा ८ मील है । कुछ दूरतक उतराई चढ़ाई ६ मील उपरान्त २ मीलपर सड़कका मार्ग मिल जाता है । यह गांव अच्छा साधारण है । ठा० लालसिंहजीके उद्योगसे अन्नादिककी सेवा यहां भी अच्छी हुई । अभ्यागतोंकी सेवामें आपका उदार चित्त है ।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च वायु स्तस्मै वै नमो नमः॥४७॥

[मु० ५४ सत्तगढ़ आ० कृ० ३ सोम]

दिगरासे सत्तगढ़ ६ मील है । २ मील उतराई ४ मील चढ़ाई मार्ग सड़कका है । यह वस्ती अच्छी साधारण सब ब्राह्मणोंकी है । धान्यादिकी खेती अच्छी होती है । पानी पीनेको साफ झरणेका मिलता है । ये लोग वहते झरणेको एक स्थानमें रोककर छोटासा घर बनाकर जलकी रक्षा करलेते हैं । पं० विष्णुदत्तजीके उद्योगसे भिक्षाकी सेवा बहुत अच्छी हुई । सब सुपात्र ब्राह्मणोंकी बस्ती होनेसे चित्त बड़ा प्रसन्न हुवा । अतः एक सर्वरी निवासकर पतितपावन चण्डकेश्वरजीको दर्शनार्थ गमन किया ।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सूर्य स्तस्मै वै नमो नम ॥४८॥

[मु० ५५-५६ चण्डकेश्वर आ० कृ० ४ सोम]

सत्तगढ़से चण्डकेश्वर १० मील है । मार्ग सीधा सड़कका है । मध्यमें गांव आदि सब मिल जाते हैं । ये सड़कसे १॥ मील

बांई तरफ रमणीय पुरातन चण्डकेश्वर महादेवका स्थान है। खेतोंखेत जाकर बगीचेमें दर्शन होते है। यहांसे बाजार २ मील पड़ता है। इतस्ततः ब्राह्मणोंकी बस्ती भी एक-एक दो-दो मीलपर पड़ती है। स्थानीय श्रीयुत् स्वामी देवराज गिरीजी, सुशील सत्संगी-उद्योगी महात्मा हैं आप तहां चिरकालसे निवासकर भक्तोंको सदुपदेश करते रहते हैं। बड़े प्रेमके साथमें सर्व मण्डलीको देवालयमें दो दिन ठहराकर भिक्षाका अत्युत्तम लाभ लिया। यह भजनके योग्य निर्जन पवित्र भूमि थी। अतः कुछ दिन ठहरनेका विचार हुवा था। लेकिन प्रकृति माताने निज ओर आकर्षण दो रात्री निवास करवाकर आगे गन्नू ग्रामको गमन किया। यहांसे आगे खेतोंखेत गमनकर आगे मार्ग सड़कमें मिल जाता है।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सोम स्तस्मै वैं नमो नमः ॥४९॥

[मु० ५८ गन्नूगांव आ० क्र० ६ गुरू]

चण्डकेश्वरसे गन्नू ८ मील है। सड़कका रस्ता है। साधारण उतराई चढ़ाई भी पड़ती है। हरयाली खेती मिलती जाती है। यहां ग्रामाध्यक्ष पं० देवीदत्तजी पटवारी महोदयने सर्वमण्डलीका स्वागतकर अन्नादिकसे भिक्षाकी सेवाका लाभ उठाया। आप भजनानंदी तथा साधुभक्त हैं। अभ्यागतोंकी सेवामें आपका भी उदार चित्त है। लेकिन जलका यहां भी बहुत कष्ट है। बहुत दूरसे नीचे जाकर झारीमेंसे लाना पड़ता है। परन्तु इस कष्टको तो सेवक अपने अनुचरों द्वारा करवाकर स्वयं सह लेता है।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् येऽष्टौ ग्रहास्तस्मै वै नमो नमः ॥५०॥

[मु० ५९ छीणागांव आ० कु० ७ शुक्र]

गन्नूसे छीणा १० मील है चार पांच मीलतक उतराई पुनः १-२ मीलतक सीधा मार्ग सड़कका । फिर ३ मीलतक चढ़ाई है । मध्यमें गांव तथा जल मिलता जाता है । आगे सरजू नदी बड़े वेगसे हर-हर करती हुई गमन करती है । यह उपरोक्त मार्गमें काली इस प्रान्तमें सरजू व शारदाके नामसे विख्यात है । इसकी लहरोंको देखकर बड़ा चित्त प्रसन्न हुवा । अतः इसमें धार्मिक क्रियासे निवृत्त हो कुछ पेट-पूजाकर मध्यान्हमें छीणा पहुंचे । ये छोटा ग्राम है । पहाड़ोंपर इतस्ततः ३+४ झोपड़ीसी पड़ी हुई हैं । जलका कष्ट है । एकदम नीचेसे लाना पड़ता है । खादय पदार्थकी बटेश्वर महादेवकी सन्निधीमें सिर्फ एक दुकान है । इसी दुकानसे लेकर खादय सामानका गुज़ारा करना पड़ता है । स्थान रमणीय है । कुछ दूरीपर डाक बंगला सर्कारी है । इस कठिन भूमीमें भी आत्मचिंतन करते हुए एक सर्वरी निवासकर आगेके पड़ावको गमन किया ।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् ये चाष्टौ प्रति ग्रहा स्तमै वै नमो नमः

[मु० ६० लोहाघाट आ० कु० ८ शनी]

छीणा गांवसे लोहाघाटतक ९ मीलका फ़ासला है मार्ग सीधा सड़कका कुछ उतराई चढ़ाई भी मिलती जाती है । मध्यमें गांव तथा झरणोंका जल बराबर मिलता जाता है । यहींपर प्रधान पुरातन श्रीरिखेश्वर महादेवजीका देवालय दो झरणोंके

संगमपर श्मशानकी सन्निधीमें अति दर्शनीय है। भक्त लोगोंका आगमन यहां दर्शनार्थ सर्वदा बना ही रहता है बस्तीसे १॥ फर्लाङ्ग अधोभागमें एक तरफ ये देवालय है। सत्संगी अभ्यागत महात्मा भी प्राय: यहांपर निवास किया करते हैं। धर्मशाला आदिका भी यथोचित प्रबन्ध है। हम सर्वमण्डलीका भी यहीं मुकाम हुवा। श्रीयुत् महन्त गंगागिरीजीके उद्योगसे भक्त सेवकों द्वारा दोदिन पर्य्यन्त अच्छी भिक्षादिकी सेवा होती रही। यह बड़ी बस्ती चारों तरफ पर्वतमालाओंसे घिरी हुई आसपास छोटे २ ग्रामान्तरोंसे वेष्ठित अतिरमणीय पोष्ट आफिस तार- स्कूल न्यायालय बाज़ार आदि सब अच्छे बने हुये है। डिप्टीकलकर तथा यूरोपियनके अच्छे २ बंगले आब हवा परिवर्तनके लिये भी बने हैं। नवरात्रीमें रामलीलाका शुभोत्सव भी यथोचित धूमधामसे मनाया जाता है। आगमनसे दूसरे दिन भक्त मण्डलीने श्रीमण्डलेश्वरजीके शुभा-गमनको श्रवणकर निशामुखमें सहर्ष डिप्टीकलकर वकील अच्छे सुयोग्य पठित व्यापारी दुकानदार आदि एकत्रित होकर सत्संग निमित्त पधारे बड़े प्रेमके साथमें शास्त्रीय वेदान्तकी चर्चा परस्पर होती रही। अध्यात्म विषयक अमृतमय वाणीको श्रवणकर अप-नेको कृत्य २ समझते हुए पुन: २ नमनकर हर्षको प्राप्त हो कीर्ती प्रशंसा ध्वनीकर निज २ भवनमें जाकर प्राप्त हुए। इनलोगोंके हृदयमें दर्शनकी कांक्षा, श्रद्धा सत्संग, सेवा शुश्रुषा भिक्षाकी सेवाकी अत्युत्कट अभिलाषा बनी रही। लेकिन हमलोगोंको विशेष ठहरना नहीं था। कारण कि मार्गसे सब थके हुए थे अतः

दूसरे दिन इन्दिरा पितृपक्षकी पित्रोद्धारक एकादशीका उत्सव मनाकर आगेके पड़ावको गमन किया। आवश्यकतानुसार ३ कुली भी आगामी मार्गके लिये किये गये। ये उपरोक्त रिखेश्वर महादेवजीका स्थान एकान्त रमणीय भूमिमें वैराग्यशील पुरुषको भजन करने योग्य भूमि है ।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च भूस्तमै वै नमो नमः ॥ ५२ ॥

[मु० ६२ वां चम्फावत् आ० कृ० १० सोम]

लोहाघाटसे चम्फावत् ६ मील है, मार्ग सीधा सड़कका जलके झरणे व गांव आदि सब मिलता जाता है; बस्तीके एक तरफ सन्निधीमें अति सुन्दर पुरातन पाषाणका मंदिर है। प्रतिमाके दर्शनसे भी एकदम चित्त प्रफुल्लित हो जाता है, पासमें शंकरजी की पुष्पवाटिका भी मनोरञ्जन मन्मोहित है; यहां जलका भी सुभीता है, इसी पवित्र स्थलमें सर्व मण्डलीका निवास हुआ। श्रीयुत् महन्त शिवगिरिजी व पं० प्रेमवल्लभ पोष्ट मास्टर साहिब जीने भिक्षाकी सेवाका अच्छा लाभ उठाया, यह वस्ती भी बड़ी बथा बाज़ार थाना पोष्ट आफिस न्यायालयसे सुसज्जित है। सत्संगी पुरुष भी निशामुखमें पधार कर अध्यात्म-विषयक वाणीको पानकर सत्संगका लाभ उठाते रहे, दो दिन निवास कर यहींसे भगवती पुण्यागिरिजी की तैय्यारी करी, पं० प्रेमवल्लभजीने परिश्रम कर आवश्यकतानुसार ३ कुलियोंका प्रबन्ध पुण्यागिरि तक कर दिया था।

संक्षेपसे जोहार प्रांतका वर्णन—

अलमोड़ा जिलेमें तेजमके पास छोटी राम गंगा पार करनेके बाद, जोहार परगना शुरू हो जाता है। मल्ला जोहार गौरीफाट और तल्लादेश गिरगांवसे मनस्यारी तक गौरीफाट और मनस्यारीसे मोलम तक मल्ला जोहार है,इस परगनेमें पश्चिमी भोटिया लोग रहते हैं। भोटका इलाका तो बड़ा है, उसमें चौदास, व्यास, दारिमा, जोहार और गढ़वालके भोटिये शामिल हैं, जोहारके पश्चिमी गढ़वाल जिलेके नेती और माना घाटोंके पास रहनेवाले भोटीए भी पश्चिमी भोटिया कहलाये जाते हैं, जोहारके भोटिएको शाका कहते हैं, और माना गांवके इतस्तत: भोटिए मारचा कहलाते हैं— शोका और मारची भोटिओंमें शादी विवाह होता है; जोहारी लोग देखनेमें जापानो चीनीयोंकी तरह होते हैं। किसो कालमें इधर चीनीयोंका राज्य था, चोनीयोंकी औरतोंके साथ इधर के लोगोंका सम्बन्ध होनेसे इनकी सन्तान मङ्गोल आकृतिकी हो गई,अब भी भोटीए व्यापारी तिब्बती औरतोंके साथ सम्बन्ध करने में आगा पीछा नहीं करते। तिब्बतियोंके साथ इनका चाय पानी होता है, इनके काम सब हिन्दू ढंगके है, और अधिक नाम क्षत्रियों की तरह हैं, तेजमसे नीचे हिन्दू, भोटियेके हाथका नहीं खाते हैं। बड़ी छूत मानते हैं, कारण ये देते हैं कि 'हूण'देश तिब्बती हिमालय पार है, कैलासके पार उधर मनुष्य जानेसे अपना धर्म खो देता है, कारण कि उधर खाद्य पदार्थ सब मांसका ही है, इधर के भोटीया नाम क्षत्रिय जैसे रखते हैं, पर जनेऊ नहीं पहनते,

कारण कि उस धर्मका पालन नहीं बन सकता, नैपाली क्षत्री भी तिब्बतमें व्यापारको जाते हैं, वे जनेऊ पहनते हैं पर अपने धर्मपर कायम रहते हैं। जोहारी लोग बहुत अपने निकट ही हैं, अतः वे हिन्दू धर्मका पालन करते हैं, और शिक्षाका प्रचार भी इधर है, ब्राह्मणोंसे संस्कार भी करवाते है, वे अपनेको रावत कहते हैं। जब कोई मर जाता है तो अस्थियां मानसरोवरमें डलवाते हैं, इनमें छोटी जातीके लोग डूमडे कहलाते हैं—“ रावत ” लोग डूमडेके हाथका नहीं खाते, जोहारी लोग तीन जगह घर बनाते हैं, जून, जोलाई, अगस्त, अक्टूबरमें तो मीलम जोहारमें रहते हैं मल्ला जोहार बहुत ठण्डा है। मीलम १२५०० फीटकी ऊंचाई पर है, जाड़ोंमें मल्ला जोहार बर्फसे सब ढका रहता है, जब जाड़ा पड़ने लगता है तो जोहारी लोग अपने बाल बच्चों भेड़ बकरी तथा झब्बू (एक प्रकारका बैल) को लेकर नीचे मनस्यारीमें आ जाते हैं। मनस्यारीमें अक्टूबर, नवम्बर रहकर विशेष शीत पड़ने पर नीचे तेजम राम गंगाके किनारे चले जाते हैं, दिसम्बर जनवरी फरवरी मार्चके शुरू तक ठहरते हैं, तेजम आकर वे कुछ दिन ठहर कर नीचे कलकत्ता कानपुर बम्बईमें माल लेने चले जाते हैं, पुनः मनस्यारीमें जाकर तिब्बतकी सैर करते हैं, मीलमसे जोलाई आरम्भ होते ही हजारों बकरी झब्बू भेड़ अनाज और मालसे लदे हुये १८३०० फीट ऊंचे भयंकर घाटे (pass) को तै करके तिब्बतमें जाते हैं और वहां हूणियों तिब्बती लोगोंके साथ व्यापार कर अनाज और कपड़ोंके बदले ऊन सुहागा चंवर पश्मीने आदि माल लेकर लौटते हैं।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान यश्च भुवस्तस्मै वै नमो नमो नमः॥५३॥

[मु० ६४ वां कुकडौनी आ० कृष्ण १२ बुध]

चम्फावत्से कुकडौनी गांव८।९ मील है,तीन मीलकी साधारण चढ़ाई ५।६ मील की उतराई है, मार्ग कुछ दूर तक सड़कका आगे फिर पगडण्डीका मिलता है,मध्यमें जलाशय ग्राम भी मिलते जाते हैं। यहां प्रधानजीके भवनमें मुकाम किया, दूसरे दिन प्रधानजीने मण्डलीकी भिक्षादि की सेवा कर अमूल्य लाभ उठाया, गांव साधारण है, जलकी यहां भी कुछ तकलीफ है, नीचे जाकर लाना पड़ता है। अतः एक दिनका पड़ावकर आगे शेरा गांवको गमन किया। रमणीय पहाड़ी चोटियों परसे खड़े होकर पीछेकी ओर दृष्टि डालिये। क्या देखते हैं सामने बीस तीस मीलके घेरेमें प्रकृतिके सौन्दर्यकी अवर्णनीय शोभा दृष्टि गोचर होती है। पूर्व दक्षिण पश्चिम किसी ओर नज़र दौड़ाइये ईश्वरकी उत्कृष्ट विभूतिका अद्वितीय चित्र दीख पड़ता है,क्या इस पृथ्वी तल पर ऐसा मनोहर, ऐसा उज्ज्वल, ऐसा रमणीक, पवित्र स्थल और कहीं होगा, हमारे पूर्वजोंने जिस हिमाचलकी प्रशंसामें सहस्रों ग्रन्थ बना डाले हैं, हिमाचलमें हिमसे ढकी हुई चोटियां एक दो नहीं, बीस तीस चालीस पचास इस भूमिके कुछ हिस्सोंमें श्वेत चद्दर धारण किये से नज़र आते हैं, प्रभात भानुकी किरणें जिस समय हिमाच्छादित पर्वतों पर पड़ती है,उस समयकी अलौकिक छटा क्या कोई लेखनी से अङ्कित कर सकता है,प्राचीन ऋषियोंने जो इधरकी भूमिको तपोभूमि कहा है सो सर्वथा सत्य है,कमजोर दुबला पतला अभागा

आदमी इधर आही कैसे सकता है। अत्युत्कट पुण्यसेही ये पवित्र भूमि प्राप्त होती है।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ५४ ॥

[मु० ६५ वां शेरागांव आश्विन कृ० १३ गुरु]

कुकडौनीसे शेरा ४ मील है, मार्ग साधारण चढ़ाई उतराईका है तथा जंगल भी पड़ता है। जलका आराम जगह २ मिलता जाता है। पीछे कालीके तट ही तट कुछ थोड़ासा चढ़ाईका मार्ग मिलता है रास्ता न होनेसे ऊपरसे जाना होता है। यहां काली व कालीकी शाखाएं बड़े वेगसे गमन करती हैं, हल्दीकी खेती विशेष होती है इसी पिछले मार्गमें स्वतन्त्र रूपसे आगे जाकर भूल भुलईयां कुछ मूर्तियां निन्यानवेके फेरमें पड़ गई थीं. अतः पथिकको इस यात्रामें स्वतन्त्ररूपसे आगे कभी गमन नहीं करना चाहिये। ईश कृपासे आत्मचिंतन करते हुये निशामुखमें गो धूली समयपड़ावमें आकर प्राप्त हुये। यहां पर भी प्रधान भंवरसिंहजीकी तरफ दुग्धादि सहित अन्नादिक धूनी पानीकी यथोचित सेवा हुई, इस प्रान्तमें श्रद्धालु सत्संगी कारुणिक भक्त सेवक मण्डली रहती है अतः भजनानन्दी महात्माको इधर स्वतन्त्र विचरनेसे अच्छा रहता है। एक रात्री निवास कर दूसरे दिन पुण्यागरी भगवतीके दर्शनार्थ गमन किया।

तिब्बतमें चंवर गाय

तिब्बती विचित्र देशके निवासी हूणिये कहलाते हैं। वे घुमक्कड़ हैं एक स्थानपर घर नहीं बनाते, रमते रामोंकी तरह एक दूसरी जगह घूमते रहते हैं, जहां अपने पशुके लिये घास पाते

हैं वहां हजारों भेड़ वकरी याक लेकर चले जाते हैं। [याक चंवर गायका तिब्बती नाम है] चंवर गाय दूध देती हैं, देखनेमें वड़ी सुन्दर मालूम होती हैं। इस देशमें ये वड़े कामका पशु है, वड़े २ लम्बे बाल इसके शरीर पर होते हैं, ये लोम ही इसकी रक्षा करते हैं; इसकी पूंछ वड़ी सुन्दर गुच्छेदार होती है, उसका चंवर बनता है। पशुके मरनेपर उसकी पूंछ काट लेते हैं। घास इधर अच्छी होती है। वस इसीसे इसकी जीविका चलती है। इति—

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च महस्तस्मै वै नमो नमः ॥ ५५ ॥

[मु० ६६ वां पुण्यागिरी आ० कृ० १४ शुक्र]

उपरोक्त शेरा गांवकी सन्निधिमें काली नदी कमर तक जल तथा वेगवाली मिलती है। इसीको पारकर पुण्यागिरीजीकी शरण लेनी पड़ती है। स्वदेशी यात्रीको चाहिये कि नदीके वेगको सहन समर्थ शक्ति न होवे तो ग्रामके किसी व्यक्ति द्वारा सहायता ले पार उतरें। यहांसे आगे मार्ग कुछ दूर तक नदीके किनारे २ पत्थरोंका एक मील तक आगे जाकर पगडण्डी का साधारण मार्ग मिलता है, यहांसे पुण्यागिरीजी करीब ६ मीलपर हैं। मार्ग चढ़ाई उतराई तथा जंगलका पड़ता है, परन्तु यह रास्ता आज कलके दिनोंमें बंद रहता है। इतस्ततः घासके बढजानेसे बिलकुल मार्ग ढक जाता है अतः यात्रीको उचित है, विना किसी मार्ग ज्ञाताके आगेको गमन नहीं करे। भयंकर मार्ग है हमलोगोंको तो ईश कृपासे गांवके प्रधान जी ही कृपा करके कुछ दूरतक साथमें हो गये बिच्छू घास तथा जोकोंका तो इधर साम्राज्य है जगह२ पर उक्त

घास तथा जलाशयपर जोंके तो अवश्य दर्शन देही देती हैं । घास को लष्ठिकासे खण्डितकर आगेको मार्ग बनाया जाता था, आगे दो झरणोंके संगमपर त्रिशूलधारी वटाधिपति वटेश्वरजीकी सन्निधिमें श्रीयुत् महात्मा शङ्कर गिरीजीके दर्शन हुये आगेके मार्ग से कुली भी अनभिज्ञथे और उक्त प्रधानजी भी अपना छुटकारा चाहते थे अतः भूलभूलैयाके फेरमें पड़ गये थे। क्षण भरमें ही अकस्मात् शिव प्रेरित उक्त महात्माजी आकर प्राप्त हो गये आप भैरवजीके भक्त पुजारी अत्यन्त प्रेमी सज्जन मूर्ति हैं। चिरकालसे आप भैरवजीमें ही निवास करते हैं आप ही के उद्योग से व नाम से भैरवजीमें धर्मशाला आदि स्थान भी वने हुये हैं। आप जवसे मण्डलीके साथ हुये तबसे मार्गमें चलनेका सुभीता रहा, कारण कि आप मार्गके ज्ञाता थे। रास्तेमें जलाशय व उतराई चढ़ाई बरावर मिलती जाती है पूजनीय श्रीस्वामीजी महाराजकी दयासे सर्व कठिन मार्गको तै करते हुये अपराह्नमें भैरवजीकी पवित्र भूमिकामें आकर प्राप्त हुये, उक्त महात्माजीकी कीर्ति स्तम्भ धर्म-शाला व भैरवजीकी गुफाओंसे इतस्ततः जलाशयके दो सुन्दर झरणे व पर्वत मालाओंसे यह स्थान सुसज्जित हैं, हरी भरी जड़ी बूटिओं अद्भुत् लताओंसे यहांकी पहाड़ियां अच्छी रमणीय मालूम होता है। गींठीकन्द व जिमीकन्द विदारीकंद शतावरी आदि तो इधर मौसमी कंद वहुतायतसे होता है। सर्व वातका सुभीता देख मण्डलीका यहींपर मुकाम हुआ। भगवती पुण्यागि-रीजीका अलौकिक दरबार यहांसे १॥ मील पड़ता है मार्ग

उतराई चढ़ाईका है बीचमें एक-दो जलाशयका भी यथोचित प्रबन्ध है। शीतकाल होनेसे अभी यहांका विशेष मार्ग खुला नहीं था। तृणराज विच्छू घासका और भंग-गंजा मातुलानी-मादिनी विजया जया-भांग गांजा आदि वृक्षोंका तो यहां इतस्ततः साम्राज्यही था। उक्त स्वामी शंकर गिरीजी मार्गके ज्ञाता रहे अतः आप ही लष्ठिका द्वारा मार्गको खोलते हुए आगेको गमन करते थे, आध मील पर गौरीजीका स्थान मंदिर छोटा अतिरमणीय ताम्बेके पत्रका है। लौकिकमें इसकी गाथा इस प्रकारसे है, कि किसी भक्तने मनोभिलाषित कामनाको अभिमुख रख प्रतिज्ञाकी थी, कि आपके चरणोंकी कृपासे मेरे कार्यमें सफलता प्राप्त हो जायगी, तो आपका मंदिर मैं स्वर्णका बना कर खड़ा करवा दूंगा। कुछ कालमें अभीष्ठप्रद जगज्जननी भगवतीने अपने भक्त सेवककी उत्कृष्ट कामनाऐं सब पूर्ण कर दीं। लेकिन अभागेने मनोभिलाषित कार्यकी पूर्ति होजाने पर भी स्वर्णरचित ताम्बेके पत्रका मंदिर बनवा ला अर्पण करा, अतः भगवतीने सर्वरीमें स्वप्न देते हुये कहा, कि इस मंदिरको यहां लानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। अधोभागमें स्थापना कर मेरी प्रतिमा बनाकर यहां स्थापना कर दो, तभीसे गौरीजीके नामसे विख्यात यह मंदिर छोटा सा पांच घंटोंसे सुसज्जित है। अब यहांसे उतार उतर कर कुछ ऊपर भागमें त्रिकाल स्वरूपिणी महिष मर्दिनी दुःखहारिण, शव भक्षणी श्री पतित पावनी कालीजीका स्थान पड़ता है, पाषाणकी प्रतिमा शक्तिके आकारकी है, ऊपर भगवती वैष्णव देवी पुण्यगिरीजी

में बकरेका बलिदान नहीं होता है केवल भक्तजन बलि बकरेको अर्पण कर दर्शन करा कर नीचे कालीजीकी सन्निधीमें ले आते हैं अतः यहां पर यावत् बलिदान होता हैं। यहांसे आगे अर्ध मील पर पतित पावनी भगवती जगज्जननी पुण्यगिरीजीका पुनीत रमणीक देवरचित अद्भुत स्थान है। मार्ग विचित्र चढ़ाईका अगम्य पड़ता है। अत्युच्च शिखर पर इतस्ततः पर्वत मालाओंसे वेष्ठित धर्मध्वजा (पताका) ५२ घंटाओंसे सुसज्जित पाषाणकी लिंगाकार अति सुन्दर रमणीय अभीष्टप्रद प्रतिमा है मार्गशीर्ष में यहां पर बड़ी भारी यात्रा होती है। दूर देशान्तरोंसे आगमन कर सैंकड़ों भक्त शील श्रद्धा पूर्वक दर्शनको पधार कर अभीष्ठ फलको प्राप्त होते हैं। सुना जाता है कि भगवतीके नामसे सरकार अंग्रेज बहादुरकी तरफसे १२ गांवकी माफी भी है। (सन्यास दश नामके अन्तर्गत, गिरी नामा महापुरुषोंकी यहांकी यह प्रधान शक्तिमहादेवी है) दर्शकको ध्यान रहे कि पतित पावनी, संकट निवारिणी मोक्षप्रदायिनी श्री पुण्यागिरीजी वैष्णव शक्ति हैं। सुना गया है कि जगदम्बाकी सन्निधीमें बलिदान तथा खान पानादिकी क्रिया करना सर्वथा निषेध है। जप पाठ ध्यान, आराधना पूजनादि कर नीचे आकर खान पानादि का व्यवहार करना चाहिये, षोडशोपचारसे पूजनादि कर कुंकुम रक्त वस्त्र श्रीफल दक्षिणा आदि अवश्य भेट करनी चाहिये आ० शु० प्रतिपदासे नवरात्री प्रारम्भ व घटस्थापन हो जाता है। कुछ भूदेवोंकी मण्डली आकर पूजा पाठादि व घटस्थापन कर

नवरात्री यहींकी क्रिया करते हैं। पुण्यगिरीजीसे एक मील निम्न भागमें टुन्यास अत्युत्तम पवित्र प्राचीन शुभाश्रम पड़ता हैं, बस इसीमें उक्त ब्राह्मण लोग पाठ पूजनादि व निवास कर नवरात्रियां यहीं व्यतीत कर देते हैं एतादृश पुनीत चमत्कारी ऋषि प्रणीत-स्थान व अद्भुत भूमिकाको अवलोकन कर अभीष्ठ प्रद निर्वाण प्रद नवरात्री निर्वाणयती मण्डलीने भी यहीं भैरवजीमें करने का निश्चय किया यद्यपि यह स्थान निर्जन भूमि व बस्तीसे इर्द गिर्द आठ आठ नौ नौ मील दूरके फासले पर पड़ता था मण्डलीमें मूर्तियोंका समावेश भी ज्यादातर था, तथापि पूज्यपाद् सद्गुण निधान, विवेक विचारशील परम श्रद्धा भक्ति शम दमादि, साधन, चतुष्टय सम्पन्न सद्धर्म भास्कर, ब्रह्मनिष्ठ, विनयशील समवेत्ता शास्त्र विहित धर्मानुष्ठानरत, क्रांतिशील, श्रीयुत माननीय मण्लेश्वरजी महाराज पुनीत नवरात्रीका भगवती रमणीय स्थलको देख चित्तमें प्रसन्न हुए निर्जन एकान्त भूमिमें ही नवरात्रीका व्यतीत करना श्रेष्ठ हैं; ऐसा विचार कर सर्व सम्मतिसे नवरात्रियां यहींकी मनायी गयी। आधुनिक कालमें तो निवास करनेमें खाद्य सामान सब टणकपुर आदिसे ही लाना होता है,गींठी कन्दादि इतस्ततः प्रायः बहुत होता है क्वचित् विरक्त महात्मा इसीका सेवन कर निर्वाह कर लिया करते हैं। मण्डलीमें भी अहर्निश इसका खूब प्रयोग किया था। यह खानेमें तीखी व बहुत कटु होती है। लेकिन बुद्धि वर्द्धक अजीर्ण नाशक पेटकी गर्मी दूर होजाना खुजली, दाद, रक्तविकार ज्वर खांसी—

प्लीहा तिमिर अग्नि संदीपन गठिया वात आदि रोगोंकी तो यह रामबाण दिव्य महौषधि है। पवित्र पुनीत जंगलकी बूंटी सर्व हितप्रद है इसकी शुद्धि इस प्रकार से है कि—प्रथम गींठीको खोदकर स्वस्थानमें आकर शुद्ध करे, राख (भस्मी) मिलाकर जलमें उबाल लेवे, पश्चात् रात्री पर्यन्त जलमें पड़ी रहने दें, बहते जलमें रखनेसे सब कटुता हट जाती है। प्रातःकाल यथेच्छसि तथा कुरु, इति मण्डलान्तर्गत् षट् मूर्ती फलाहारी नौ आहारी— दो मूर्ती निराहार रहकर सविधी नवरात्री पर्यन्त ईश्वराधना व आत्म विचारमें तत्पर रहकर, स्थानीय भगवती गण भूदेवोंको यथोचित सन्तुष्ट करते हुये भक्त-भक्ती भगवती भोलेश्वरजीकी जय-ध्वनी करते हुये आ० शु० ११ को टणकपुर प्रयाण किया।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च तेजस्तस्मै वै नमोनमः ॥५६॥

तिब्बतमें लामाओंके शासनका वर्णन—

तिब्बतका शासनका भार लामाओंके हाथमें है, सबसे बड़े लामेको ताशी लामा कहते हैं, पर ताशी लामाको इतना अधिकार नहीं, देशका सारा शासन दलाई लामाके हाथमें है, यही तिब्बतका प्रधान अधिकारी है। दलाई लामाही तिब्बत निवासियोंका ईश्वर स्वरूप है और वे अपनी प्रार्थनामें (ओम् माने पद्‌में हूं) कहकर उसकी पूजा करते हैं, बुद्धदेवका अवतार इनको मानते हैं। तिब्बतमें यह मंत्र स्थान २ पर दीवारों और पत्थरोंमें खुदा रहता है, दलाई लामाके आधीन बहुतसे कर्मचारी शासन कार्यमें उसकी

सहायता करते हैं; उनको गरफन जोंगपन और तरजुम कहते हैं, किसी समूचे प्रान्तका वाइसराय गरफन कहलाते हैं, जिलेके हाकिम जोंगपन और तरजुम पुकारे जाते हैं, इनको सब प्रबन्ध का अधिकार होता है, यहां विशेष बात यह है कि अत्युत्कट अपराध हो जानेपर शरीरका अङ्ग भी काट दिया जाता हैं। लासाका प्रधान लामा इन कर्मचारियोंकी नियुक्ति करता है। पश्चिमी तिब्बतका वाइसराय गरतोकमें रहता है— सालके साल यहां बड़ा भारी मेला लगता है, लाखों रुपयेका व्योपार मण्डीमें हो जाता है। ईर्द गिर्द के सब व्योपारी जोगपन व तरजुम यहां आते हैं, शीतकालमें विशेष ठण्ड पड़नेसे गरफन गरगुसा चला जाता है। यह सिंधु नदीके तट पर है गरतोकसे दक्षिण पश्चिममें थोली मठ नामी विशाल स्थान है यहांका लामा धार्मिक गुरू होनेके कारण गरफन जैसे ही अधिकार रखता है, बल्कि कई अंशोमें उससे ऊंचा है, जब कभी वह गरतोक जाता है, तो वाइसराय महोदयको उसका स्वागत करना पड़ता है, भारतवर्ष से पश्चिमी तिब्बतमें प्रवेश करनेके कई एक मार्ग हैं जिनके द्वारा जो आमदनी होती है, उसे जोंगपन अधिकारी बांट लेते हैं, जो ब्यापारी टिहरी अथवा गढ़वालके लीलांग और माना गांवके घाटोंसे होकर तिब्बत जाते हैं, वे चपरंगके जोंगपनको 'कर' देते हैं, ऊंटा धुरा और नेतीके घाटोंका शुल्क दापाके जोंगपनको मिलता है, लीमलेख और नैपाल घाटोंकी आमदनी ताकला कोटके जोंगपन को जाती है, इस प्रकार प्रत्येक घाटोंकी आमदनी कर अलग २

कर्मचारियोंमें बंटी हुई है, लामाकी गवर्नमेण्टको ये लोग ठेकेकी तौर पर रुपया देते हैं। जो नियुक्ति होनेसे पहिले निश्चय हो जाता है, गरतोककी मण्डीमें भारतीय व्यौपारी कम जाते हैं, एक तो उनको डाकुओंका भय रहता है, दूसरे उधर का मार्ग बहुत कठिन है, और शीत अधिक होनेके कारण उनके पशुओंको बड़ा कष्ट होता है। जोंगपन कर लेनेमें तो बड़े होशियार हैं, पर डाकुओंको सजा देने अथवा रास्ता ठीक करनेमें बड़े सुस्त हैं। तरजुम कर्मचारीका मुख्य काम डाकका प्रवन्ध करनेका है, गरतोकके गरफन और लासाकी गवर्नमेण्टके बीच जो पत्र व्यवहार राज्य प्रवन्धके विषयमें होता है उसको ठीक ठीक रखनेका भार तरजुम पर है, गरतोकसे लासा ८०० मील पर है एक एक दिनके पड़ाव पर घोड़े बदले जाते हैं, यदि चिट्ठी अत्यावश्यक हो तो डकियेको घोड़ेकी पीठ पर बांध दिया जाता है, ताकि रास्तेमें वह कहीं आराम न कर सके। इस तरजुमके अधिकारमें भी देशका कुछ भाग ऐसा रहता है जिस पर निरंकुशतासे हुकूमत करते हैं, तरजुमके अधिकारमें राक्षस तालाव और मानसरोवरके इर्द गिर्द भारतीय सीमा तककी भूमि हैं, जिसको कि हम पीछे दिखा आये हैं।

ॐ यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च कालस्तस्मै वै नमो नमः ॥५७॥

[मु० ७६ टणकपुर आश्विन शु० १२ गुरु]

उपरोक्त भैरवजीके स्थानसे टणकपुर करीव ६ मील पर है। ३॥ मील उतराई उतरकर सजल नदीपार कर घोर जंगल मिलता

है, कुछ दूर चल काली नदी तक बीचमें थोड़ी चढ़ाई मिलती है ।
पश्चात् टणकपुर तक सीधा मार्ग पगडण्डी व साधारण सड़क-
का है, मध्यमें छोटे २ गांव तथा जलाशय मिलते जाते हैं । वर्त-
मानमें घासका जङ्गल बहुत बड़ा रहता हैं, अतः नदी नालोंको पार
कर निशामुखमें पड़ावमें आकर प्राप्त हुये स्थान अपरिचित होनेसे
निर्वाह मात्र विशेष प्रबन्ध न कर सरकारी जलकी कोठीमें ही नि-
वास कर सर्वरीको विताया । टणकपुर यह व्यापारिक बड़ी मण्डी
है, बाजार पोष्टआफिस तार कचहरी आदि सब अच्छे यथोचित
बने हुये हैं, कैलास यात्रीको पैदलका मार्ग यहां समाप्त हो जाता
है, अर्थात रेलगाड़ी यहींसे मिल जाती है, आतप ऋतुमें उष्णता
विशेष हो जानेसे यह मण्डी सर्वथा बन्द हो जाती है , पुनः शर-
त्कालमें आश्विन शुक्ल प्रतिपदासे कुछ २ जन समुदायका समा-
वेश होने लगता है । कार्तिक पूर्णमासी तक मण्डी भरपूर भर
जाती है, कार्तिकसे पूर्व जनसमुदाय विशेष न बढ़नेसे दुग्धादि
खाद्य पदार्थ सब सस्ता ही रहता है, मण्डीके इतस्ततः छोटे छोटे
ग्रामान्तरोंमें गोठें आदि विशेष रहते हैं, अतः मण्डी भरनेसे पूर्व
६ सेर तकका दूध इधर बिक्री हो जाता हैं, अधिक बिक्री न होने
से बहुधा लोग खोवा बनाकर देशान्तरोंमें बेंच दिया करते हैं।
शरत्कालमें यहांकी आबहवा प्रत्येक प्राणीको लाभ दायक है ।
सरजू [काली] नदीका भी जल निर्मल स्वच्छ हो जाता है, पु-
ण्यागिरिजीकी यात्रा भी प्रायः इन्हीं दिनोंमें खुल जाती है ऊपरके
पर्वतोंमें प्रायः बर्फ विशेष पड़नेसे तथा बहुत ठण्डीके कारण

दूर दूरसे तिब्बती व भोटिया उतरकर इसी मण्डीमें निवास करते हैं, शीत काल पर्यन्त निवास कर पुनः ग्रीष्म ऋतुमें शंकर भक्त भक्ति भगवानकी जयध्वनी करते हुये ऊपरको निज निज स्थानोंमें जाकर प्राप्त हो जाते हैं। बाजारसे सड़कके दाहिने हाथ पर एक शंकरजीका अति प्राचीन मंदिर उद्यानके अन्तर्गत है । जलका आराम साधुओंके ठहरनेकी एकान्त जगह है । पितृ पक्ष के दिन थे अतः "तस्मै नमः" की जप पूर्ति कर भिक्षासे यहींसे निवृत्त हो सकुशल निर्वाण यती मण्डलीने अग्नियान(रेलगाड़ी) पर गमन किया। अब यहांसे यात्रीकी स्वतन्त्र इच्छा है जिधर जांवें, रेल द्वारा पहुंच सकता है, हमलोगोंको तो परिव्राजका नगरी "काशीजी" को गमन करना था, अतः शंकर भगवानकी जय ध्वनी, ॐ पार्वती पतये हरहर महादेव......की घोषणा करते हुये गाड़ीमें स्थित हुये, यहांसे गाड़ी अपरान्हमें दो बजे छूटी और हरि हर......करती हुई निशामुखमें पांच बजे पीली भीत आकर प्राप्त हुई, यहां भी स्टेशनसे कुछ फासले पर यात्रियोंके सुख निमित्त धर्मशालायें बनी हुई हैं, यहीं पर सर्व क्रियासे निवृत्त हो— सर्वरीमें ११ बजे की ट्रेनसे लखनऊको प्रयाण किया। गाड़ी शिव शिव शंकर......रटती हुई प्रातः ८ बजे लखनऊमें जाकर प्राप्त हुई, यहां पर भी स्टेशनकी सन्निधीमें अत्युत्तम कूपके पास पड़ाव कर नित्य क्रिया व मांगलिक भिक्षासे निवृत्त हो १२ बजेकी ट्रेनसे पुनः सवार हो गये, भारत पुनीत शिरोमणि मुक्तिप्रद काशीको गमन करना था। अतः गाड़ी "काशी विश्वनाथ गंगा हर हर

महादेव शम्भो " कैलाशी काशीके वासी अविनाशी मेरी सुध लीजे सेवक शरण सदा चरणनको अपनो जान कृपा कीजे, अभयदान दीजे प्रभु मोरे सकल सृष्टिके हितकारी, भोलानाथ तुम भक्त निरञ्जन भव भंजन भव सुखकारी, दर्शन देवो सदा शिव शम्भू भक्त वत्सल तेरा नाम हवे, मस्तक तेरे चन्द्र विराजे शीशमध्ये गंगवहे। इत्यादि शब्द ध्वनीको दीर्घोच्चारण करती हुई सर्वरीमें ११वजे श्री पतित पावनी दुःखहारिणी मोक्षप्रदायिना शिवपुरी श्री श्री काशीजीमें आकर प्राप्त हुई। वनारस केण्टसे स्वस्थान तक पैदल ही गमन कर मध्य सर्वरी १२ बजेके करीब स्वस्थान टेडीनीम गोविन्द मठमें आकर सकुशल सर्व मण्डली प्राप्त हो गई।

ॐ योवै रुद्रः स भगवान यश्चामृतं तस्मै वै नमो नमः ॥५८॥
ॐ योवै रुद्रः स भगवान यश्चविश्वं तस्मै वै नमो नमः ॥५९॥

सं० १९८४ आश्विन शुक्ला पौर्णमासी सोमवार।

श्री विश्वनाथजीके दर्शन कर जीवन्मुक्तिको प्राप्त हो चुके। कैलास यात्रीको चाहिए कि उपरोक्त सब यात्रा करके काशी विश्वनाथजीके अवश्य दर्शन करे तब पूर्ण यात्राका आनन्द आता है कारण कि काशीमें साक्षात् कैलासपती जटा जूटधारी विराजमान हो अभीष्ट प्रदान करते हैं। इति......शिवम् एकवार प्रेमसे बोलिये भक्त भक्ति भगवान भोलेश्वर भूतेश्वरश्री शंकरावतारकी जय !......

शिवार्पणमस्तु ॐ तत्सत् !

कैलासके इर्द गिर्द तिब्बतका सारांश

ॐ योवै रुद्रः स भगवान यश्च धर्मस्तस्मै वै नमो नमः ॥६०॥

भारत वर्षकी उत्तरीय सीमा, काश्मीरसे लेकर आसाम तक एक लम्बे देशसे घिरी हुई कैलासके इततस्तः भूमि व इसी प्रांतको तिब्बत कहते हैं। तिब्बत चीनके आधीन है और इसका भार लामाओंके हाथमें हैं जैसे यहां अपने राजा व धनिक लोग मंदिरोंके नाम उसका खर्च चलानेके लिये गांव लगा देते हैं मालूम होता है, ऐसे ही तिब्बत भी चीन राज्यकी ओरसे धर्म खातेमें दान किया हुआ है। तिब्बतके विषयमें संसारका शिक्षित समुदाय बहुत कम जानता है। तिब्बत इस शब्दका उच्चारण करते ही; ऊंचाई बौद्ध धर्म और लामा ये तीन संस्कार मनमें घूमने लगते हैं और ऐसा भी भान होता हैं कि कैलास जा ही कौन सकताहैं कैलास दर्शनार्थ कुछ प्रयत्न उत्साह तो करते नहीं। विना भाग्योदयके कैलास दर्शन कैसे होता हैं। अतः उनकी संकल्पोंकी पूर्ति होती नहीं क्योंकि।

[बहुशाखाह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्] स्पष्टार्थः

वहांकी आब हवा कैसी हैं। किस प्रकारके लोग वहां बसते हैं ? शासन प्रणाली कैसी है ऊंचाई लम्बाई सौन्दर्य्य कैसा है। इस विषयका बिलकुल ज्ञान हम लोगोंको नहीं। कैलास किसी ऊंची जगह पर हैं और शंकरजी अपने गणादिक सहित वास करते हैं, बस यह संस्कार मनमें हैं यह बात ठीक हैं पर मर्त्यलोकमें

मान्धाकी अत्युत्कट भक्ति प्रेम श्रद्धाको अवलोकन कर श्रीत्रिभुवन पतिने प्रसन्न हो मर्त्यलोकके वास्ते कलिमें साक्षात् इसी कैलास व मान सरोवरका माहात्म्य बतलाया है कारण कि इस पंचभौतिक शरीरसे जीते जी कलिमें कैलास शिव पार्वतीका दर्शन होना कठिन है। अतः इस कैलासके दर्शनसे जीवनमुक्ति व साक्षात् शिवलोककी प्राप्ति बतलाई है इसके दर्शनसे पुनरावर्तन नहीं है पौराणिक ग्रन्थोंमें भी इसका माहात्म्य विशेष दिया गया हैं। जो प्राणी भक्ति श्रद्धासे प्राणोंको हाथमें लेकर महान २ पहाड़ व नदियोंको पार कर शिव शिव रटते हुए कैवल्यप्रद रमणीय हिमाच्छादित शृंगके दर्शन करते हैं। वे अवश्य निरुपद्रव जीवन्मुक्तिको प्राप्त हो अभीष्ट फलको लूटते हैं—

बहुत कम शिक्षित भारतीय यह जानते हैं कि हमारे देशके सैकड़ों व्यापारी भिन्न भिन्न रास्तोंसे प्रत्येक वर्ष तिब्बत जाते हैं अधिकांश तो यही समझते हैं कि तिब्बत महात्माओंकी रहनेकी जगह है और वहां सैकड़ों वर्षोंके पुण्ययोगी रहते हैं। वहां कोई कलियुगी पुरुष जाही नहीं सकता, इस प्रकारके विचित्र संस्कार हम लोगोंके अन्दर फैले हुए हैं तिब्बतकी ऊर्ध्व भूमि—(Table land) संसारमें सबसे ऊंची हैं इधर हमारा गंगाजी का मैदान समुद्रतलसे कुछ ही ऊंचा हैं। इसके आगे उत्तरमें पहाड़ियां छः हजार फीट ऊंची हैं इसके आगे बढ़ते बढ़ते १८००० फीट तक हिमालयकी दीवार ऊंची होती है, इसके इर्द गिर्द पांच छः हजार फीट ऊंची गगनारोही, बर्फानी चोटीयां

आकाशको स्पर्श करनेकी चिन्ता कर रही हैं, इसके आगे धीरे २ नीचा होता जाता है, हिमालयकी दीवारसे तिब्बत आरम्भ होता है। और शनैः शनैः पांच हजार फीट नीचे होकर १३००० फीटकी ऊंचाई पर आ जाता है। यहांसे भूमि फिर धीरे २ ऊंची होनी शुरू हो जाती है। और पहुंचते पहुंचते १७००० फीटकी ऊंचाई होकर क्यून लून पर्वत मालाका आरम्भ होजाता है। जो २०००० फीटसे अधिक ऊंची है, यहीं तक तिब्बत है, इसके आगे चीनी तुर्किस्तान है, जिसकी ऊंचाई २००० फीट है। इससे आगे रूसका साईवीरीया है जो हमारे गंगाजीके मैदानकी तरह समुद्र तलसे कुछ ही ऊंचा है। चीनी तुर्किस्तानसे आगे क्यून लूनकी २०००० फीटसे अधिक ऊंची पर्वत मालासे लेकर हिमालयकी १८००० फीट पर्वत माला तक तिब्बतका देश है। जिसकी ऊंचाई कहीं भी १३००० फीटसे कम नहीं, यह देश सब प्रकारकी धातुओंसे परिपूर्ण है, सोनेकी खानें भी बहुत हैं नमक सुहागा तो प्रायः बहुत होता ही है। अनाज कहीं २ घाटी हो जानेसे कुछ उष्णता मिल जाती है, थोड़ा बहुत हो जाता है। झीलें इस प्रांतमें बहुत हैं। जिसकी प्राकृतिक शोभा अतुलनीय है। बड़ी २ नदियां जैसे सिन्धु सतलज ब्रह्मपुत्र यहींसे निकल कर भारतमें आती हैं शर्दी इस देशमें बहुत पड़ती हैं; झीलोंके अतिरिक्त स्थान २ पर सैंकड़ों झरणे प्राकृतिक शक्तिका महत्व प्रदर्शित कर रहे हैं। कैलाससे कुछ ही मील दूरी पर सात बड़े झरणे हैं इनमें कोई हजारों फीट ऊंचेसे हर हर

करता हुआ धरणीको स्पर्श करता है। दूर २ कहीं गरम पानीके स्रोते भी हैं स्थान २ पर वर्फानी सरोवर यात्रीका मन हर लेते हैं, कैलास शृङ्ग सबसे सुन्दर और सृष्टिके अत्यन्त आकर्षक पर्वतोंमेंसे एक है अकेले इस पर्वतके साथ भारतकी कितनी स्मृतियां भारतीय धर्मके कितने रहस्य और संस्कृत काव्योंकी शोभा सम्बन्धी कितनी सूक्तियां जड़ी हुई हैं। श्वेत उज्ज्वल धवल हिमका हजारों फीट ऊंचा एक स्थाणु खड़ा है यह पर्वत देख अनायास ही इसे "ईश्वरीय स्थल" कहनेकी इच्छा होती है। इसे भारतीयोंने शंकरजीका स्थल माना तो आश्चर्यकी क्या बात ? बौद्ध श्रमण इकाईकावागुचीने लिखा था-यह पर्वत आस पासकी अगणित चोटियोंके बीच ऐसी महानताके साथ आकाशमें चला गया है कि मुझे ध्यान आया मानो भगवान बुद्धकी मूर्ती अपने ५०० शिष्योंको उपदेश कर रही है इस पर्वतका आकार ठीक शिवालय जैसा है। बहुतोंका मत है इसे देख कर ही हिन्दुओंने शिवालय बनाये होंगे। इसका उत्तरीय भाग तो और भी सुन्दर है इस भागको तिब्बती अपनी भाषामें "ग्यालयो नारजिंग फोयरङ्ग" नाम पुकारते हैं, जिसका अर्थ है:—"कुवेर भवन" कुवेर संपत्तिके देवता हैं। कालिदासने अपने अमर काव्य "मेघदूत' में इस कुवेर पुरीका बड़ा सुन्दर वर्णन किया है सिन्धु नदीका जन्म कैलास पर्वतके समीपसे ही होता है यह प्रायः सीधी और सुन्दर घाटियोंसे हो कर बही है और ज्यों ज्यों आगे बढ़ी है अपनी शक्ति बढ़ाती गई है। ५०० मील बहनेके बाद एक खड्ड में, जा कि १४००० फट

गहरा है कूद पड़ती है और गोता इतस्ततः खाती हुई भारतीय सीमामें प्रवेश करती है। सतलज जिसका नाम वैदिक ऋचाओंमें कई वार आया है, कैलासके दक्षिण भागसे निकलती है यह मानसरोवरकी ओरसे नहीं बहती,रावी और झेलम भी तिब्बतसे ही निकलती हैं गंगा-ब्रह्मपुत्र, सरजू इत्यादि अनेक नदियां तिब्बतकी झीलों और पहाड़ोंसे निकल कर भारत भूमिको हरा भरा और उपजाऊ बनाती हैं। यारकन्द पश्चिमीय तिब्बतसे निकलकर चीनी तुर्किस्तानमें बहती हैं। चीनकी सबसे बड़ी नदी "यांग सीक्यांग" ऐशियाकी सबसे बड़ी नदी है। तिब्बतसे ही निकलती है। यह बहुत गहरी और चौड़ी नदी है। इसके किनारेकी भूमिका प्राकृतिक सौन्दर्य्य अत्यन्त मनोमुग्धकर है। अपनी सहायक नदियोंके साथ पृथ्वीको सींचकर उपजाऊ करने और जल मार्गकी सृष्टि करनेवाली विश्वकी नदियोंमें यह सर्व श्रेष्ठ है। इसके अतिरिक्त जंगवूहांग हो, मेकांग, और सालवेन इत्यादि अनेक नदियोंने इस निर्जनभूमि खण्डमें अपने संगीतकी धारा प्रवाहित की है—

नमामि गङ्गे तव पाद पङ्कजम्-सुरासुरैर्वन्दित पाद पीठम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यम् भावाऽनुसारेण सदा नराणाम्.

किन्तु तिब्बतको सबसे अधिक आकर्षण तो उन झीलोंद्वारा प्राप्त हुवा है, जो उसके शरीरमें स्थान २ पर हीरेकी भांति चमक रही हैं। इनकी संख्या नदियोंसे भी अधिक है। कोई ऐसा प्रान्त न होगा। जिसमें ५+६ झीलें न हों मध्य तिब्बत एवं काश्मीरके उत्तर लद्दाख तथा उसके—आस-पासके प्रान्त तो इनसे भरे

हैं। इस देशकी सब झीलोंमें मानसरोवर सबसे अधिक प्रसिद्ध और विशाल तथा मनोहर है। यह वही झील है, जो अनेक भारतीय कहानियोंकी जननी है। और जिसकी चर्चा पुराणमें भी की गई है। हमारे यहां देवसरोवर समझा जाता है। संसारमें यह शुद्ध और मीठे पानीकी सबसे बड़ी झील समझी जाती है। समुद्र तटसे १६००० फुटकी ऊंचाईपर है। जिस जम्बूद्वीपकी चर्चा पुराणोंमें है, उसका केन्द्रस्थल भी मानसरोवर ही माना गया है। यह कैलासका हिमधवल शरीर बड़ा भव्य और सुन्दर दिखाई पड़ता है। इत्यादि ऐसे पवित्र निर्वाणप्रद कैलास व मानसरोवरके अद्भुत दर्शन अपनी अमूल्य जिंदगीमें एकबार अवश्यकर कृतार्थ होना चाहिये। कैलास भ्रमण व तीर्थप्रेमी भाइयोंके हितार्थ पठित पुरुषोंके कल्याणार्थ कारण जो अगम्य मार्गद्वारा कैलास यात्रा नहीं कर सकते, इस पुस्तकके माहात्म्यको अवलोकनकर कल्याणको प्राप्त हो सकते हैं। अतः मार्गमें मील संख्या पड़ावका वर्णन देशकी स्थिती हमने यथोचित विचारकर व इतस्ततः से उपयोगी वार्ता लेकर कैलास उत्सुकोंके लिये छोटासा ग्रन्थ प्रकाशित किया है। आशा है कि कैलास प्रेमी भाई इसको बांचकर व सार्वजनिक हिंदी वाचक प्रेम इसको सम्पूर्ण अवलोकनकर मेरे परिश्रमको सफल करेंगे, और जगत पूजनीय महात्मालोग इसी उपरोक्त मार्गसे गमनकर कैलासके आत्मभावसे दर्शनकर जीवन्मुक्तिको प्राप्त हो निरुपद्रव कैवल्यके भागी बनेगें, कैलास उत्सुक प्रेमी इस पुस्तकको अवश्य

अवलोकन करें। इसके देखनेसे सैकड़ों कोसोंकी अद्भुत विचित्र बातें सब मालूम पड़ जाती हैं। हमारे अपार परिश्रमका साफल्य तभी होगा, कि आप कुछ मण्डली एकत्रित हों और परमपिता मुक्तिप्रद कैलासजीके जाकर दर्शन कर निज नेत्रोंको सफल करें। व इसके माहात्म्यको आद्योपांत अवलोकन-कर अन्तरीय वृत्तिसे कैलासका ध्यान धरें। हमने इसके अन्दर बहुतसी जगहोंपर बड़े भयानक शब्द लिखे हैं। सो जहांपर जैसा है वही लिखा है। विशेष बात यह है कि बुद्धिमानको चाहिए "श्रेयांसि बहु विघ्नानि" मांगलिक कार्यमें विघ्न बहुत होते हैं॥ अतः बुद्धिमान भक्त उत्साही पुरुष उक्त विघ्नोंको न देखते हुए अपना कार्य साध लेते हैं। शिवोऽहम्। शिव शिव धाराको पान करते हुए सबकी कैलास यात्रा आनन्दसे निर्विघ्नितापूर्वक हो जाती है। अपने पूर्वजन्मका आनन्द भी यहीं देखनेमें आता है। अतः सार्वजनिक तीर्थ प्रेमियोंसे व विशेष साधु-सन्त-महात्मा-ओंसे यही निवेदन है कि कि मुक्तिप्रद पतितपावन कैलासजीके अवश्य दर्शन करें, और कैलास सम्बन्धी विशेष समाचार जाननेकी तीव्र इच्छा हो तो मण्डलीमें आकर सब समाचार पूछ सकते हैं। लेकिन मुझसे जहांतक बना है, यथोचित सब लिख दिया है विशेष पूछने पर यथोचित मालूम हो सकता है। निवेदनमें प्रार्थना है, इसमें दृष्टि दोषसे जो कुछ भूल चूक रह गई हो, तो क्षमाकर उसे सुधार लीजिये और कैलासके दर्शन कर जीवन मुक्तिको प्राप्त होवें। ॐ नमः शिवाय। इति शिवन्

आरती शिवजीकी

कैलासी काशीके वासी अविनाशी मेरी सुधि लीजे।
सेवक शरण सदा चरणनकों अपनो जान कृपा कीजे॥
अभय दान दीजै प्रभु मेरे सकल सृष्टिके हितकारी।
भोलानाथ तुम भक्त निरंजन भव भंजन भव शुभकारी॥ १॥
दीन दयालु कृपालु काल रिपु अलख निरंजन शिव योगी।
मंगल रूप अनूप छबीले अखिल भुवनके तुम भोगी॥
बांवो अंग रंग रस भीनो उमा वदनकी छवि न्यारी।
भोला नाथ भक्तमन रंजन० ॥ २॥
असुर निकंदन सब दुख भञ्जन वेद बखानें जग जाने।
रुण्डमाल गल व्याल भाल शशि नील कंठ लिया मनमाने॥
गंगाधर त्रिशूलधर विषधर बाघम्बर धर गिरिधारी।
भोलानाथ भक्तमन रंजन० ॥ ३॥
यो भवसागर अति अगाध है पार उतर कैसे सूझे।
नांव तुम्हारो नौका निर्मल तुम केवट शिव अधिकारी।
भोलानाथ भक्तमन रंजन० ॥ ४॥
मैं जानू तुम निपट सयाने अवगुण मेरे सब ढकियो।
सब अपराध क्षमाकर शंकर किंकर की बिनती सुनियो॥
तुम तो जगके कल्प तरु हो तुम हो प्राणी संसारी।
भोलानाथ भक्तमन रंजन० ॥ ५॥
काम क्रोध यो महा अपर बल इनसे मेरो वस नाहीं।
लोभ मोह यों संग न छांड़े आन देत नहिं तुम ताईं॥

क्षुधा तृषा नित लगी रहत है ता ऊपर तृष्णा भारी ।
भोलेनाथ भक्तमन रंजन० ॥ ६ ॥
तुम ही शिवजी कर्त्ता हर्त्ता तुम ही युगके रखवारे ।
तुम ही गगन मगन पुनि पृथिवी पर्वत पुत्रीके प्यारे ॥
तुम ही पवन हुताशन शिवजी तुम ही दिनकर शशि धारी ।
भोलानाथ भक्तमन रंजन० ॥ ७ ॥
पशुपति अजर अमर अमरेश्वर योगेश्वर शिव गो स्वामी
वृषभारूढ़ गूढ़ गुह गिरिपति गिरिजावल्लभ निष्कामी ॥
शोभा सागर रूप उजागर गावत है सब नर नारी ।
भोलेनाथ भक्तमन रंजन० ॥ ८ ॥
महादेव देवनके अधिपति फणिपति भूषण अति राजै ।
दीप्त लिलाट लाल दोउ लोचन जिनके उर ता दुख भाजे ॥
परम पुनीत पुनीत पुरातन महिमा त्रिभुवन विस्तारी ।
भोलेनाथ भक्तमन रंजन० ॥ ९ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष मुनि नारद आदि करत सेवा ।
जिनकी इच्छा पूरण कीनी नाथ सनातन हर देवा ॥
भक्ति मुक्तिके दाता शंकर सदा निरंतर सुखरासी ।
भोलानाथ भक्तमन रंजन० ॥ १० ॥
महिमा इष्ट महेश्वरजीकी सिखे सुने जे नित गावें ।
अष्ट सिद्धि नौ निधि सुख संपति स्वामी भक्ति मुक्ति पावें॥
श्री अहि भूषण प्रसन्न होयकर कृपा करो शिव त्रिपुरारी ।
भोलेनाथ भक्तमन रञ्जन० ॥ ११ ॥

भोलेश्वर श्री कैलासपतिकी जय……

अथ द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥ १ ॥
परल्या वैजनाथं च डाकिन्यां भीम शंकरम् ।
सेतुवन्धेतु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥ २ ॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौमती तटे ।
हिमालये तु केदारं घुसृणेशं शिवालये ॥ ३ ॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रात:पठेन्नरः ।
सप्त जन्म कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥ ४ ॥

इति द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि ।

अथ पुराणोक्त संक्षेपसे पूजन विधिः

—:०:—

“ षोड़शोपचाराः ” नाग देवः—आवाहनासने पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् । स्नानं वस्त्रोपवीते च गन्ध माल्यादिभिः क्रमात् ॥ धूपं दीपं च नैवेद्यं नमस्कारं प्रदक्षिणाम् । उद्वासनं षोडशकमेवं देवार्चने विधिः ॥

शिव ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरि निभंचारुचन्द्रावतंसं ।
रत्नाकल्पोज्वलांगं परशु मृगवरा भीतिहस्तं प्रसन्नम् ।।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं ।
विश्वाद्यं विश्व वन्द्यं निखिल भय हरं पञ्च वक्त्रं त्रिनेत्रम् ।।१।।

शिवस्यावाहनम्

एह्येति गौरीश पिनाक पाणे शशाङ्क मौले वृषभाधिरूढ़
देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।। १ ।।
[ॐ भुर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः आवाहनं समर्पयामि]

आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव-
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव ।। इति प्रार्थना

" आसनम् " रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्य करं शुभम् ।
आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वरः ।। २ ।।
[ॐ भुर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः । आसनं च समर्पयामि]

" पाद्यम् " उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध संयुतम् ।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रति गृह्यताम् ।।
[ॐ भुर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि]

" अर्घ्यम् " अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्ध पुष्पाक्षतैः सह ।
करुणा कर मे देव गृहणार्घ्यं नमोस्तुते ।। ४ ।।

[ॐभुर्भुवः स्वः भवानी शंकर देवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि]

" आचमनम् " सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्

आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वरः ॥ ५ ॥

[ॐ भुर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः अर्घ्यं समर्पयामि]

" स्नानम् " गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः ।

स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्वमे ॥ ६ ॥

[ॐ भुर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः स्नानं समर्पयामि]

" पञ्चामृत स्नानम् " (एक मन्त्रेण पंचामृत स्नानम्)

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् ।

पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ ७ ॥

[ॐ भुर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि]

पञ्चामृत स्नानान्ते-शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ॥ (पृथग्मन्त्रेण पंचामृत स्नानम्)

" तत्र पयः स्नानम्- " काम धेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।

पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥१॥

[ॐभुर्भुवः स्वःश्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः पयःसमर्पयामि]

पय स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि ॥

"दधि स्नानम्" पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ २ ॥
[ॐ भुर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः दधि स्नानं समर्पयामि]
दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि ।
"घृत स्नानम्" नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोष कारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥३॥
[ॐ भुर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः घृत स्नानं समर्पयामि]
घृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम् समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि ।
"मधु स्नानम्" तरु पुष्प समुद्भूतं सु स्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥४॥
[ॐ भुर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः मधु स्नानं समर्पयामि]
मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयम्:समर्पयामि ।
"शर्करा स्नानम्"
इक्षु सार समुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥५॥
[ॐ भूर्भुवः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः शर्करा स्नानं

समर्पयामि] शर्करा स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, [शुद्धो-दक स्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि]

" षष्ठं गन्धोदक स्नानं "

मलयाचल सम्भूतं चन्दन नागरु सम्भवम् ।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ ६ ॥

[ॐ भूर्भुवः-श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः षष्ठं गन्धोदक स्नानं समर्पयामि]

गन्धोदक स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि ।

ततः अभिषेकः—पश्चात् स्नापन धारा पात्राय गन्धाक्षत पुष्पं समर्प्य । तदनन्तरमभिषेकार्थी देवानां गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयेत ! पश्चात् " देवतीर्थे " धृत्वा ततो देवायाचमनम् " ॐ केशवाय नमः स्वाहा । ॐ नारायणाय नमः स्वाहा । ॐ माधवाय नमः स्वाहा । पुनः हस्त प्रक्षालनम " ॐ गोविन्दाय नमः ॥

" वस्त्रम् "

सवभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारणे ।
मयौ पपादिते तुभ्यं वाससीं प्रतिगृह्यताम् ॥ ८ ॥

[ॐ भूर्भुव, स्वः श्री भवानी शङ्कर देवताभ्यो नमो नमः वस्त्रं (वस्त्राभावे अक्षतान् समर्प०) ।

" यज्ञोपवीतम् "

नवभिस्तंन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ ६ ॥

[ॐ भूर्भुवः श्री भवानी शङ्कर देवताभ्यो नमः यज्ञोपवीतं (यज्ञोपवीताऽभावे अक्षतान्) सम०]

" गन्धम् "

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुर श्रेष्ठ चन्दनं प्रति गृह्यताम् ॥ १० ॥

[ॐ भूर्भुवः श्री भवानी शङ्कर देवताभ्यो नमः विलेपनार्थे गन्धं समर्पयामि ।

नोट—देवेभ्यः गंधंसौभाग्यद्रव्यादीनिअनामिकाङ्गुष्ठेन अर्पयेत् ।

(अथ क्षेपकम्)

अक्षताः—अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ ११ ॥

[ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भवानी शंकर देवताभ्यो नमः अक्षतान् समर्पयामि]

"पुष्पाणि" माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ १२ ॥

[ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भवानी शङ्कर देवताभ्यो नमः पुष्पाणि (सौभाग्य द्रव्य सहितं च) समर्पयामि]

"गणेशाय दूर्वाङ्कुरार्पणम्" ।

विष्णवादि सर्व देवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा—
क्षीर सागर सम्भूते वंश वृद्धि करी भव ॥

" शङ्कराय बिल्वपत्रार्पणम् "

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम् ।
त्रिजन्म पाप-संहारमेकं बिल्वं शिवार्पणम् ॥

"सौभाग्य द्रव्यं"

हरिद्रां कुङ्कुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् ।
सौभाग्य द्रव्य संयुक्तं गृहाण परमेश्वरि ॥

[ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भवानी शङ्कर देवताभ्यो नमः सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि]

"धूपम्"

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ १३ ।

[ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भवानी शङ्कर देवताभ्यो नमः धूपं दर्शयामि]

"घृतपूरित नीराजन दीपम्"

आज्यं च वर्ति संयुक्तं वन्हिना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह ॥ १४ ॥

[ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भवानी शङ्कर देवताभ्यो नमः दीपं दर्शयामि ।]

"नैवेद्यम्"

शर्करा घृत संयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् ।
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रति गृह्यताम् ॥ १५ ॥

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भवानी शङ्कर देवताभ्यो नमः । नैवेद्यं समर्पयामि । नैवेद्य मध्ये पानीयं । उत्तरापोषनम् । हस्तप्रक्षालनं मुख प्रक्षालनं

आचमनीयंच समर्पयामि । करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।
मुख वासार्थे ताम्बूलं " फलम् "

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव
तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥

" दक्षिणा "

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ।
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥

" कर्पूरार्तिक्यम् "

कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

इति कर्पूरारार्तिक समर्पयामि ॥

" प्रदक्षणा "

यानि कानि च पापानिजन्मान्तर कृतानिमे ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षण पदे पदे ॥

प्रदक्षणा समर्पयामि ।

" मन्त्र पुष्प युक्तो नमस्कारः "

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

[ॐ भूर्भवः स्वः श्री भवानी शङ्कर देवताभ्यो नमः पूजा परिपूर्णार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।

॥ अथ क्षमापनम् ॥

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् ।
पूजां नैव न जानामिक्षमस्व परमेश्वरः ॥ १ ॥

अन्यथा शरणंनास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्य भावेन रक्षस्व परमेश्वर ॥ २ ॥

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र मेवच-
आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

मन्त्रहीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरः ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ४ ॥

यदक्षर पद भ्रष्टं मात्रा हीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ५ ॥

॥ अर्पणम् ॥

अनेनावाहनासन पाद्यार्घ्याचमनीय स्नान वस्त्रोपवीत गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणा प्रदक्षिणा मन्त्र पुष्प रूपैः षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च यथा ज्ञानेन यथा मिलितोपचार द्रव्यैः कृतेन पूजानाख्य कर्मणा ॐ भूर्भुवः स्वः श्री उमा महेश्वराभ्यां नमः । प्रीयन्तांन मम ।

॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पण मस्तु ॥

उपयोगी कुंजी

अथ त्रिगुणात्मकम् (कैलास)

कै—ब्रह्मा। ला—विष्णु। स—शङ्कर।

भक्त विनोद—त्रिविध विस्तार।

त्रिविध—	श्रद्धा	(सात्विक,	राजस,	तामस)	त्रिविध—	कर्म।
,,	आहार	,,	,,	,,	,,	कर्त्ता
,,	यज्ञ	,,	,,	,,	,,	बुद्धि
,,	तप	,,	,,	,,	,,	धृति
,,	दान	,,	,,	,,	,,	सुख
,,	त्याग	,,	,,	,,	,,	ताप

,, कर्मफल (अनिष्ट, इष्ट मिश्र) ,, वेद प्रधान ३

,, कर्म चोदना (कारण, कर्म, कर्त्ता)

,, ज्ञान ,, ,, ,,

,, नरक द्वारा (काम, क्रोध, लोभ)

,, लोक (स्वर्ग, नरक, भू,)

,, दल (वेल पत्र)

,, शाखा (वेल पत्र)

,, उत्पात (दिव्य, भौम, अन्तरिक्ष)

,, नाडी (इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना)

त्रिमूर्ति—(ब्रह्मा, विष्णु, महेश)

त्रिशक्ति—(म० काली, म० लक्ष्मी, म० सरस्वती)

त्रिविध दोष—(वात; पित्त, कफ)

त्रिविध दोष (मल, विक्षेप, आवरण)

त्रिरुत्पत्ति—(पुण्यसे—देव, मनुष्य, स्थावर। पापसे—नरक, स्थावर, तिर्यग्रूप)

आश्रय त्रय (वाजपेयादि यज्ञ कर्त्ता)

त्रिवर्ण (प्रातः, मध्यान्ह, सायं)

त्रिकाल (भूत, भविष्य, वर्तमान)

त्रि ज्योति (सूर्य, अग्नि, इन्द्र)

अवस्था त्रय (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति) इत्यादि

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्म पाप संहारमेक विल्वं शिवार्पणम्॥ १॥
ॐ त्रयम्बकाय नमः॥ श्री त्रयम्बकेश्वराय नमः॥

अथ पंचात्मकम् संग्रह विस्तार॥

ॐ नमः शिवाय पञ्चाक्षरी मन्त्र।

पंच तन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध,)

पंच तत्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश)

पंच ज्ञानेन्द्रिय (श्रोत्र, त्वक, नेत्र, रसना, घ्राण)

पंच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ)

पञ्च कोष (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय,)

पञ्च प्राण (प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान)

पञ्च कारण (अधिष्ठान, कर्त्ता, करण, त्रिविध चेष्टा, दैव)

पञ्च वायु (नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनन्जय)

पञ्च यज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, नृयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ)

पञ्च देव (सूर्य, गणपति, देवी, शिव, विष्णु)

पञ्चाग्नि (आवसस्थ्य, आहवनीय, दक्षणाग्नि, अन्वाहार्य गार्हपत्य

पञ्च नदी (भागीरथी, यमुना, सरस्वती, किरणा; धूतपाप)

(पञ्चगव्य) (पञ्चामृत) (पञ्चपल्लव) (पञ्चपुष्प)(पञ्चोपचार)(पञ्चांग)

पृथ्वीके पांच तत्व (त्वचा, अस्थि, नाड़ी, रोम, मांस)

जलके पांच तत्व (लाला, मूत्र, शुक्र, मज्जा, तन्त्र)

तेजके पांच तत्व (क्षुधा, तृषा, आलस्य, निद्रा; कांति)

वायुके पांच तत्व (आकुंचन, धावन, चलन; प्रसारण, चेष्टा)

आकाशके पांच तत्व (घोष, चिंता, शून्यत्व, मोह, संशय)

(पंचपद) (पंचपंक्ति) (पंचपरमेश्वर) इत्यादि ।

॥ इति पंचात्मकम् ॥

गौरी विलास भुवनाय महेश्वराय
"पंचाननाय" शरणागत कल्पकाय
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै
दारिद्र दुःख दहनाय "नमः शिवाय" ॥१॥

(गूढ़ार्थ चिन्तामणि)

[विद्या १४ चतुर्दश] ब्रह्मज्ञान; रसायन, श्रुतिकथा, वैद्यक; ज्योतिष्, व्याकरण, धनुर्धरत्व, जलतरत्व, संगीत, नाटक, अश्वारोहण, कोकशास्त्र, चोरी, चतुरता ।

[वेद ४ हैं] ऋग्वेद शाखा ८२२ । यजुर्वेद शाखा ८६ । सामवेद शाखा १००० । अथर्ववेद शाखा ६ ।

[उपवेद ४ हैं] ऋग्वेदका आयुर्वेद। यजुर्वेदका धनुर्वेद। सामवेदका गन्धर्ववेद। अथर्ववेद का शिल्पवेद।

[वेदांग ६ हैं] शिक्षा। कल्प। व्याकरण। निरुक्त। छन्द। ज्योतिष

[पुराणोंके लक्षण ५ हैं] सर्ग। विसर्ग। मन्वन्तर। वंश। वंशानुचरित्र।

[पुराण अष्टादश] ब्रह्मपुराण। श्लोक १०००० । पद्म पुराण ५५००० । विष्णु पुराण २३००० । शिव पुराण २४००० । श्रीमद्भागवत १८००० । नारद पुराण २५००० । मार्कण्डेय पुराण ९००० । अग्नि पुराण १५४०० । भविष्य पुराण १४५०० । ब्रह्मवैवर्त पुराण १८००० ।
लिङ्ग पुराण ११००० । बाराह पुराण-२४००० । स्कंदपुराण ८१००० । वामन पुराण १०००० । कूर्म पुराण-१७००० । मत्स्यपुराण १४००० । गरुड़ पुराण-१९००० । ब्रह्माण्ड पुराण १२००० ।

[शास्त्र ६ हैं] सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक।

[विद्या एक] परमेश्वरकी शक्ति।

[पंच-महायज्ञ] देवऋषि पितरोंका तर्पण, होम, वैश्वदेव बलि, अतिथि पूजन, वेद पाठ।

[सप्तर्षि सात] वशिष्ठ, अत्रि; कश्यप; विश्वामित्र. भारद्वाज, जमदग्नि; गौतम।

[चतुर्वर्ग] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

[षट् रिपु] काम, क्रोध, लोभ, मोह मद और मत्सर।

[गुरु तान] माता, पिता और गुरु

[अग्नि त्रय] दक्षणाग्नि; गार्हपत्य; आह्वनीय।

[चार वर्ण] ब्राह्मण; क्षत्रिय; वैश्य; शूद्र।

[आश्रम चार] ब्रह्मचर्य; गृहस्थ; वानप्रस्थ; सन्यास।

[नवधा-भक्ति] श्रवण; कीर्तन; स्मरण; चरण सेवा; अर्चन; वंदन; आत्म-निवेदन; दासता; सख्यता।

[अष्ट सिद्धि] अणिमा; महिमा; लघिमा; गरिमा; प्राप्ति; प्रकाम्य ईशत्व; वशित्व।

[तत्व ५ हैं] पृथ्वी; जल; तेज; वायु और आकाश।

[नृपतिके ४ गुण] साम, दाम, भय और भेद।

[योनि ८४ लाख] जलचर ९ लाख। मनुष्य ४ लाख। स्थावर २७ लाख। कृमि ११ लाख पक्षी १० लाख। चौपाये ३३ लाख।

[अवस्था ४ हैं] जागृत; स्वप्न; सुषुप्ति और तुरीय।

[जागृतका विभुविश्व। स्वप्नका तैजस। सुषुप्तिका प्राज्ञ तुरीयका ब्रह्म]

[खान ४ हैं] जरायुज; अण्डज; स्वेदज; उद्भिज।

[युग ४ हैं] सतयुग; त्रेता; द्वापर; कलियुग।

[कल्प] चार युगोंकी एक चौकड़ी और १००० चौकड़ीका एक कल्प होता है

[अवस्था ३ हैं] बालक; युवा; वृद्ध।

[लोक १४ हैं] तल; वितल अतल सुतल तलातल, रसातल

पाताल भूलोक भुवलोक स्वर्गलोक महलोक जनलोक तपलोक सत्य लोक।

[दिक्पाल ८ हैं] पूर्वके स्वामी इन्द्र। पश्चिमके स्वामी वरुण। दक्षिणके स्वामी यमराज। उत्तरके स्वामी कुवेर। आग्नेयके अग्नि। नैऋत्यके नेऋति। ईशानके महादेव। वायव्यके वायु।

[ताप ३ हैं] आध्यात्मिक अधिभौतिक आधिदैविक

[त्रिविध कर्म] संचित प्रारब्ध क्रियमाण।

[त्रिदेव] ब्रह्मा विष्णु महेश।

[ऋतु ६ हैं] चैत्र वैशाखमें वसन्त। ज्येष्ठ आषाढ़में ग्रीष्म। श्रावण भाद्र पदमें वर्षा। आश्विन कार्तिकमें शरद। मार्गशीर्ष पौषमें हेमन्त। माघ फाल्गुनमें शिशिर।

[राम ३ हैं] परशुराम रामचन्द्र बलराम।

[समीर ३ हैं] शीतल मन्द सुगन्ध।

[चतुरंगिनी सेना] हाथी घोड़ा रथ पैदल।

[भक्त ४ हैं] आर्त जिज्ञासु अर्थार्थी विज्ञान निवास।

[आभूषण १२ हैं] नूपुर किंकणी; हार चूड़ी मुन्दरी कंकन बाजूबन्द कण्ठश्री बेसर विरीया टीकाशिरफूल।

[नवगुण ब्राह्मणके] समदर्शी दम तप तितिक्षा क्षांति आर्जव विज्ञान आस्तिक्यता ईश्वरमें विश्वास।

[शृंगार १६ हैं] अंग शुचि; मंजन; निर्मल वस्त्र पहरना, पांवमें यावक लगाना। मांगमें सिंदूर लगाना, भालमें

तिलक, चिबुकमें तिल बनाना; मेंहदी लगाना; भूषण, पुष्प, सुगंध, मुखराग, अधर राग, अरगजा, दांत रंगना, काजल लगाना । इत्यादि

महाक्षौहिणी संख्या

ख द्वयं निधि वेदाक्षि चन्द्राक्ष्यग्नि हिमांशुभिः
महाक्षौहिणी प्रोक्ता, संख्या गणित कोविदैः ॥ १ ॥
[अंकानां वामतो गतिः]

ॐ पूर्ण मदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्ण मुदच्यते ॥इति गूढ़ार्थ चिंतामणि॥
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ १ ॥ ॐ शान्तिः ३ ॥